राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिलभारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए, डी. लिट्.

ग्रन्थाङ्क २०४

देवीदासकृत

राजनीति रा कवित्त

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान-सम्पादकीय

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली द्वारा सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ मे देवीदासकृत राजनीति रा कवित्त के साथ परिशिष्ट मे जगरामकृत 'राजनीति-विस्तार' भी दिया जा रहा है। ये दोनो ग्रन्थ राजनीति के विभिन्न अगो पर जिस सहज और सरल भाषा मे पद्यबद्ध विचारो को प्रस्तुत करते है वे हमारी राष्ट्रभाषा के मध्यकालीन रूप का सुन्दर नमूना प्रस्तुत करते हैं। जो लोग हिन्दी-क्षेत्र की विभिन्न उपभाषाओ अथवा बोलियो के पार्थक्य पर विशेष जोर देकर राष्ट्रभाषा को अशक्त तथा अस्तित्वहीन बनाने के लिये जाने-अनजाने प्रयत्न कर रहे है, उनके लिये तो कुछ कहने की आवश्यकता नही, परन्तु जो लोग राष्ट्रभाषा को राष्ट्रीयता के प्रमुख माध्यम के रूप मे सुसमृद्ध और सुविकसित करना चाहते हैं उनके लिये यह ग्रन्थ उपयोगी हो सकता है।

शेखावाटी के देवीदास और रायसल दरबारी की अमर-स्मृति को जागृत करने वाले ये कवित्त इस बात को स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त हैं कि राजस्थान के वीरो और उनके सहयोगी लेखको ने किस प्रकार मुगल-काल मे, उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम भारतवर्ष के एक बहुत बडे क्षेत्र मे एक ऐसी भाषा को विकसित और समृद्ध करने मे सहयोग दिया जो वर्त्तमान युग मे समस्त राष्ट्र की वाणी होने का सम्मान प्राप्त कर सकती है। इन कवित्तो मे लेखक की परिपक्व बुद्धि विस्तृत अनुभव के साथ मिलकर जो काव्यगत चमत्कार पैदा करके पाठक का मनोरजनपूर्वक ज्ञान-वर्द्धन करती है वह वर्त्तमान युग मे भी स्तुत्य मानी जा सकती है।

सम्पादक महोदय ने जो परिश्रम किया है उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

कार्तिकी पूर्णिमा, स० २०२५
जोधपुर।

—फतहसिंह

विषय - सूची

भूमिका



प्रस्तुत ग्रंथ नीति-काव्य का एक उत्कृष्ट नमूना है। कुछ विद्वान् यह प्रश्न करेंगे कि क्या नीति और काव्य का समन्वय हो सकता है और इस प्रकार का समन्वय क्या समाज के लिए हितकारी है? कुछ विद्वान् काव्य में उपदेश या नीति के प्रवेश के सर्वथा विरुद्ध हैं, परन्तु इसके विरुद्ध अधिकतर विद्वान्, विचारक एवं चिन्तक काव्य मे नीति का प्रवेश आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी मानते हैं, इस प्रकार वे दोनों के समन्वय को उचित ठहराते हैं।[1] वस्तुतः यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो प्रतीत होगा कि आह्लादकारक जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर करना ही श्रेष्ठ काव्य का लक्षण है। काव्य, श्रेष्ठ काव्य, किसी भी विषय पर रचा जा सकता है, इस रूप में नीति भी एक विषय ही है, इसलिये नीति पर

---

१. कुछ उद्धरण द्रष्टव्य हैं—

"Poetry is an art of imitation. .. with this end to teach and delight"

—P. Sidney : An Apology for poetry.

"(Delight) is the chief, if not the only end of Poetry, instruction can be admitted but in the second place, for Poetry only instructs as it delights"

—F Dryden—Defence of an Essay of dramatic Poetry.

"The end of writing is to instruct, the end of Poetry is to instruct by pleasing."

—S. Johnson—Preface of Shakespeare.

"कवि संसार के शिक्षक हैं; किन्तु नीति की व्याख्या करके शिक्षा नहीं देते। वे सौन्दर्य की चरम सृष्टि करके संसार की चित्त-शुद्धि करते हैं। यही चरमोत्कर्ष-साधक सृष्टि काव्य का मुख्य उद्देश्य है।"

—बंकिमचंद्र—रामदहिन मिश्र, के काव्यदर्पण—पृ ३० पर उद्धृत।

काव्य रचना सभव है और नीति को ध्यान में रख कर भी श्रेष्ठ काव्य की रचना सभव हो सकती है। डॉ० विंटरनित्स ने भारतीय साहित्य का इतिहास लिखते हुए अपने ग्रथ के प्रथम भाग में (पृष्ठ २) भारतीय नीति-काव्य को विश्व मे बेजोड माना है।

नीति-काव्य के रूप

नीति-काव्य के मुख्यत कितने रूप हो सकते हैं, इसका स्पष्ट विवेचन कहीं नहीं हुआ है। हॉ, शुक्लजी ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास मे हिन्दी के नीतिकारों पर विचार करते हुए तीन शब्दो—सूक्तिकार, कवि एव पद्यकार—का प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट है कि उनकी दृष्टि में नीति-काव्य के काव्य, सूक्ति और पद्य तीन रूप थे।[१]

यहॉ सक्षेप में 'काव्य' और 'सूक्ति' पर भी विचार कर लेना अप्रासगिक न होगा। शुक्लजी के अनुसार-"जो उक्ति केवल कथन के ढंग के अनूठेपन, रचना-वैचित्र्य, चमत्कार, कवि के श्रम या निपुणता के विचार मे ही प्रवृत्त करे, वह है सूक्ति, और जो उक्ति हृदय मे कोई भाव जागृत करे, वह काव्य कहा जाता है।"[२]

इससे स्पष्ट है कि शुक्लजी सूक्ति और काव्य दोनों को अलग-अलग मानते थे। सुन्दर ढग से कही हुई सूक्ति ही सुभाषित है। अत सूक्ति काव्य हो भी सकती है, और नहीं भी।[३] इस प्रकार सूक्ति और काव्य को अलग-अलग अर्थों में विभाजित नहीं कर सकते।[४] शुक्लजी ने 'सूक्ति' का प्रयोग मात्र 'चमत्कारपूर्ण' काव्य के लिये ही किया है[५] जो उचित नही है।[६] सूक्ति भी सुन्दर काव्य कही जा सकती है, इसमे सन्देह नहीं।

---

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास—रामचन्द्र शुक्ल—पृ. ३५५–२४२

२. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि—कविता क्या है ? निबन्ध—पृ १७१

३ डॉ श्यामसुन्दरदास, सतसई सप्तक—पृ. १४

४. हरिऔध-हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास—पृ ४४७

५ जायसी ग्रंथावली-काशी-स २००६—पृ १६८

६. "को सूक्ति की सज्ञा देना सूक्ति शब्द के अर्थ को भ्रष्ट करना है।" वही—पृ २४

नीति काव्य मुख्यत दो रूपों मे प्राप्त होता है (१) सूक्ति, और (२) पद्य। सूक्ति में नीति की बाते सुन्दर ढग से प्रतिपादित की जा सकती हैं और उन्हें पद्य के माध्यम से व्यक्त कर विशेष प्रभावोत्पादक बनाया जा सकता है।

हिन्दी नीति-काव्य का मथन करने के पश्चात् निष्कर्षस्वरूप नीति-काव्य के तीन रूप स्थिर किये जा सकते हैं। एक तो मात्र 'पद्य' अथवा 'पद्य मात्र' है, जिसमें केवल पद्यात्मकता है। गिरधर की कुण्डलियाँ, सत कवियों की साखियां, टोडरमल, बीरबल, गग, घाघ, बैताल, भड्डरी आदि का नीति-साहित्य इसी श्रेणी में आयेगा। दूसरा रूप वह है, जिसमे चमत्कार प्रधान हो। इस प्रकार के काव्य के श्रवण-पठन से हृदय अवश्य फडक उठता है, परन्तु काव्य की अनुभूति-सी नहीं होती। कबीर, तुलसी, वृन्द, रहीम आदि का नीति-काव्य इसी श्रेणी का है। तीसरा रूप वह प्राप्त होता है, जिसमें शुद्ध-काव्य के दर्शन होते हैं। तुलसी, रहीम, वृन्द के कुछ दोहे तथा दीनदयाल गिरि की बहुत सी अन्योक्तियां इसी श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं।

नीति-काव्य का प्रयोजन

काव्य के लक्ष्य से नीति-काव्य का लक्ष्य सर्वथा भिन्न होता है। नीति-काव्य का लक्ष्य वही होता है, जो कि किसी नीति शास्त्र का होता है। परन्तु नीति-काव्य और नीति-शास्त्र के कथन में अन्तर होता है। नीति-शास्त्र जहां रूखे और नीरस ढग से उपदेश कथन करता है, वहा "कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे" की तरह नीति-काव्य उसी विषय को सरस एवं मधुर शैली मे प्रस्तुत करता है। शुष्क होने के कारण शास्त्रीय कथन उतना प्रभावशाली नहीं बन पाता, जितना नीति-काव्य। उदाहरण के लिए एक लोक-विश्रुत घटना का उल्लेख करना समीचीन होगा। जयपुर के महाराजा जयसिंह वीर, विद्वान् एव नीति-मर्मज्ञ होने पर भी अपनी नव-विवाहिता के मोह में इस प्रकार से उलझे कि राजकार्य की भी सुध नही रही। उन्हें न पडितों का ध्यान रहा और न मन्त्रियों का। यहां तक कि वे प्रजा के सुख-दुख से भी उदासीन हो गये। मंत्रियों और बुद्धिमानों के हाथों से भी स्थिति बाहर हो गई, अन्त में यह दुष्कर कार्य कविवर बिहारी के नीति-काव्य ने सहज कर दिखाया। उन्होंने यह दोहा लिखकर किसी प्रकार महाराजा के पास पहुँचा दिया—

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिकाल।
अली कली ही सौ वध्यौ, आगे कौन हवाल ॥[1]

जो काम मन्त्रियों, पंडितों एवं सुहृज्जनों की सीख नहीं कर पाई, वही काम एक नीति-काव्य के दोहे ने कर दिखाया। महाराजा का मोह-भंग हुआ, और वे पूर्ववत् फिर राज्य-कार्य संचालन करने लगे।

उपर्युक्त दोहे का विवेचन करते हुए रसिकेशजी[2] ने कहा है-"कि कहा जा सकता है, यह दोहा विशुद्ध काव्य है, नीति-काव्य नहीं है, क्योंकि इसमें शिक्षा प्रत्यक्षत. नहीं दी गई, व्यंग्यार्थ से ध्वनित होती है। हम इस विचार से विमत हैं। हमारी दृष्टि से यह दोहा शुद्ध नीति-काव्य है, क्योंकि इसकी रचना कवि ने सहज भाव से नहीं की, नैतिक उपदेश देने के लिए ही की। नीति-काव्य होता हुआ भी यह विशेष सरस है। दोहे की प्रथम अर्द्धाली में कवि ने वह भूमिका प्रस्तुत की है, जिससे भ्रमर की मूढ़ता का भाव सम्यक् ध्वनित हो सके। "वध्यो" पद संयोग-शृंगार की उत्कृष्टता का सूचक है। चतुर्थ चरण में भावी अनिष्ट की आशंका का संकेत है। इस प्रकार शृंगार-रस तथा मूढ़ता और आशंका-रूपी भावों से युक्त होने के कारण दोहा पद्य या सूक्ति के स्तर से ऊंचा उठकर सु-काव्य बन गया है।

सार यह कि उक्त दोहे का प्रधान प्रयोजन शिक्षा है, आह्लादकता नहीं। परन्तु शिक्षा के साथ ही आह्लादकता भी उतनी ही मात्रा में विद्यमान है, जितनी किसी सुकवि के किसी अन्यविषयक काव्य में। इसी कारण इसे नीति-काव्य का सुन्दर उदाहरण कह सकते हैं। तात्पर्य यह है कि कवि कुशल हो तो नीति-विषयक काव्य भी उतना ही सरस हो सकता है- जितना किसी अन्य विषय का। लोक-मंगल की दृष्टि से देखा जाय तो नीति-काव्य का प्रयोजन अन्य काव्यों के प्रयोजनों से उत्कृष्ट है। अन्य काव्य मुख्य रूप से आनन्द के लिये रचे जाते है, शिक्षार्थ नहीं, उनमें शिक्षा का अभाव भी हो सकता है। रीति-काल में ऐसी रचनाओं की प्रचुरता रही, परन्तु उसका नैतिक परिणाम क्या निकला ? सच्चरित्रता का कितना विनाश हुआ, और समाज का कितना ह्रास, यह कहने की आवश्यकता नहीं।"

---

१ सतसई सप्तक—पृ १६४/३८

२. रामस्वरूप शास्त्री रसिकेश—हिन्दी मे नीति काव्य का विकास—पृ २८

स्पष्टत. नीति-काव्य शिक्षा तो देता है, पर वह इस उचित प्रकार से कि वह मात्र रूखा उपदेश न रह कर सरस मधुर बन कर सहज ग्राह्य हो जाता है।

भारतीय साहित्य मे नीति-काव्य की परम्परा

हिन्दी साहित्य के प्रारभ से पूर्व भारत में विशाल वाङ्मय की सृष्टि हो चुकी थी। यह सृष्टि पांच भाषाओ-वैदिक, सस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश में पुष्टता प्राप्त कर चुकी थी। नीति-साहित्य को समझने से पूर्व यह आवश्यक है, कि सक्षेप में हिन्दी के पूर्ववर्ती नीति-काव्य का अध्ययन कर लिया जाय, जिससे परवर्ती काव्य पर उनके प्रभाव को स्पष्टत. हृदयङ्गम कर सके। उपर्युक्त पांचों भाषाओं का नीति-साहित्य विस्तृत है, परन्तु यहाँ उन पर संक्षेप में ही विचार किया जा रहा है। मूल परम्पराओं को समझने के लिये केवल सक्षिप्त रूपरेखा आगे के पृष्ठों में प्रस्तुत की जा रही है।

वैदिक-साहित्य में नीति

वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, तथा उपनिषदों के समुदाय को वैदिक साहित्य कहा जाता है। सहिताएं इनमें सर्वाधिक पुरानी हैं। भारतीय वाङ्मय का प्रारभ इन्हीं से माना जाता है। इनमें अधिकतर मत्रों का मुख्य विषय, 'स्तुति प्रार्थनाएं, उपासना एवं यज्ञादि से सबधित हैं। कुछ मत्र लोक-व्यवहार से भी सबन्धित हैं, इन्हीं मन्त्रों में नीति की कई सुन्दर पक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

प्राचीनकाल में आर्य हृष्टपुष्ट, नीरोग, स्वस्थ एव सबल जीवन की कामना करते थे। ज्ञान उनके जीवन का अनिवार्य अग था, आत्मा की अमरता में तथा कर्मफल के सिद्धान्त में उनका पूर्ण विश्वास था। बुराइयों के त्याग के बारे में वेद वाणी देखिये—

यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि,
रात्रि जहात्युपसश्च केतून् ।
एवाह सर्वं दुर्भूत कर्त्र कृत्याकृता
कृत हस्तीव रजो दुरित जहामि ॥[1]

---

१ अथर्ववेद—१०/१/३२

अधिकतर यज्ञ-सबधी बातों का ही विवेचन हुआ है। ब्राह्मण-ग्रन्थों में मुख्यतः ऐतरेय, कौपीतकि, पचविंश, षड्विंश, शतपथ तथा गोपथ आदि हैं। "कहते हैं कि वेदों की ११३० सहिताओं के समान कभी ब्राह्मण, आरण्यक आदि भी इतनी ही सख्या में विद्यमान थे, परन्तु आज १८ ब्राह्मण-ग्रन्थ, ७३ आरण्यक और २२० उपनिषद् ही प्राप्त हैं।"[1] ब्राह्मण-ग्रन्थ मुख्यत यज्ञ, यज्ञो का विधान एवं यज्ञों के बारे में नियम-उपनियम की भूल-भुलैया में ही भटक गये हैं। नीरस गद्य होने के कारण इनमे सरसता की कमी है, परन्तु यत्र-तत्र नीति के बारे में अच्छे उदाहरण प्राप्त हो जाते हैं। यथा ऐतरेय ब्राह्मण[2] में कहा है कि 'जो मनुष्य गतिशील रहता है, वह मधु प्राप्त कर लेता है, परन्तु जो रुक जाता है, उसका पतन अवश्यभावी है। अविश्रान्त रूप से सूर्य गतिशील रहता है, इसीलिये वह विश्व-वंद्य है। इसलिये निरन्तर गतिशील रहना ही जीवन है।

इन्द्र का रोहिताश्व को उद्योग-विषयक उपदेश नीचे की पक्तियो में द्रष्टव्य है—

आस्ते मग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्टति तिष्ठत ।
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो मग चरैवेति ॥[3]

शतपथ[4] के अनुसार दो बार मिताहार करने वाला ही दीर्घायु प्राप्त करता है। निरन्तर कर्म में जागृत रखने का कितना सुन्दर नीति-वाक्य ब्राह्मण-ग्रन्थो में द्रष्टव्य है—

कलि शयानो भवति सजिहानस्तु द्वापर ।
उत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृत सम्पद्यते चरन् चरैवेति ॥[4]

अर्थात् सोया हुआ व्यक्ति कलियुग होता है, निद्रा का त्याग करता हुआ द्वापर, खडा हुआ त्रेता तथा चलता हुआ कृतयुग होता है, अत तू भी चल।

---

१ हिन्दी मे नीति काव्य का विकास—डॉ रामस्वरूप शास्त्री रसिकेश—पृ ४१-४२
२. ऐतरेय ब्राह्मण—३३/३/१५
३. ऐतरेय ब्राह्मण—३३/३
४ शतपथ-ब्राह्मण—२/१/४/६

इसके अतिरिक्त इनमें सत्य, त्याग, तप, दान, दया, अतिथि-सेवा आदि नैतिक-विषयार्थ लिखे आप्तवाक्य यत्र-तत्र प्राप्त होते हैं, परन्तु अधिकतर इनमें यज्ञ एव परब्रह्म के बारे मे ही चिंतन है। इसके अतिरिक्त ये नीरस गद्य में होने के कारण काव्य में स्थान पाने के अधिकारी नहीं, परन्तु फिर भी नीति-साहित्य की परम्परा की एक कड़ी के रूप मे इनके महत्वपूर्ण स्थान को भुलाया नहीं जा सकता।

सस्कृत-ग्रन्थो में नीति

सस्कृत ग्रन्थों में जो नीति-काव्य उपलब्ध होता है, उसे निम्न पांच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है— १ महाकाव्य-साहित्य, २ स्मृति-साहित्य, ३ पुराण-साहित्य, ४. कथा-साहित्य और ५ स्फुट-साहित्य।

महाकाव्यों में सर्वाधिक प्राचीन वाल्मीकि-रामायण है। यह हमारा आदि-काव्य है, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम का पावन चरित्र चित्रित किया गया है। रामायण एक आदर्श-प्रधान महाकाव्य कहा जा सकता है, जिसमें आदर्श जीवन, आदर्श राज्य, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श पत्नी, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक एव आदर्श राजा की रीति-नीति चित्रित है। इसमें नीतियों एव सूक्तियों का भी अत्यन्त ही सुन्दर वर्णन हुआ है। उदाहरण के लिये कुछ पद द्रष्टव्य हैं—

सत्य से बंधे एवं पुत्र-वात्सल्य से पीड़ित दशरथ की गति का कवि ने अत्यन्त ही सुन्दर वर्णन किया है। ऐसे अवसर पर कैकेयी राजा दशरथ को सत्य नीति समझाती हुई कहती है—

सत्यमेकपद ब्रह्म सत्ये धर्म. प्रतिष्ठित. ।
सत्यमेवाक्षया वेदा सत्येनावाप्यते परम् ॥[1]

अर्थात् सत्य ही एकाक्षर ब्रह्म है, सत्य पर ही धर्म प्रतिष्ठित है, सत्य ही शाश्वत वेद है, और सत्य से ही परब्रह्म की प्राप्ति सभव है।

कैकेयी की करतूत पर भरत एव शत्रुघ्न को क्रोध आने पर भी भरत, शत्रुघ्न को समझाते हुए कहते हैं- हे भाई। स्त्री-हत्या किसी भी मनुष्य के लिये उचित

१. वाल्मीकि-रामायण-निर्णयसागर प्रेस बम्बई—२/४/७

अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अन्धकार से मुक्त हो जाता है, रात्रि को त्याग देता है और उषाकालीन प्रकाश को भी विस्मरण कर देता है, उसी प्रकार मैं समस्त बुराइयों को, हिंसक कृत्यों को छोड़ देता हूँ। जैसे हाथी धूल को उड़ाता रहता है, वैसे ही मैं पाप-पुञ्ज को उडा देना चाहता हूँ।

आर्य अपने शरीर को देवपुरी तथा परमज्योति-दर्शन का धाम मानते थे। नीचे के मंत्र में उनकी यही भावनाए साकार हुई हैं—

अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या।
तस्या हिरण्मय कोश स्वर्गो ज्योतिषावृत ॥[1]

वेदों में पारिवारिक नीति के प्रति भी कहीं-कहीं मंत्र प्राप्त होते हैं। जीवन का वास्तविक सुख पारिवारिक शान्ति में ही है। पारिवारिक नीति के प्रति एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण मंत्र अथर्ववेद[2] में प्राप्त हुआ है। उसके अनुसार "तुम्हारा पारस्परिक प्रेम ऐसा हो, जैसा गाय का नवजात वत्स से होता है। पुत्र, पिता का आज्ञाकारी होने के साथ-साथ माता से भी सामञ्जस्य रखने वाला हो। पत्नी पति के प्रति मधुर तथा शांत वाणी का प्रयोग करने वाली हो। भाई भाई से द्वेष न करे। बहिन बहिन के प्रति स्नेह रक्खे तथा देश, काल, पात्र को ध्यान में रखते हुए शिष्ट वाणी का प्रयोग करे।"

सभी आर्यों के प्रति ऋषि की वाणी कहती है—

समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग
समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्नि सपर्यतारा
नाभिमिवाभित ॥[3]

अर्थात् आर्यों! तुम्हारे जलपान-स्थान एक से हों, तुम्हारा सबका भोजन समान हो। तुम सब मिल कर अग्नि की पूजा करो, जिससे वे तुम्हारी नाभि के रथ-चक्र को व्यवस्थित रख सकें।

---

१ वही—१०/२/३१

२ अथर्ववेद—३/३०/१–३

३ अथर्ववेद—३/३०/६

अतिथियो के संबन्ध में भी वेद की ऋचा में कहा गया है-जो व्यक्ति अतिथि से पूर्व भोजन करता है, वह अपने घरों के इष्ट और पूर्त्त, दूध और रस, शक्ति और सपत्ति, सतति, पशु, कीर्ति एव यश सभी को खो बैठता है।[१]

ऋग्वेद में भी यत्र-तत्र नीति-वाक्य प्राप्त होते हैं। आठवें मण्डल के तेतीसवे सूक्त में इन्द्र का एक वाक्य उद्धृत है, जिसका भावार्थ है-"स्त्री के मन का शासन करना असम्भव हैं, क्योंकि उसकी बुद्धि छोटी होती है।"[२] इसी प्रकार के वाक्य राजा पुरूरवा एक स्थान पर कहता है-"स्त्रियों का प्रेम या मैत्री स्थायी नहीं होती। स्त्रियों एव हिंसक पशुओं का हृदय समान होता है।"[३]

पारिवारिक नीति की तरह वेदों में आर्थिक नीति पर भी यत्र तत्र विचार स्पष्ट किये हैं। आर्य गृहस्थ थे, पुत्र-पौत्रों के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करना उनका अभीष्ट था। इसके लिये वे कर्म में विश्वास रखते हुए कहते थे कि मनुष्य को "सौ हाथों से कमाना चाहिये, तो हजार हाथों से दान-पुण्य भी करना चाहिये।"[४] धन पुरुषार्थ से कमाना सर्वाधिक श्रेयष्कर मानते थे[५]। साथ ही अकेला खाना वे पाप समझते थे[६] सबका पालन करना और सब के साथ हिलमिल कर आगे बढ़ना उनका लक्ष्य था।[७]

इसके अतिरिक्त यजुर्वेद में मैत्री, लोभ तथा सत्य आदि के बारे में भी काफी नीति-वाक्य प्राप्त होते है।[८]

वेदों की संहिताओं के पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई। ब्राह्मण शब्द का अर्थ है ब्रह्म (यज्ञ) सबधी। ब्राह्मण-ग्रन्थों में

---

१. वही ६/६/३१-३५
२. ऋग्वेद-इण्डियन प्रेस, प्रयाग—पृ ६७२
३ वही-पृ. ६४
४ अथर्व० ३/२४/५
५ यजुर्वेद ४०/२
६ ऋग्वेद १०/११७/६
७ अथर्व० २/११/४-५
८ राम गोविन्द त्रिवेदी-वैदिक साहित्य, काशी, पृ ४२१-२२

नहीं है, इसलिये इसकी हत्या का विचार स्थगित करना ही उचित है।[१] इसी प्रकार लोकोपवाद के भय से परित्यक्ता जानकी, लक्ष्मण को पति की महिमा समझाती हुई कहती है—

पतिर्हि देवता नार्या पतिर्बन्धु पतिर्गुरु ।
प्राणैरपि प्रिय तस्माद् भर्तु कार्यं विशेषत ॥[२]

हे लक्ष्मण ! स्त्री के लिये तो पति ही देवता, पति ही बन्धु और पति ही गुरु है। इसलिये पत्नी को पति की अभीष्ट-सिद्धि के लिए प्राणोत्सर्ग करने में भी नहीं हिचकना चाहिये।

अनुसूया भी करीब-करीब ऐसे ही भाव पति के लिये व्यक्त करती हुई सीता से कहती है—

दु शील कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जित ।
स्त्रीणामार्यस्वभावाना परम दैवत पति. ॥[३]

कन्या का पिता सभी जगह झुकता आया है, इस बात को स्वीकार करते हुए सीता अनुसूया से कहती है–

सदृशाच्चापकृष्टाच्च लोके कन्यापिता जनात् ।
प्रधर्षणमवाप्नोति शक्रेणापि समो भुवि ॥[४]

ऊपर वाल्मीकि–रामायण से थोडे से उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं, इसके अतिरिक्त कही-कहीं तो नीति के कई श्लोक एक साथ प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ–सुन्दर काण्ड का ५२ वा सर्ग, उत्तरकाण्ड का ५२-५३ वा सर्ग, अरण्यकाण्ड का ४० वां सर्ग, अयोध्याकाण्ड का १०० वां सर्ग इस दृष्टि से अवलोकनीय है।

---

१ वाल्मीकि–रामायण—२/७८/२१
२. वही—७/४८/१७–१८
३ वही—२/११७/२४
४ वही—२/११८/३५

महाभारत

एक प्रकार से महाभारत नीति का भण्डार है। यों महाभारत के प्रत्येक पर्व मे नीति-वाक्य हैं, पर विषय की दृष्टि से शांति, उद्योग और अनुशासन-पर्व विशेष महत्व के हैं। धौम्य-नीति, भीष्म-नीति, विदुलोपाख्यान, विदुर-नीति आदि नीति-ग्रन्थ महाभारत के ही अश हैं। विदुर-नीति मुख्यतः भाइयों एव भतीजों के पारस्परिक वैमनस्य से विह्वल धृतराष्ट्र को दिया गया उपदेश है, पर उसमे नीति का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। उदाहरणार्थ कुछ अश उद्धृत हैं —

धूमायन्ते व्यपेतानि ज्वलन्ति सहितानि च।
धृतराष्ट्रोल्मुकानीव ज्ञातयो भरतर्षभ ॥[१]

हे धृतराष्ट्र! जलती हुई लकडियां पृथक-पृथक होने पर धुआ फेंकती हैं, पर एक साथ मिल कर वे प्रज्वलित हो उठती हैं, इसी प्रकार बन्धु भी विघटित होकर दुःख तथा सघटित होकर सुख प्राप्त करते हैं।

न च शत्रुरवज्ञेयो दुर्बलोऽपि बलीयसा।
अल्पोपि हि दहत्यग्निर्विषमल्प हिनस्ति च ॥[२]

अर्थात् बलवान् होने पर भी उसे निर्बल शत्रु की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, क्यों कि तनिक सी अग्नि भी बहुत को जलाकर क्षार कर देती है, और तनिक सा विष भी प्राण हर लेता है।

महाभारत में नीति की बातें तीन ढग से कही गई हैं। कहीं-कही तो नीति-ग्रन्थों की भांति सामान्य सूक्तियां हैं, जो प्रसङ्गवशात् आ गई हैं। कहीं-कहीं सवाद के रूप मे सूक्तिया भी हैं, जैसे एक स्थान पर समुद्र गगा से पूछता है कि तुम लोग बडे-बडे पेडों को तो उखाड देती हो, पर छोटी-छोटी घास तो ज्यों की त्यों रह जाती है। गगा उत्तर देती है कि वे पेड़ अभिमान से भरे सीधे खड़े रहते हैं, अत उखड़ जाते हैं, पर घास प्रवाह के आगे विनीत होकर झुक जाती है,

---

१. महाभारतम्—उद्योग पर्व—३७/६०

२. सक्षिप्त महाभारतम्—सपा—सी वी वैद्य.—पृ. ४३७ पद्य. २५२

अत. नही उखडती ।[1] तीसरी प्रकार की नीति जातकों तथा पंचतत्रों में पाई जाती है। ऐसी बातें अनुशासन-पर्व में विशेष है ।"[2]

पुराण

अभी तक अठारह पुराण और इतने ही उपपुराण ज्ञात हैं, परन्तु फिर भी पुराणो के नाम से प्रचलित कई ज्ञात एव अज्ञात पुस्तकें प्राप्त होती हैं। इनमें धर्म, इतिहास, कला, ज्ञान, नीति एव अन्य कई बातों पर विचार किया गया है। नीति के अन्तर्गत मूर्ख, विद्वान्, चतुर, स्त्री-स्वभाव, समाज, सत्य आदि कई विषयों को छूने का प्रयास किया गया है।

शरीर ही सब कुछ है, शरीर की रक्षा से ही चतुर्वर्ग की प्राप्ति सभव है—

स्वर्गाय वद्धकक्षो य· पाठमात्रेण व्राह्मण ।
स वालो मातुरकस्थो ग्रहीत सोममिच्छति ।।[3]

अर्थात्—जो व्राह्मण ग्रन्थों के अध्ययनमात्र से ही स्वर्ग जाने की इच्छा रखता है, वह उस अबोध बालक के तुल्य है, जो माँ की गोद में बैठ कर चन्द्र को छूना चाहता है। -

निन्दक की प्रशंसा भी नीति का एक अग है। पद्मपुराण में इसी विचार को यों व्यक्त किया गया है।

आक्रोशकसमो लोके सुहृदन्यो न विद्यते।
यस्तु दुष्कृतमादाय सुकृत स्व प्रयच्छति ।।[4]

याचना करना कितना कठिन एव जघन्यकृत्य है, इसका स्पष्टीकरण देखिये —

मुखभग. स्वरो दीनो गात्रस्वेदो महद्भयम् ।
मरणे यानि चिह्नानि तानि चिह्नानि याचके ।।[5]

---

१ Vintarnitz A History of Indian Litrature vol I P. 407
२ हिन्दी नीति-काव्य-डाँ भोलानाथ तिवारी-पृ. ३२
३. Mr P W W.-Puranic Worlds of visdom-Bombay-P 58/817
४ Mr P W W —Puranic worlds of visdom-Bombay.—P 55/794
५ Same 33/481

अर्थात्—"मुख की वक्रता, स्वर मे दीनता, शरीर पर प्रस्वेद तथा भारी भय—ये सब बातें मरणासन्न मानव तथा याचक में समान होती हैं।"

इसके अतिरिक्त धनाढ्य के निरन्तर बढ़ते क्लेश[1], स्त्री की निन्दा एवं प्रशसा[2] तथा मित्रों के गुण, सत्याचरण आदि का भी विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

महाकाव्य

सस्कृत में अश्वघोष, कालिदास, श्रीहर्ष आदि महाकवियों ने महाकाव्यों की रचना की है, जिनमें यत्र-तत्र नीति-वाक्य भी अच्छी मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

सिद्धार्थ बुढ़ापे को देख अपने सारथी से प्रश्न करते है, इस पर सारथी बुढापे के दोषों का इस प्रकार उल्लेख करता है—

रूपस्य हन्त्री व्यसन बलस्य शोकस्य योनिर्निधन रतीनाम्।
नाश स्मृतीना रिपुरिन्द्रियाणामेषा जरा नाम ययैष भग्न ॥[3]

अर्थात्—इस व्यक्ति का रूप रग उस बुढ़ापे ने बिगाड़ दिया है जो रूप का नाशक, बल का उत्पादक, शोक का कारण, आनन्दों का उन्मूलक, स्मृति का ध्वसक और इन्द्रियों का वैरी है।

स्त्रियों की वाणी का वर्णन करने के अनन्तर श्रमण नन्द स्त्रियों के मन की दुर्ग्राह्यता का वर्णन करते हुए कहता है—

प्रदहन् दहनोऽपि गृह्यते विशरीरः पवनोपि गृह्यते।
कुपितो भुजगोपि गृह्यते प्रमदाना तु मनो न गृह्यते ॥[4]

अर्थात् जलती हुई अग्नि पकड़ी जा सकती है, शरीररहित वायु पकड़ा जा सकता है, क्रुद्ध सर्प भी पकडा जा सकता है, परन्तु स्त्रियों का मन नही पकड़ा जा सकता।

---

१. Same 27/392
२ Same 21/15
३. बुद्धचरित—अश्वघोष—३/३०
४. सौन्दरानन्द—८/३५

अशोक-वाटिका मे रहने के उपरान्त भी सीता को अपनाने से राम की निन्दा होने लगी। राम दुविधा में पड़ गये, सीता को छोडू या लोकोपवाद की उपेक्षा करू'। कालिदास के शब्दों में—

निश्चित्य चानन्यनिवृत्तिवाच्य त्यागेन पत्न्या परिमार्ष्टुमैच्छत् ।
अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद् यशोधनाना हि यशो गरीय ॥[1]

"अर्थात् यह निश्चय करके कि इस अपवाद की निवृत्ति अन्य उपाय से असभव है, राम ने पत्नी-परित्याग मे ही उसे शान्त करना चाहा, क्योंकि यशस्वी लोग इन्द्रियार्थों से भी यश को अधिक महत्व देते हैं।

महापुरुषों की उदारता का वर्णन कालिदास के शब्दो में—

दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीन दिवाभीतमिवान्धकारम् ।
क्षुद्रेपि नून शरण प्रपन्ने ममत्वमुच्चै शिरसा सतीव ॥[2]

इसके विपरीत कपटी लोग कपट-व्यवहार के ही अधिकारी होते हैं, इस नीति को द्रौपदी युधिष्ठिर के सामने निम्न शब्दों में प्रकट करती है—

व्रजन्ति ते मूढधिय पराभव भवन्ति मायाविषु येन मायिन ।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसवृताङ्गान्निशिता इवेषव ॥[3]

अर्थात् जो मूढ मानव कपट-व्यवहार नहीं करते, वे पराभव को ही प्राप्त करते है।

समानापराध होने पर भी निर्बल को दड अधिक ही मिलता है। इस नीति को माघ के शब्दों में देखिये--

तुल्येऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्त चिरेण यत् ।
हिमाशुमाशु ग्रसते तन्म्रादिम्न स्फुट फलम् ॥[4]

---

१. रघुवश—१४/३५

२. कुमार सभव--१/१२

३ किरातार्जुनीय—१/३०

४ माघ–शिशुपाल वध २/४६

इन्द्र के याचना करने पर कर्ण, दाता का कर्तव्य निम्न शब्दों मे प्रकट करता है-

अर्थिने न तृणवद्धनमात्र किं तु जीवनमपि प्रतिपाद्यम् ।
एवमाह कुशवज्जलदायी द्रव्यदानविधिरुक्तिविदग्ध ॥[1]

उपर्युक्त कतिपय उद्धरण यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं कि संस्कृत के महाकाव्यों में प्रतिपादित नीति काव्य-विचार, भाव, भाषा एवं शैली सभी दृष्टियों से उत्तम कोटि की है, इसलिये इनमे प्रतिपादित नीति-काव्य उत्तम कोटि का काव्य कहलाने का सहज ही अधिकारी है।

महाकाव्यों के अतिरिक्त मुक्तक-ग्रन्थों मे भी नीति का विवेचन हुआ है। भर्तृहरि के शब्दों में स्त्रियों की चचलता का वर्णन देखिये-

जल्पन्ति सार्धमन्येन पश्यन्त्यन्य सविभ्रमा ।
हृद्गत चिन्तयन्त्यन्य प्रिय को नाम योषिताम् ॥[2]

अर्थात्-स्त्रियां वाक्केलि एक पुरुप से करती है, सविलास देखती दूसरे को हैं और हृदय में चिन्तन तीसरे का करती हैं। स्त्रियो का प्रिय कौन होता है?

गोवर्धनाचार्य सज्जनों को दुर्जन विजय का उपाय निम्न शब्दों मे प्रकट करते हैं-

पिशुन खलु सज्जनाना खलमेव पुरो विधाय जेतव्य ।
कृत्वा ज्वरमात्मीय जिगाय बाण रणे विष्णु ॥[3]

सज्जनो को दुष्टो पर विजय किसी खल के माध्यम से ही प्राप्त करनी चाहिये, स्वय लड़-भिड़ कर नहीं। जैसे रण में बाणासुर को जीतने के लिए विष्णु ने ज्वर को आत्मीय बना लिया था।

पितृ-विरोधी तथा परदारगामी गृहस्थ पुरुषों पर अप्पय्यदीक्षित 'वैराग्य-शतक' में इस प्रकार व्यग करते है—

---

१ श्री हर्ष—नैषधीय—चरित ५/८६ ।
२ शतकत्रयम्-भर्तृहरी ७८/५०
३ आर्यासप्तशती—निर्णयसागर प्रेस—पृ १६६

पितृभि कलहायन्ते पुत्रानध्यापयन्ति पितृभक्तिम् ।
परदारानुपयत. पठन्ति शास्त्राणि दारेषु ॥[1]

अर्थात्-लोग पितरों से तो कलह करते हैं और पुत्रों को पितृ-भक्ति का पाठ पढ़ाते हैं, स्वय तो परस्त्रीगमन करते हैं, परन्तु निज पत्नी को पातिव्रत्य का उपदेश देते हैं।

मुक्तक-काव्यों के अतिरिक्त स्तोत्रों मे भी नीति प्रतिपादित हुई है। काल की गतिशीलता, लक्ष्मी की चचलता एव जीवन की क्षणभगुरता का उल्लेख शकराचार्य ने इस प्रकार किया है—

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिन याति क्षयं यौवम्,
प्रत्यायन्ति गता पुनर्न दिवसा. कालो जगद्भक्षक. ।
लक्ष्मीस्तोयतरगभगचपला विद्युच्चलं जीवन,
यस्मान्मा शरणागत शरणद त्व रक्ष रक्षाधुना ॥[2]

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र मे शकराचार्य माता की महिमा बताते हुए कहते हैं—

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥[3]

'स्वप्नवासवदत्तम्' में शोकार्त्त राजा को ढाढस बंधाने के उद्देश्य से कंचुकीय कहता है महाराज ! मृत्यु का समय आ जाने पर कोई नहीं बच सकता। रस्सी टूट जाने पर घड़े को कौन रोक सकता है ?—

क. क शक्तो रक्षितु मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति ।
एव लोकस्तुल्यधर्म्मा वनानां काले काले छिद्यते रुह्यते च ॥[4]

इसके अतिरिक्त उत्तररामचरित[5], अभिज्ञानशाकुन्तलम्[6], चाणक्यनीति[7],

---

१. अप्पय्य दीक्षित–काव्यमाला–गुच्छक १–पृ. ९३
२ शकराचार्य–शिवापराधक्षमापनस्तोत्र–पद्य १३
३. शकराचार्य–देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र–पद्य ४
४. स्वप्नवासवदत्तम्–६/१०
५. उत्तररामचरित २/४
६. अभिज्ञानशाकुन्तलम् ४/१८, ५/२८/
७ चाणक्यनीति १६/१८, ७/१, १६/१, /२६/२१

प्रश्नोत्तरी[1], जल्हण की सूक्ति-मुक्तावली[2], पडितराज जगन्नाथ के भामिनीविलास[3], आदि कई ग्रन्थों मे नीति का अत्यन्त ही सुन्दर विवेचन हुआ है, जो किसी भी भाषा के समकक्ष रखने पर श्रेष्ठ ही उतरता है। वस्तुत संस्कृत का नीति-काव्य समृद्ध एव उच्च है, इसमें सन्देह नही।

पालि-साहित्य में नीति

५०० ई० पू० से १००० ई० तक के १५०० वर्षों के समय मे भारत मे मुख्यत. तीन भाषाओं का प्रचलन रहा-पालि, प्राकृत और अपभ्रंश। इनमे से प्रत्येक भाषा क्रमश. पाच-पांच सौ वर्षों तक प्रचलित रही।[4]

पालि-साहित्य को मोटे रूप से दो भागों में बांट सकते हैं-

१ पिटक-साहित्य २ अनुपिटक-साहित्य।

इनमें से भी पिटक-साहित्य को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं।

१. सुत्त-पिटक २. विनय-पिटक ३. अभिधम्म-पिटक

'सुत्त-पिटक' एवं 'धम्मपद' में नीति की बातें भरी पड़ी हैं।[5] धम्मपद की गाथाओं मे प्रमुख नीति-विषयक पडित-लक्षण, काल, क्षमा, शाति, अक्रोध, अवैर, कजूसी, सन्तोप, सत्संग, प्रेम, तृष्णा, बहुत बोलना, चचलता, वाणी, मन तथा शरीर, दूसरों का दोप देखना, स्त्री, सयम, निन्दा तथा मित्र आदि हैं। ये बातें कोरे उपदेश न होकर काव्यात्मक ढंग से कही गई हैं।[6] कुछ उदाहरण प्रस्तुत है —

भगवान् बुद्ध मानव की चचलता की हल्की मनोवृत्ति बताते हुए कहते हैं—

---

१. प्रश्नोत्तरी ६/६

२ जल्हण-सूक्ति-मुक्तावली—पृ ३११, ४२६

३ पडितराज जगन्नाथ-भामिनी-विलास, प्रास्ताविक-विलास पद्य-४१

४. बाबूराम सक्सेना-सामान्य भाषाविज्ञान—पृ. २६१

५. Dr Raha-History of Pali Litreture, I vol. P 200.

६ डॉ. भोलानाथ तिवारी-हिन्दी नीति-काव्य—पृ ४३

अयसाव मल समुट्ठित तदुट्ठाय तमेव खादति ।
एव अतिधोन चारिन सक कम्मानि नयनन्ति दुग्गति ।[1]

अर्थात्-जिस प्रकार लोहे से उत्पन्न मोर्चा उस लोहे ही को खा जाता है। उसी प्रकार अति चचल मनुष्य की चचलता उसकी दुर्दशा कर डालती हैं।

मूर्खों के सम्बन्ध में बुद्ध के वचन हैं—

यो वालो मञ्ञती वाल्य पण्डितो वापि तेन मे ।
वालो च पण्डितमानी स वे वालो ति उच्चति ॥[2]

यदि मूर्ख आदमी अपने को मूर्ख समझे तो उतने अंश मे तो वह बुद्धिमान् है, असली मूर्ख तो वह है, जो मूर्ख होते हुए भी अपने आपको बुद्धिमान् समझता है ।

उत्तम सतान को ध्यान में रखते हुए 'कसवहो' में कहा गया है—

अवच्चजुग्गे चिरमक्खदे वि दे सहति ज रणो पिदरा रिण अतरण।
सरीरिणो ता दुखच्च लभदो वदति सव्व 'गिरवच्चदा वर ॥[3]

कृष्ण अक्रूर से कह रहे हैं--हम दो पुत्र तो यहां स्वस्थ् रूप मे विद्यमान हैं और हमारे माता-पिता वहां घोर नियत्रण सह रहे हैं । इसलिये तो लोग बुरी सतान की अपेक्षा सतान के अभाव को उत्तम मानते हैं ।

जातक-कथाओं में भी नीति का सुन्दर विवेचन हुआ है। जातक का अर्थ है "जन्मसवधो"। इस जातक-नामक ग्रन्थ मे भगवान् बुद्ध की पूर्वजन्म की कथाओं का सग्रह है। जातक-कथाओं की सख्या ५५० के आसपास कही जाती है। विद्वानों के विचारानुसार मूलतः ये लोककथाएँ हैं, जिन्हें बुद्ध-धर्म के अनुरूप ढाल दिया गया है। सस्कृत के कथा-साहित्य पर इनका विशेष प्रभाव पड़ा है। महाभारत और पचतंत्र पर इनका प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है ।

जातक कथाओं मे यत्र-तत्र नीति की सुन्दर उक्तिया बिखरी पड़ी हैं—नीचे उदाहरण-स्वरूप कुछ उद्धृत की जा रही है—

---

१ धम्मपद—२४०

२ धम्मपद—६३

३ कसवहो-हिन्दी ग्रथ रत्नाकर-सर्ग १—पद्य १२

सेय्यो अमित्तो मेधावी यञ्चे बाला नु कपको ।
पस्स रोहिणिक जम्मि मातर हन्तवान सोचतो ॥[1]

(मूर्ख दयालु मित्र की अपेक्षा बुद्धिमान् शत्रु ज्यादा अच्छा है)

असमोक्खित कम्मत तुरताभि निपातिन ।
सानि कम्मानि पप्पेन्ति उण्ह वज्झोहित मुखे ॥[2]

(जो व्यक्ति बिना विचारे उतावली में कार्य करता है, उसके वे काम ही उसे तपाते हैं, जैसे मुह मे डाला हुआ अत्यन्त गर्म भोजन ।)

कटु वचन को ध्यान में रखकर एक गाहा है—

नहि वण्णेन सम्पन्ना मञ्जुका प्रियदस्सना ।
खरवाचा पिया होन्ति अस्मि लोके परम्हि च ॥[3]

वस्तुत पालि-साहित्य में नीति के अन्तर्गत सभी विषयों पर उत्तमता से विवेचन हुआ है ।

प्राकृत-साहित्य में नीति—

जब संस्कृत-भाषा सामान्यजनों के लिये सुबोध न रही, तब जन-साधारण के काव्यरसास्वादन के लिए प्राकृत में रचनाएं होने लगी ।[4] शनै शनैः लोगों को सस्कृत की अपेक्षा प्राकृत इतनी अधिक कोमल और प्रिय लगने लगी कि दण्डी[5] तक भी इसकी स्तुति किये बिना न रह सके। यह प्राकृत-प्रेम इतना बढ़ गया कि प्राकृत-कवि-गोष्ठियों मे सस्कृत-भाषी बुरी तरह खटकने लगे—

पाइअकव्वुलावे पडिवयरण सक्कएण जो देइ ।
सो कुसुमसत्थर पत्थरेण अवुहो विणासेइ ॥[6]

---

१ जातक-१—पृ ३२३-२५

२ जातक १ पृ १४७

३ जातक ३—पृ. ७६

४ प्राकृत-सुभाषित-सग्रह—पृ ३२/२८८

५ काव्यादर्श—१/३४

६. प्राकृत-सुभाषित-सग्रह—पृ ३२/२९३

अर्थात्-जो मनुष्य प्राकृत-काव्यालाप में प्राकृत कविता का उत्तर संस्कृत कविता द्वारा देता है, वह मूढ़ कुसुमों की क्यारी को पत्थरों से नष्ट-भ्रष्ट करता है। अस्तु।

बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रभाव के फलस्वरूप प्राकृत-काव्य मे मान, तेज, वीरता का उतना महत्व नही रहा, जितना क्षमा, दया, ममता, स्नेह आदि विषयों का। मन शुद्धि के बारे मे कवि की उक्ति है—

सव्वाण वि सुद्धीण मणसुद्धी चेव उत्तमा लोए।
आलिंगइ भत्तारम् भावेणान्नेण पुत्त च ॥[1]

(संसार मे सब प्रकार की शुद्धियों मे से मन की शुद्धता उत्तम होती है। स्त्री पति का आलिंगन एक भाव से करती है, तथा पुत्र का अन्य भाव से।)

सज्जन व्यक्ति वही है जो क्रोध को भी क्षमा से पराग्त करे—

दढरोसकलुसिअस्स वि,
सुअणस्स मुहाहि विप्पिअ कतो।
राहु मुहम्मि वि ससिणो,
किरणा अमअविअ मुअन्ति ॥[2]

तीव्र क्रोध से तिलमिलाते हुए भी सज्जन के मुख से अप्रिय वचन नहीं निकलते। चांद चाहे राहु के मुख मे ही क्यों न पड़ा हो, फिर भी उसकी किरणे सुधावृष्टि ही करती रहती हैं।

स्त्री-स्वभाव को लेकर भी प्राकृत में सुन्दर उक्ति कही गई है—

घेप्पइ मच्छाण पए आयासे पक्खिणो य पयमग्गो।
एक्क नवरि न घेप्पइ दुल्लक्ख कामिणीहियय ॥[3]

अर्थात्—जल में मछली और आकाश मे पक्षी के पद-चिन्ह तो पहिचाने जा सकते हैं, परन्तु नारी-हृदय को पहिचानना कठिन और वश में करना असम्भव है।

---

१. सूक्ति-सरोज-धर्मदास जैन मित्र मडल—पृ ५५/१
२ गाथा सतसती-शतक ४—गाथा १६
३ प्राकृत-सुभाषित-सग्रह—पृ. ६/७६

आर्थिक नीति के क्षेत्र में प्राकृत-काव्य में लक्ष्मी के महत्व को मुक्तकंठ से स्वीकृत किया गया है—

विगुणमपि गुणड्ढ रूवहीणं पि रम्म,
जडमवि मइमत मदसत्त पि सूर ।
अकुलमपि कुलीण त पयपति वो आ
नक्कमलदलच्छो ज पलोएइ लच्छी ॥[1]

नवकमलदलाक्षी लक्ष्मी निज कृपा-कटाक्ष से समाज मे निर्गुण को गुणी, कुदर्शन को सुदर्शन, मूर्ख को मतिमान्, कातर को सूर तथा कुलहीन को कुलीन बनाने में पूर्णतया समर्थ है।

ध्यानपूर्वक देखने से पता चलता है कि संस्कृत की परम्परा प्राकृत मे ज्यों की त्यों विद्यमान है। प्राकृत-कवियों ने उस परम्परा को बुद्धि और कल्पना के सयोग से और भव्य बनादी है। अपनी विषय-व्यापकता और विविधता के कारण प्राकृत-नीति-काव्य समृद्ध एव श्लाघनीय है।

अपभ्रंश का नीति-काव्य

अपभ्रंश का भाषा के रूप मे प्रचलन ५०० ई० से १००० ई० तक के आस-पास रहा। ९वीं से १२वीं शताब्दी तक अपभ्रंश का स्वर्णकाल रहा।

अपभ्रंश-साहित्य को मोटे रूप से हम चार आधारो मे बाट सकते हैं— १ जैन धारा, २. बौद्ध धारा, ३ शैव धारा, और ४ ऐहिकतापरक धारा। नीति की दृष्टि से इनमे जैन तथा बौद्ध तथा ऐहिकतापरक धारा का विशेष महत्व है।

उस समय के सिद्ध-साहित्य मे भी नीति की कई सुन्दर बातें प्राप्त होती हैं। साधुओं पर व्यग करते हुए सरहपा कहते है—

जइ णग्गाविइ होइ मुत्ति
ता सुणह सिअलाह ।
लोम उपाडण अत्थि सिद्धि
ता जुवइ-णिअम्बह ॥[2]

---

१. सूक्ति-सरोज—१७८/२

२ Sarhapa- J D L Calcutta Vol 28, P 10

अर्थात्—यदि नगे रहने से मुक्ति मिलती हो, तब कुत्तों और गीदडों को भी मिल जायगी। यदि रोम उखाडने से सिद्धि प्राप्त हो जाती हो, तो युवतियों के नितबों को भी प्राप्त हो जायगी।

अपभ्रंश भाषा मे प्रबन्ध-काव्य भी खूब लिखे गये। इन प्रबन्ध-काव्यों में भी नीति के सुन्दर प्रसंग प्राप्त होते है। स्वयंभू मानव-शरीर की नश्वरता का उल्लेख करते हुए कहते हैं—

रभा गब्भेण व णीसारें पक्कफलेण व सउणाहारे।
सुण्णहरेण व विहडिय-बधे पच्छहरेण व अइ दुगंधे ॥[1]

(काया कदली-वृक्ष के मध्य भाग के समान निस्सार है, पक्व फल के तुल्य पक्षियों का आहार है, सूने घर के समान शिथिल बधनों वाली है, और शौचालय के ममान दुर्गन्ध का भडार है।

कार्य की शोभा उसकी सफल सपन्नता पर ही निर्भर है, इस भाव को कवि ने यों व्यक्त किया है—

सोहइ पाउसु सास समिद्धए
सोहइ विहउ स परियण रिद्धिए।
सोहई माणुस गुण सपत्तिए
सोहई कजारमु समत्ति ए ॥[2]

"जैसा बोओगे, वैसा ही पाओगे" इस लोकोक्ति को धनपाल ने इस प्रकार कही है—

जहा जेण दत्त तहा तेण पत्त
इम सुच्चए सिट्ठ लोएण वुत्त।
सु पायन्नवा कोद्दवा जत्त माली
कह सो नरो पावए तत्व साली ॥[3]

---

१ पउम चरिय० (रामायण) ७७/४ हि० का० धा०—पृ० १२२

२ पुप्पदत-आदि-पुराण—पृ० ४०७

३ धनपाल-भविसयत्त-कहा—पृ० ८४

अर्थात्—"जिसने जैसा दिया, उसने वैसा ही पाया", शिष्ट लोगों की यह वाणी सत्य ही है। जो माली कोदव बोयेगा, वह शाली कहां से प्राप्त कर सकता है?)

ससार के दु खों एव अभावों से पीड़ित लोगो को देखकर लखमदेव की वाणी यों उच्चरित होती है—

जसु गेह अण्णु तसु अरूइ होइ
जसु भोज सत्ति तसु ससु ण होई।
जसु दाण छाहु तसु दविणु णत्थि
जसु दविणु तासु अइ लोहु अत्थि।
जसु मयण राउ तसि णत्थि भाम
जासु भाम तासु उछवण काम ।।[1]

अपभ्र श-काव्य में उपदेश देते रहने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। उदाहरणार्थ—

भोगह करहि पमाणु जिय
इन्द्रिय म करि सदप्प।
हुँति ण भल्ला पोसिया
दुद्धे काला सप्प ।।[2]

(हे जीव! भोगों का सीमित उपभोग कर। इन्द्रिय को सदर्प मत होने दे। दूध से कृष्ण सर्प का पोषण भला काम नहीं)

ज दिज्जइ त पावि अइ
ए उण वयण विसुद्ध।
गाइ पइण्णइ खड भुसइ
कि ण पयच्छइ दुद्धु ।।[3]

अर्थात्—क्या यह बात सत्य नहीं है, कि जो दिया जाता है, वही प्राप्त होता है। गाय को खली भूसा खिलाने पर वह क्या दूध नहीं देती?

---

१ लखमदेव-णेमिणाह-चरिउ—पृ० २३३

२. स० राहुल साकृत्यायन-हिन्दी काव्यधारा—पृ० १७०/६५

३ सावधम्म दोहा- नामवरसिंह- हिन्दी के विकास मे अपभ्र श का योग—पृ० ३२६/१७

कहि ससहरु कहि मयर हरु
कहि वरिहिणु कहि मेहु।
दूर ठिग्राह वि सज्जणह
होइ ग्रसड्ढलु नेहु ॥[1]

(चन्द्र कहां है ? और समुद्र कहा ? मेघ कहां है और मोर कहां ? सज्जन एक दूसरे से चाहे दूर रहे, पर उनका अनुराग तो निराला ही होता है।)

सदेशरासक के ग्रन्थारभ में कवि कहता है— "निशानाथ के उदय पर क्या नक्षत्र नहीं चमकते। यदि तरु-शिखर पर आसीन कोयल सुमधुर कूजन करती है, तो क्या कौए काव-काव करना त्याग देते है ? यदि त्रैलोक्य-पावनी सागराभिमुख वहती है तो क्या अन्य सरिताए वहना बन्द कर देती हैं। यदि चतुर्वदन ब्रह्मा ने वेदों का प्रकाश किया तो क्या अन्य कवि काव्य-रचना त्याग दें ? नहीं, जिसमें जो शक्ति हो, उसका प्रकाशन करना ही चाहिये"।[2]

स्पष्टत देखा जाता है कि यद्यपि अपभ्रंश-भाषा में विशुद्ध नीति-परक काव्य-ग्रन्थ एक भी उपलब्ध नही होता, फिर भी अन्य प्रबन्ध एवं मुक्तक ग्रन्थों के अध्ययन एव उनमें व्यवहृत नीति-परक सूक्तियों को देखने से प्रतीत होता है कि अपभ्रंश में नीति-काव्य पर्याप्त मात्रा में है, यही नहीं, अपि तु वह नीति-काव्य अपनी मौलिकता एव सरसता के कारण श्रेष्ठ-काव्य कहलाने का अधिकारी भी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के उद्भव तथा विकास से पूर्व वैदिक सस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में पर्याप्त और व्यापक नीति-काव्य का सृजन हो चुका था। इस नीति-काव्य का हिन्दी के नीति-काव्य पर भी गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

---

१ हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण—८/४/४२२

२ स० मुनि जिनविजय व हरिवल्लभ. सदेशरासक- प्र०-भारतीय विद्या भवन बबई-१/८—१७

देवीदास का काव्य भक्तिकाल में आता है, इनका समय गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन है।[1] अत इनके नीति-काव्य का अध्ययन करने से पूर्व यह आवश्यक था, कि हिन्दी-पूर्व भाषाओ में प्रयुक्त नीति-काव्य का सम्यक् अध्ययन किया जाय, जिससे नीति-काव्य की परम्परा को सही रूप में समझा जा सके। इसके साथ ही उस धारा का कितना प्रभाव इस कवि पर पड़ा है, और इसके नीति-काव्य ने परवर्ती कवियों को क्या प्रेरणा दी है, इसके लिये भी नीति-काव्य-परम्परा का अध्ययन करना अभीष्ट था। सक्षेप में हिन्दी-पूर्व भाषाओं का नीति-काव्य देखने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है, कि हिन्दी को नीति-काव्य में एक समृद्ध परम्परा मिली, जिससे आगे चलकर हिन्दी-काव्य समृद्ध, सरस एव श्रेष्ठ बन सका।

प्रस्तुत ग्रन्थ

राजस्थान में जितना विशाल साहित्य डिंगल और पिगल भाषाओं मे लिखा गया है, उसका बहुत थोड़ा अंश ही प्रकाशित होकर विद्वानों के पास पहुँच सका है। अभी तक अनेक महत्वपूर्ण कवि और उनकी कृतियाँ अज्ञात और अप्रकाशित ही हैं। प्रस्तुत कृति "राजनीति रा कवित्त" और उसका रचयिता देवीदास अद्यावधि अज्ञात ही थे, यद्यपि यह कृति अपने आप मे सर्वाङ्गपूर्ण एव नीति-काव्य की दृष्टि से उच्च कोटि की है। अत इस कृति का नीति की दृष्टि से तथा काव्य की दृष्टि से मूल्याकन करने से पूर्व हम इसके कर्ता एवं आश्रयदाता के संबध में प्राप्त साधनों के आधार पर आवश्यक जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

कवि-परिचय

'राजनीति रा कवित्त' के रचयिता देवीदास मूलत शेखावाटी के निवासी और जाति से वैश्य थे। शेखावाटी में इनके पिता की काफी प्रसिद्धि थी। देवीदास भी शेखावत सरदार सूजाजी के पुत्र लूणकरण तथा रायसल के पास रहा। रायसल दरबारी पक्का ईश्वर-भक्त और लूणकरण का छोटा भाई था। देवीदास की नीति से ही रायसल एक मामूली जागीरदार से उठ कर अकबर का अत्यन्त घनिष्ठ प्रिय-पात्र हो गया था, और रायसल भी अपने जीवन मे ईश्वर के बाद देवीदास का

---

१ हिन्दी मे नीति-काव्य का विकास—डॉ० रामस्वरूप शास्त्री 'रसिकेश'—पृ २०१

ही कहना मानते थे। एक प्रकार से देखा जाय तो रायसल का जीवन ही देवीदास का जीवन है। अत देवीदास के जीवनचरित को जानने के लिये, रायसल का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

रायसल के पूर्वज

रायमल कछवाहा वीर था। भाटों ने अपनी वशावलियों मे कछवाहा राजवश को अयोध्या के सूर्यवशी राजा रामचन्द्र तथा उनके पूर्वज नारायण, ब्रह्मा, मरीचि, कश्यप, इक्ष्वाकु से मिलाया है। 'मुहणोत नेणसी री ख्यात'[1] में नारायण से २२० वी पीढ़ी मे राजा नल को रख कर उसके आगे दुल्हराय तक वशावली दी है।

कहा जाता है कि प्रारभ मे कछवाहा बिहार में सोन नदी के किनारे रोहतास में बसे, और वहा रोहतासगढ़ का किला बनवाया। कालान्तर में उनकी एक शाखा के वीर पुरुष नल ने मालवा में—नरवर मे—अपना आधिपत्य स्थापित किया; उस वक्त यह क्षेत्र 'निषधदेश' कहलाता था, और यहा नागों की कच्छप-वंशी जाति रहती थी। इन कच्छपों को हरा कर अपना राज्य स्थापित करने के कारण ये लोग 'कच्छपारी' 'कच्छपघात' या 'कछवाहा' कहलाने लगे।[2]

इसी वश में ईशासिंह हुए, जिनके पौत्र दुल्हराय ने अपने पिता सोढ़देव से अनुमति लेकर तथा अपने श्वसुर की सहायता से 'दौसा' (जयपुर नगर से ४० मील पूर्व) पर अधिकार कर लिया। डॉ० गौरीशकर हीराचद ओझा ने सोढ़देव का दौसा मे आने का समय वि० स० ११६४ के लगभग माना है।[3] श्यामलदास ने सोढदेव का वि० स० १०३३ कार्तिक कृष्णा १० को राजा होना बतलाया है।[4] एडवर्ड थोर्नटन[5] व कर्नल टॉड[6] ने ई० सन ६६७ माना है। इम्पीरियल-गजेटियर में ई० सन् ११२८ बतलाया गया है।[7] वि० स० १०३४ के शिलालेख पर गौर करने से वि० स० ११६४ का समय ही सही प्रतीत होता है। इस दुल्हराय के दौसा आने से ही जयपुर-राज्य के राजवश का इतिहास प्रारभ होता है, और यही देवीदास का आश्रयदाता रायमल दरबारी का पूर्वज था। दुल्हराय के पश्चात् के शासकों की वशावली इस प्रकार से है—

---

१. मुहणोत नेणसी री ख्यात' भाग २—पृ ४.
२ राजपूताने का इतिहास—तृतीय भाग—जगदीशसिह गहलोत-पृ. ५८
३ नागरी प्रचारिणी पत्रिका—भाग १-अक ४—पृ ४३१-४३२
४ वीर विनोद—भाग २—पृ. १२६०
५ गजेटियर ऑफ टेरीटोरिज अण्डर दी गवर्नमेण्ट ऑफ दी ईस्ट इण्डिया कपनी-जिल्द २—पृ २८८
६ टॉड कृत-एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान—जिल्द २—पृ ३४६
७ इम्पीरियल गजेटियर—जिल्द १३—पृ ३८४

दुल्हराय
|
काकिलदेव
|
हणुदेव | हलधर | रालणसी | देहर

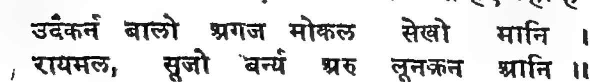
हणुदेव
|
जान्हड़देव (कुन्तल)
|
पजवनदेव
|
मालसी
|
विजलदेव
|
राजदेव
|
किल्हण
|
कुन्तल
|
जाणसी | गोगा

जाणसी
|
उदयकर्ण | कुभा

उदयकर्ण
|
वरसिंह | नरसिंह | पाताल | बाला | शिवब्रह्म | बनवीर | पीथा | पीपा

बाला
|
मोकल
|
शेखा
|
रायमल
|
सूरजमल
|
लूणकरण | रायसल दरवारी[1]

१. 'रायसल-जस-सरोज' मे कवि ने पीढ़ियो की चर्चा करते हुए कहा है—


उदैकर्न बालो अगज मोकल सेखो मानि ।
रायमल, सूजो बन्यं अरु लूनकन आनि ॥

शेखावत, कछवाहा राजवश से ही हैं। ये आमेर के राजा उदयकरण के तृतीय पुत्र बाला के पुत्र मोकल के पुत्र शेखा के वंशज हैं। शेखा का जन्म शेख बुरहान के आशीर्वाद से ई० सन् १४३३ मे हुआ था।[१] बाला को नरवाड़ा, मोजाबाद आदि १२ गांव मिले हुए थे। शेखा अपने पिता की मृत्यु पर ई० सन् १४४५ मे इस जागीर का स्वामी बना। शेखा ने ही अमरसर गांव वसाया था। वस्तुत शेखा ने ही अपनी मृत्यु के समय तक लगभग ३६० गावों पर कब्जा कर, एक स्वतन्त्र राज्य शेखावाटी के नाम से स्थापित किया था।

शेखा के बाद उसका सबसे छोटा पुत्र रायमल राजगद्दी पर बैठा। यों तो शेखा के १२ पुत्र थे, लेकिन उसने अपने सबसे छोटे पुत्र रायमल को ही राजगद्दी पर बैठाने की इच्छा प्रगट की थी। अन्य पुत्रों ने भी इसका कोई विरोध नह किया। रायमल ने राजगद्दी पर बैठते ही अपने पिता के घातको से बदला लेने का निश्चय किया। गौड भी युद्ध से तंग आ गये थे, अत उन्होंने बिना युद्ध के ही उससे सधि कर ली, और गौड राव रिड़मल ने अपनी पुत्री का विवाह रायमल से करके उसे ५१ गाव दहेज में दिये। इसने इब्राहिम लोदी के सेनापति 'हिन्दाल' को अमरसर पर आक्रमण करने पर हराया था। जब जोधपुर के राव मालदेव ने मारौठ के गौड़ों पर आक्रमण किया, तब इसने गौडों की सहायता की थी। सधि हो जाने पर मालदेव ने अपनी पुत्री का विवाह, रायमल के पौत्र लूणकरण के साथ कर दिया।[२] रायमल वीर था, और इसी के पास शेरशाह सूर का पिता हसन खाँ सूर नौकर रहा था।[३] राव मालदेव से हार कर मेड़ता के वीरमदेव ने भी इसी के पास शरण ली थी।[४] रायमल ने खानवा के युद्ध मे महाराणा सांगा की सहायता के लिये अपनी सेना भेजी थी। रायमल की मृत्यु ई० सन् १५३७ में हुई, और उसी वर्ष उसका ज्येष्ठ पुत्र सूरजमल राज्यगद्दी पर बैठा।[५] राजा सूरजमल अत्यन्त ही शान्त प्रकृति के थे।

---

१. हरविलास सारदा कृत 'महाराणा कुम्भा'—पृ १०

२ जोधपुर का इतिहास-भाग—१—डॉ गौरीशकर हीराचद ओझा—पृ ३५१

३ मआसीरूल ऊमरा-भाग १—पृ ३५१-३५२

४ 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' भाग-२—पृ १५७

५ राजपूताने का इतिहास-तृतीय भाग—जगदीशसिंह गहलौत—पृ. १८४

शेरशाह के संकेत पर नागौर के सूबेदार रासा टाक ने इन पर आक्रमण कर इनके राज्य को हथिया लिया, इस पर सूरजमल वहां से बांसुरबसई (पटियाला) चले गये, तथा वहीं इनकी मृत्यु हो गई। बांसुरबसई के पास आज भी इनकी जीर्ण-शीर्ण छतरी विद्यमान है।

लूणकरण और देवीदास

इधर सूरजमल के पांचवें पुत्र रायसल ने शेरशाह की मृत्यु के बाद मालदेव की मदद से रासा टाक को मार कर वापिस अमरसर पर कब्जा कर लिया और सूरजमल को आने के लिये लिखा, परन्तु सूरजमल पुन बांसुरबसई से नहीं आये, अपितु वहीं से लूणकरण को गद्दी पर बिठाने के लिये कह दिया। अत: सूरजमल का ज्येष्ठ पुत्र लूणकरण राज्यगद्दी पर बैठा। इस वक्त अमरसर के आसपास का ही क्षेत्र इनके अधिकार में था। देवीदास लूणकरण का ही सलाहकार था।

देवीदास बाल्यावस्था से ही प्रखर प्रतिभा के धनी थे और लूणकरण इनकी प्रतिभा का लोहा मानते भी थे। एक छोटी सी घटना से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि देवीदास कितनी सूझबूझ के धनी थे।

एक बार लूणकरण ने दरबारियों के सामने प्रश्न रक्खा कि "धन बड़ा या नीति ?" सभी दरबारियों ने धन की महत्ता को ही उच्चता प्रदान की और तर्क दिया कि "जिसके पास धन होता है वह स्वत. ही नीतिवान बन जाता है, लोग उसका आदर करने लगते हैं और उसके बताये हुए रास्ते पर चलते हैं।" यही प्रश्न जब राव साहब ने देवीदास से किया तो देवीदास ने आशा के विपरीत धन की अपेक्षा नीति को अधिक मान्यता प्रदान की और प्रमाण में यह कवित्त वहीं खड़े-खड़े दरबार मे सुना दिया—

नीत ही तें धरम, धर्म तें सकल सिद्ध
नीत ही तें आदर सभान बीच पाइयै।
नीत तें अनीत छूटै नीत ही ते सुख लुटै
नीत लीयै बोलै भलौ वकता कहाइयै।
नीत ही तें राज राजै नीत ही तैं पातिसाही
नीत ही को नवखड माहि जस गाइयै।
छोटन को वडे करै वडे महावडे करै
तातें सब ही को राजनीत ही सुनाइयै।

इस एक कवित्त मे ही देवीदास की काव्य-प्रतिभा स्पष्ट हो जाती है। नीति का महत्व और उसकी सर्व-साधारण के लिये उपयोगिता का वर्णन जिस कुशलता से किया है, वह उसके आशु-कवि का परिचायक है।

लूणकरण इस कवित्त से अत्यन्त प्रभावित हुए, परन्तु इस घटना से अन्य दरबारी चिढ गये और येन-केन-प्रकारेण देवीदास को नीचा दिखाने की टोह में रहने लगे।

मौका पाकर कुछ दरबारियों ने राव लूणकरण के कान भरने शुरू कर दिये, और कहा जाने लगा कि "देवीदास अहकारी है, दरबार के अदब-कायदे का उसे तनिक भी भान नही है और बुद्धि मे अपने आप को सबसे ऊँचा समझता है" आदि आदि। राव लूणकरण, देवीदास के ज्ञान एव तर्क से प्रभावित थे, फिर भी दरबारियों के सामने देवीदास की नीति एव बुद्धि की परीक्षा लेने का निश्चय किया। बिल्कुल गोपनीय रूप से रावजी ने कुछ कारीगरों से नमक का हाथी बनवाया। ऊँचे डीलडौल का विशालकाय हाथी, जिस पर रग वगैरह करने से वह जीवित हाथी-सा प्रतीत होता था। दस-बारह फुट दूर खड़ा व्यक्ति एक बार तो यही मानता कि यह सचमुच का ही हाथी है। इस हाथी को लोहे के सींखचों मे बद कर जगले में एक तरफ रख दिया गया। सीखचों के चतुर्दिक् घूमने पर भी किसी भी तरफ कोई दरवाजा नजर नहीं आता था, जिसमे से हाथी को निकाला जा सके।

दूसरे दिन जब दरबार भरा तो सभी दरबारी कौतुहलवश उस हाथी को देख रहे थे। परीक्षा लेने के उद्देश्य से राव लूणकरण ने कहा कि "आप सब मेरे दरबारी बुद्धिमान् चतुर और नीतिवान है। इस हाथी को इन सींखचों से बाहिर निकालना है, पर इस बात का ध्यान रहे कि ऐसा करते समय न तो सींखचों के ही हाथ लगाया जाय और न हाथी के ही।"

सभी दरबारी इस अद्‌भुत आज्ञा को सुनकर आश्चर्यचकित रह गये। कुछ ने मन ही मन राव को मूर्ख और सनकी समझा और विचार किया कि यह किस प्रकार से सभव है? कुछ ने स्पष्टत अपनी असमर्थता अनुभव की।

देवीदास उस दिन किसी आवश्यक कार्यवश बाहिर गये हुए थे, अत, दरबार में उपस्थित नहीं थे। कुछ दरबारी प्रसन्न भी थे कि अब देवीदास का पत्ता कट जायगा। उनमें से कुछ जो रावजी के मुंह लगे हुए थे, दरबार में ही कह दिया कि

"इस हाथी को आपकी शर्तों के अनुसार तो हम में से कोई नहीं निकाल सकता, आप देवीदासजी को ही आज्ञा दीजिये।"

दूसरे-तीसरे दिन जब देवीदास दरबार मे उपस्थित हुए तो सभी दरबारी मद-मंद मुस्करा रहे थे। पहले तो इसका रहस्य देवीदास को समझ मे नहीं आया, परन्तु जब हाथी को देखा तो वे सब कुछ समझ गये। वे अपनी जगह से उठ कर सीखचों के पास गये और ध्यानपूर्वक हाथी को देखने लगे। हाथी के कान के पास पपड़ी सी उभरी हुई थी और उसके पास नमक के छोटे-छोटे कण स्पष्ट चमक रहे थे। देवीदास यह देखकर सब कुछ समझ गये और चुपचाप अपनी जगह पर आकर बैठ गये।

थोडे ही समय के बाद रावजी अपने आसन पर आकर बैठे और देवीदास को दरबार में उपस्थित देख उनके सामने भी यही प्रस्ताव रक्खा कि इस हाथी को सींखचों के बाहिर निकालना है, परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि न तो सीखचों के हाथ लगाया जाय और न हाथी को ही छुआ जाय।

देवीदास अपनी जगह से उठे और जानबूझ कर हाथी के चारों ओर एक चक्कर लगाया, फिर हाथ जोड कर बोले—महाराज! हाथी गर्मी से पीडित है, कई दिन हो गये, इसे न तो पीने को पानी मिला है और न स्नान करने को ही। अत. महाराज की आज्ञा हो तो पहले मैं इसे स्नान करादूं, फिर आपकी आज्ञा होगी तो आपकी बताई शर्तों के अनुसार हाथी को बाहिर भी निकाल दूंगा।

देवीदास का कथन सुनकर दरबारी हंस पड़े। उनमें से एक बोला-देवाजी! क्या हाथी जिन्दा है जो आपका पानी पीयेगा?—और एक बार फिर समस्त दरबारी हो-हो करके हस पड़े।

देवीदास चुप रहे और अपनी ही बात पर अडे रहे। रावजी की आज्ञा से तुरन्त पानी मगाया गया और बाल्टिया भर-भर कर हाथी पर उडेला जाने लगा। हाथी नमक का बना हुआ था, अत पानी लगने से नमक गल-गल कर बहने लगा। कुछ ही समय बाद पूरा नमक गल कर बह गया और हाथी की जगह केवल खाली पिंजरा ही दिखाई देने लगा।

देवीदास ने हाथ जोड कर निवेदन किया—महाराज! आपकी आज्ञानुसार हाथी को सींखचों के बाहिर निकाल दिया है और इस प्रक्रिया में मैंने न तो सींखचो को ही छुआ है और न हाथी को ही।

जो दरबारी बढ़-चढ़ कर बोल रहे थे, उनके चेहरे शर्म से झुक गये। राव लूणकरण अत्यन्त प्रसन्न हुए और देवीदास को अपना प्रधान-मत्री नियुक्त किया।

यह घटना वास्तविकता से कितना मेल खाती है, इसे छोड़ भी दें, तब भी यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि देवीदास अत्यन्त प्रखर-प्रतिभा के धनी थे और नीति-युक्त पथ पर चलने वाले राव लूणकरण के प्रधान मत्री थे। डॉ० रामसरूप शास्त्री 'रसिकेश' ने भी इस कथन को स्वीकार किया है कि देवीदास राव लूणकरण के मत्री थे और धन से बुद्धि को उच्च मानते थे।[1]

जब रावजी ने दरबारियों की ईर्ष्या और देवीदास की परीक्षा की घटना दरबार मे कही तो देवीदास ने 'रूपक' मे कहा—

कूवा मांय मेंडको तिमगल सो ह्वै रह्यो
तहा आयो हस उड्यो नीचै कूप पानीयै।
वैठो उपकठ वोल्यो मरोर सो मेंडको तु
को है कु राजहस तेरो घर जानियै।
मानसर के तो वडो मो फलग हूं तै वडो
मो घर हू तै वडो झूठ कैसे आनियै।
जा जीव की ज्यो लो पोहच नाही देवीदास
ताको वुरो मन-माक तनक सो न मानियै ॥[2]

रायसल और देवीदास

राव लूणकरण के पाच भाई और थे। वि० सवत १६०५ में जब लूणकरण राज्यगद्दी पर बैठा तो उसने अपने पाचों भाइयों को एक-एक ग्राम दिया। रायसल इन सब भाइयो में वीर और पराक्रमी था। उसे 'लाम्बिया' की जागीर मिली।[3] रायसल-जस-सरोज[4] से भी इस कथन की पुष्टि होती है—

---

१. हिन्दी मे नीति-काव्य का विकास—डॉ० रामसरूप शास्त्री 'रसिकेश'—प्रकाशक—दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली—पृ. २०१

२. "राजनीति रा कवित्त"—कवित्त संख्या २३

३. राजपूताने का इतिहास-तीसरा भाग—पृ १८४

४. हस्तलिखित प्रति—श्री सौभाग्यसिहजी शेखावत के निजी सग्रह से।



शेखावत कछवाहा श्री रायसल दरबारी

[प्रतिकृति श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के सौजन्य से प्राप्त]

॥ दोहा ॥

वेद सुन्नि रस चद बनि, सम्वत साल सभारि ।
सूजै जो सरवस दियौ, लियौ कवर ललकारि ॥ १ ॥
छव सुत सूजा कै छता, जिका दोय बर जोर ।
राव लूणक्रन रायसल, दिल्लीपुर वजि दोर ॥ २ ॥
कवर पदै पाछो करचौ, राजधानी निज राज ।
सूजा घर फिर सपदा, वीर-भूमि गज बाज ॥ ३ ॥
पडव नभ दरसन पहुमि, सूजो सुरग सिधाय ।
ताहि दिन्न वैठो नखत, अरु लूणक्रन आय ॥ ४ ॥
बादिसाह दिन बाहुरचो, अफगान्यान उथालि ।
चन्यो हुमायू बादिसाह, दिल्ली लई दकालि ॥ ५ ॥
विपदा मदत्ति विचारिकै, सुरति करी चित चाह ।
ज्यो को त्यो मन सुभ जठै, बकस्यो कहि-कहि वाह ॥ ६ ॥
कूरम सू पतिसाह कहि, भाखि स्वामि-ध्रम-भेद ।
खुसी होय दीनो खिलत, आनि रु चित्त उमेद ॥ ७ ॥

॥ छंद पधरी ॥

पतिसाह-हूंत निज थान पाय, जह लीन राज पुनि ते जमाय ।
पच भ्रातन दीन्हे ग्राम पांच, खुदि बात कहि नृप आप सांच ॥ ८ ॥

रायसल और देवीदास के बीच परस्पर घनिष्ठ प्रेम था। देवीदास इतना जबरदस्त नीतिज्ञ था कि उसने 'लाम्बिया' जैसे छोटे से ग्राम के अधिपति रायसल को ऊँचा उठा कर अकबर के दरबार में पच-हजारी मनसब तक के पद पर पहुँचा दिया था।[1]

एक बार लूणकरण ने दरबार में पूछा कि "ससार में वीर पुरुष बड़ा है या उसकी जागीर ?" देवीदास दरबार में उपस्थित थे, उन्होंने मूछें तान कर कहा कि "अन्नदाता। वीर-पुरुष ही बड़ा है। यदि व्यक्ति वीर है तो वह जागीर उपार्जित कर सकता है और ऊंचा उठ सकता है।"

---

१. आइने अकबरी-हरिवंशराय शर्मा – पृ० २४०

लूणकरण को देवीदास के कथन में अहं की गंध आई, अत कहा–'अगर ऐसी ही बात है तो मैंने रायसल को 'लाम्बिया' ग्राम दिया है और वह वीर भी है, अत यदि तुम उसे बड़ा राजा बना दो, तभी तुम्हारा कथन सच्चा हो सकता है— और लूणकरण घनी मूछों के बीच हौले से मुस्करा दिया।

देवीदास ने लूणकरणजी के कथन को चुनौती समझी और तुरन्त अपनी बात की पुष्टि के लिये उठ खडे हुए तथा हाथ जोड कर जाने की आज्ञा मागते हुए कहा—'महाराज! अब मैं आपसे तभी मिलूगा, जब मैं रायसलजी को कुछ बना दूगा'–और कथन के साथ ही साथ दरबार से बाहिर निकल गये। 'रायसल–जस-सरोज' ने भी इस घटना की पुष्टि की है—

इक दिवस सभा के वीच आय, पुनि बोलि भूप चित पैज पाय ।
इक वात सुनहु सव बधु आनि, जे वीर धीर सब चित्त जानि ॥ ९ ॥
जग वीच बीर का बड़म जोय ? कवहू न वड़ो व्है पूर्ख काय ।
मन माहि सबै स्वीकार मानि, प्रति उत्तर काहू न दीय प्रमानि ॥ १० ॥
मत्री इक नृप कै बुद्धिमान, तिन्ह दीन्हो उत्तर मुच्छ तान ।
जीवन नृप नाहि न पूर्ख जोड़, ठाढा न जीव का ठोड–ठोड ॥ ११ ॥
तदि कहिय लूनक्रन फेरि तास, 'लाम्या' इक दीन्हो सै हुलास ।
रायसल लेय राजा कराय, तव वचन सु माने सिद्धि ताय ॥ १२ ॥
अरु हुकम राव रो सीस आनि, प्रभु करि है पूरन सौ प्रमानि ।
देईजुदास बुधिवान दीख, सो लीन रायसल आप सीख ॥ १३ ॥

देवीदास, रायसल और अकबर

देवीदास ने दरबार के बाहिर आकर मन ही मन यह निश्चय कर लिया कि रायसल की भेंट शीघ्रातिशीघ्र अकबर से करानी चाहिए, क्योंकि अकबर गुण-ग्राहक है, अत उसने दबा हुआ समस्त राज्य-धन——जिसका कि पता मात्र देवीदास को ही था—निकाल लिया और रायसल को सौंप दिया। रायसल ने देवीदास के कथनानुसार सुन्दर और अच्छी नस्ल के घोडे इकट्ठे किये और अपने मित्रों तथा कछवाहों के साथ अकबर के दरबार में चला गया—

॥ दोहा ॥

देईदास के पासि द्रव्य, सेखों तणो समस्त ।
लाम्या काढ्ढि रु ले गयो, हुयो रायसल हस्त ॥ १४ ॥
करम-जोग सु ओर केइ, सूरवीर भड साथ ।
भ्राता ओर पठाण भी, सग जु भये समाथ ॥ १५ ॥
कारवान जाती कना, सौ घोडा इक साथ ।
खासा-खस्सा साखानिका, क्रूरम लिया विख्यात ॥ १६ ॥
साथ मत्री के रायसल, ले घोड़ा सब लार ।
राव जाय नोकर रह्यो, दिल्ली के दरबार ॥ १७ ॥
साह जु अकबर उण समय, तखत दिली पतसाह ।
हित चित राखत हिंदवा, देण अरयां उर-दाह ॥ १८ ॥
कही हमाउ कवर ने, हिंदव रखैहु हाथ ।
अकबर राज सु अप्पनो, ये तै जानि अख्यात ॥ १९ ॥
पिता हुकम कौ राखिपन, हिंदू रखे हजूर ।
बैरमखांन वंजीर सो, पलट्यो अकबर पूर ॥ २० ॥
अकबर रहतो आगरै, हदि ब्हरम कै हाथ ।
खा बाबा जु खिताब तें, बतलातो सब बात ॥ २१ ॥
सोला सै समत सही, सोलै ही पुनि साल ।
सोलैह बरसा व्है सबल, चित बढि खा तै चाल ॥ २२ ॥
चारा बरसा बैठियो, सोला बरसा सेर ।
सजि छल नाम सिकार को, लीन सुभट निज लैर ॥ २३ ॥
वीर आय दिल्लिय बहुरि, बहरम हुकम विदारि ।
जबर लीन करि जावतो, सेना दुग्ग सभारि ॥ २४ ॥

इससे पूर्व लूणकरण अकबर के दरबार में मनसबदार था तथा इसका तीसरा भाई गोपालदास भी बादशाह अकबर के दरबार में मनसबदार बन गया था, जिसे फतहपुर जागीर में मिला था। 'तुजुक-जहांगीरी' तथा 'मआसीरूल उमरा' के अध्ययन से पता चलता है कि बादशाह अकबर सर्वाधिक विश्वास रायसल पर ही करता था तथा इसे जनानखानों का अध्यक्ष[1] बना दिया था। इसके पीछे भी इतिहास-विश्रुत रोचक घटना है—

१. राजपूताना का इतिहास-तीसरा भाग-पृ. १९२

एक बार अकबर, लूणकरण, मानसिंह, रायसल आदि सभी मिलकर एक बावडी पर स्नान करने गये। बावडी शहर से दूर जगल म थी। वहा अकबर ने एक नई योजना रक्खी कि इस बावड़ी मे आज सभी नगे होकर नहायेगे। सभी हैरान थे, पर अकबर की आज्ञा का उल्लघन करने की हिम्मत भी किसी में न थी। सबसे पहिले अकबर आदमजाद नंगा हुआ और फिर अकबर की देखा–देखी लूणकरण, मानसिंह आदि भी नगे हो गये। परन्तु जब रायसल ने कटि से नीचे का कपड़ा हटाया तो सभी ने आश्चर्य–चकित होकर देखा कि रायसल के पीतल का मजबूत कच्छा पहिना हुआ है। अकबर के पूछने पर रायसल ने उत्तर दिया कि इस पीतल के कच्छे की चाबी मेरे मत्री देवीदास के पास है। बिना चाबी के मैं केवल मूत्र-त्याग कर सकता हूँ, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

अकबर गुण-ग्राहक था। वह समझ गया कि यह व्यक्ति उच्च चरित्र–सम्पन्न है और इसका मत्री उच्चकोटि का नीतिज्ञ है। उस समय तो वह कुछ नही बोला, पर कुछ ही दिनों बाद अकबर ने रायसल को जनानखानों का अध्यक्ष बना दिया और अकबर के अत्यन्त विश्वस्त पात्रों में उसकी गणना होने लगी।

इससे पूर्व जितने भी जनानखानों के अध्यक्ष बने थे, वे चरित्र-हीनता के कारण अकबर के कोप-भाजन बने थे और मौत के घाट उतारे गये थे। मोकमी, हुकमा, कैदू, विजैसिंह इसके उदाहरण हैं। देवीदास दूरदर्शी था, उसने पहिले ही समझ लिया था कि राजपूत यहीं आकर टूटता है और उसने इसका प्रबध पहले से ही पीतल का कच्छा पहिना कर कर दिया था। 'मआसीरूल उमरा' ग्रथ भी इस घटना की पुष्टि करता है। अस्तु।

देवीदास इतने से ही सन्तुष्ट नही था, उसके दिमाग में लूणकरण की कही हुई बात कौंध रही थी। वह रायसल को स्वतत्र राजा देखने का अभिलाषी था और शीघ्र ही ईश्वर ने 'सरनाल के युद्ध' के रूप में देवीदास की यह इच्छा भी पूरी कर दी।

सरनाल का युद्ध

अकबर के चाचा कामरान का पुत्र मिर्जा कतलू गुजरात में सूबेदार था, परन्तु अकबर की अस्वस्थता का समाचार पाकर इसने दिल्ली पर आक्रमण करने की सोची। इसकी भनक अकबर के कानों मे पड चुकी थी। अत अकबर ने सेना सजा कर विद्रोही को कठोर दण्ड देने का निश्चय किया।' माही नदी के किनारे बड़ौदा के निकट 'सरनाल' में दोनों सेनाए आमने-सामने आ डटीं। इतिहास में यह युद्ध 'सरनाल के युद्ध" के नाम से प्रसिद्ध है।

एक प्रकार से यह युद्ध रायसल एवं देवीदास के लिए सौभाग्य-सूचक था, क्योंकि इसी युद्ध मे अपूर्व वीरता दिखलाने के उपलक्ष में रायसल को 'दरबारी' का खिताब मिला और देवीदास का प्रण पूरा हुआ।

युद्ध में जब अकबर चारों ओर से घिर गया था और कतलू खा का वार अकबर पर पडने ही वाला था कि रायसल ने बीच मे ही उस वार को अपनी तलवार पर झेलते हुए अकबर को कहा "चल हट खल्लड़ा, क्षत्रियों का हाथ देख। यह नानी का घर नही है, सामने काकी का जाया है"।—यद्यपि 'चल हट खल्लड़ा' वाक्य अकबर के लिए अपमान—सूचक था, पर वह एक ओर हट कर रायसल तथा कतलू खा का युद्ध देखने लगा। रायसल ने दक्ष वीर की तरह कतलू को अपनी तलवार से ठीक उसी तरह चीर डाला जिस प्रकार लोहे की तात साबुन को चीर डालती है। देवीदास ने भी इस युद्ध में भाग लिया था। 'रायसल-जस-सरोज' में इस घटना का प्रभावशाली वर्णन हुआ है—

अकबर को काको एक आय, जिन नाम कामरा कहत जाय।
जिनको सुत मिरजा कतलु जानि, अरु धारि बैर कोप जु उफानि ॥ १५३ ॥
सो चढिय सेन लेयरु असेस, दावन कज दिल्लिय आप देस।
कतलु करि आयो अधिक कोप, ईरान बलख द्वै मदति ओप ॥ १५४ ॥
लक्खन भट सेना लेख लार, चढि आय दिल्लि दव्वन विचार।
कथ येह दिलीपति सुनत कान, सजि जाय सम्मुख सेना सधान ॥ १५५ ॥

लाहोर खेत दहूं जुडत लाम, सों भयउ घोर सच्चो संग्राम ।
छह्दिन तक जुट्टे हु दल छोह, करि सेन असंखित भये कोह ॥ १५६ ॥

अकबर पै कतलु चल्लि आय, भयभीत दिली-दल व्हैभ जाय ।
अकबर को कतलु लीन आन, इत आयो अकबर लै उडान ॥ १५७ ॥

वीरादि वीर साहं जु विचार, है हात खुदा के जीत-हार ।
अकबर जु इतें निज हय उठाय, इतने जु रायसल वीचि आय ॥ १५८ ॥

अटपट जु वोल कहि कै अनेक, "दखि खदडा छत्रिन हाथ देखि ।
नानी घर जीमन अग्र नाहि, काकी-सुत अग्गों भड कहाहि" ॥ १५९ ॥

यम आर्थ रायसल अर्व एक, धरि चल्लिय कतलु चित्त धेक ।
यो उट्ठि दहुन वाजी अचान, सच जानि दहु तुट्टिय सिचान ॥ १६० ॥

मुख उचरि दहु दिस मार-मार, सेलन व्है सज्जित किय सु वार ।
वर वीर दहु करिगा वचाव, फिरि पलटि वाज बरछा फिराव ॥ १६१ ॥

दोन्यु जु दाव इकसार देत, लखि वार उभय दिसि बाम लेत ।
पलटै जु पतरा अस्व पाव, फिरि उभै डोरि चंक्री फिराव ॥ १६२ ॥

तें पलटि उलटि सेलन तजत, सो दहु सख्र पाटी सजत ।
घमसान रचत द्वै दिस घिरत, फूदी मनु द्वै कन्या फिरत ॥ १६३ ॥

जुरि जग उभै दिस आव जाव, पलटें जुग मच्छी जल प्रभाव ।
थट्ट भन उभै दिस दे घमोर, जे टारत सगर पाठ जोर ॥ १६४ ॥

मुक्त रु अमुक्त जुग सख्र मानि, जे जत्र मुक्त फिरि लेहु जांनि ।
मुक्ता रु मुक्त के दाव मडि, अरु रायसाल कतलु उमडि ॥ १६५ ॥

द्रुत रायसाल लिय जवन दक्खि, सों लीन निकट दिस आप सक्खि ।
इत भाल रायमल उदय अंक, निज हाथ तेग वाही निसंक ॥ १६६ ॥

पुनि खग्ग तेज विद्दुत प्रचंड, मानो कै कालिका चक्र मंड ।
मजि हस्त मनहु कप्पिल मराप, सिव नेत्र भाल मंडित सदाप ॥ १६७ ॥

मनमुख्ख लग्गि वांमाग मार, पडि घाट जनेउ होय पार ।
"वपु कत्रत्र महिन हानो वटाय, जिम मच्छुन चीरत तनि जाय" ॥ १६८ ॥

इम मारचो कतलु जंग आनि, पुनि रायसाल भुज-वल प्रमानि ।
सो जग लख्यो निज नैन साह, बोल्यो न मनहिं दिय वाह-वाह ॥ १६९ ॥
पतिसाह मरत सेना पलाय, जिन लीन्हे अप-अप मुलक जाय ।
चव भाति वाही आयुध प्रचड, मारचो जु जवन-कुल-मुकट-मड ॥ १७० ॥

देवीदास की मंत्रणा का चमत्कार

युद्ध समाप्त होने पर रायसल घर आया और युद्ध का पूरा विवरण अपने मत्री देवीदास को कह सुनाया। देवीदास ने कहा- 'वस्तुत आपने अद्भुत और साहसपूर्ण कार्य किया है, परन्तु कतलू के वध के पश्चात् आपको बादशाह को सलाम करना चाहिये था और अपना नाम, जाति तथा ग्राम का नाम बता देना चाहिये था। सभव है, अकवर को आपका नाम ज्ञात न हो। पर खैर, हुआ सो हुआ, ईश्वर जरूर सहायता करेंगे। आप भविष्य में एक बात का ध्यान रक्खे, यदि अकबर आपको पूछ भी ले कि युद्ध मे मेरे लिये क्या शब्द कहे थे तो कह देना कि युद्ध की बातें युद्ध में ही ठीक लगती हैं, फिर भी यदि अकबर बार-बार कहने का अनुरोध करे तो सब सही-सही बात कह देना।" देवीदास ने जो नीति-युक्त सलाह दी थी, वह सही उतरी। "रायसल-जस-सरोज" में स्पष्ट है—

पुनि रायसाल रन विजय पाय, सब दीन्ह हाल मत्रिय सुनाय ।
"कीन्हो जु आप यह वडम काज, अदभूत नोकरी दीन्ह आज ॥ १७१ ॥
साह सु करी नाहिन सलाम, कूरम यह अनुचित कीन काम ।
नामहु अरु ग्रामहु जानि नाहि, जे ईस्वर घट-घट जानि जाहि ॥ १७२ ॥
सो लेत चराचर की सभाल, देखे विन जानत सो दयाल ।
करि है सब ईस्वर सिद्धि काज, लखि समय दीन की रखत लाज ॥ १७३ ॥

अकबर जब 'सरनाल का युद्ध' जीत कर दिल्ली आया, तो उसने अपनी बेगम को युद्ध का पूरा हाल सुनाया कि किस प्रकार एक वीर ने बीच में पड़ कर अकवर की रक्षा की और कतलू खां का वध किया, वह सब कह सुनाया। इस पर बेगम ने पूछा कि 'आपने उस वीर का क्या सम्मान किया? अकबर ने जवाब दिया कि मुझे उस वीर का नाम-धाम तो स्मरण नहीं, हां! उसके चेहरे तथा पोशाक की मुझे स्मरण है। बेगम ने कहा-आपको शीघ्रातिशीघ्र उस वीर को पुरस्कार देकर उसका सम्मान करना चाहिए'।

अकबर को रायमल की पोशाक का स्मरण था, साथ ही उसके मस्तिष्क में वीर के कहे हुए वचन 'चल हट खल्लडा" भी घूम रहे थे। उसने तुरन्त समस्त सेना को आदेश दिया कि युद्ध में जो वीर जिस पोशाक और जिस स्थिति में था, वैसे ही पोशाक और स्थिति बना कर खड़े हों तथा एक-एक वीर मेरे सामने से निकले।

रायमल के सिर पर बड़ी पाघ तथा दोवडी पहिनी हुई थी और वह अपने नीले घोडे पर चढ़ा हुआ था। जब अकबर ने उसे देखा तो पूछा-'तुमने युद्ध में मेरे लिये क्या शब्द कहे थे'? रायसल ने नम्रता से उत्तर दिया—"समय की बात समय पर ही शोभा देती है समय चूकने के बाद कहने पर मूर्ख कहा जाता है।" पर अकबर के हठ करने पर उसने वही वाक्य "चल हट खल्लड़ा" दोहरा दिया। अकबर ने पहिचान लिया, कि इसी ने मेरी प्राण-रक्षा की है तथा इसी ने कतलू खां को मारा है, बाकी सभी के दावे झूठे हैं। अकबर ने हुलस कर उसे सीने से लगा लिया और पांच बार "वाह रायसल वाह" कहा। पूरी सेना ने भी "वाह रायसल वाह" पाच बार दोहराया। अकबर ने रायसल को पचहजारी मनसबदारी दी तथा 'दरबारी' का खिताब दिया जो कि पूरे अकबर-राज्य में मात्र इसी को यह खिताब मिला था। 'अकबरी-दरबार' तथा 'जहांगीर-नामा' में भी रायसल तथा देवीदास की भरपूर प्रशसा की गई है। 'रायसल-जस-सरोज' में भी इस घटना का उल्लेख उक्त कथन को प्रामाणिकता प्रदान करता है—

दिल्ली-पति आयो दिली, लेय फतै लाहोर।
तेज रवी अकबर तपै, जबर पाय बड़ जोर ॥ १ ॥

अकबर कही उजीर नै, सेना लेहु सजाय।
जो सिल्लह किय जग-ठा, अरु मो अग्रजु आय ॥ २ ॥

पाय हुकम सब सेनपति, सज्जित होय समग्र।
निजरि साह ढिग नीसरे, अकबर श्रीमुख अग्र ॥ ३ ॥

बडी पाघ सिर बाधि कै, दोवडि धारी दुमाल।
नील बाज चढ़ि नीसरयौ, सेल हत्थ अरिमाल ॥ ४ ॥

पर्यो निजरि पतिसाह की, आव-आव कहि आव।
जग वखत बानी जप्यौ, सो सच देहु सुनाव ॥ ५ ॥

साह हूंत कहि रायसल, समै-समै की सार ।
समै चूकि बोले सु जे, गुनि-जन कहत गवार ॥ ६ ॥
सेज-समै प्रिय स्वाल जो, भट जग वाल सुभाखि ।
कवि पंडित नीति कहै, रंकारो प्रिय राखि ॥ ७ ॥
स्वाल व्यग्य सुनि रायसल, समुज्यो चित पतिसाह ।
दिलीयपति स्वमुख दखिय, वाह रायसल वाह ॥ ८ ॥
मुयरी डंका मज्जि व्है, सो दिय पच जु साह ।
पचवार श्रीमुख पढिय, वाह रायसल वाह ॥ ९ ॥
मुनसव पंच हजार मिलि, पुनि गढ दृढ पच्चास ।
दरबारी जु खिताव दिय, हसती पटो हुलास ॥ १० ॥
पटो लेय लाम्या-पती, मंत्री-सहित महीप ।
कूरम अमल जमान कज, जो आयो रन जीप ॥ ११ ॥
पिखिय राजा खंडपुर, नीति-हीन निर्वान ।
बधु विरोधे अदिन बनि, सेखां सुदिन सु जान ॥ १२ ॥
रायसाल ससुराल के, श्री जी करन सनांन ।
गये छोरि गढ गग को, इन लिय राज सुआन ॥ १३ ॥
पती भयो नृप खंडपुर, उदियापुर लै आप ।
रैवासै पुनि राज करि, थिर भय थाप-उथाप ॥ १४ ॥
सोला सै पंच साल मैं, इम खंडपुर अपनाय ।
निरवानन को राज निज, अरु फिरि दिल्लिय आय ॥ १५ ॥

देवीदास की प्रतिज्ञा-पूर्ति

सं० १६०५ में जब रायसल खंडेला का पूर्ण राजा बन गया तथा अकबर का प्रिय पात्र बना तब देवीदास ने सोचा कि अब वह समय आ गया है, जब लूणकरण को बता दिया जाना चाहिए कि व्यक्ति बड़ा है, राज्य तथा जागीर तो गौण हैं। यदि व्यक्ति वीर है तो भुजबल से अपनी जागीर बना सकता है। अत उसने अमरशहर के गावों पर आक्रमण किया तो यह स्वाभाविक ही था कि उधर से लूणकरण लडने के लिये आता। जब दोनों भाइयों की सेनाएँ आमने-सामने आकर डट गई तब देवीदास हाथ जोड कर लूणकरण के सामने जा खडा हुआ

और बोला–'अन्नदाता ! मैंने कहा था कि जागीर से भी व्यक्ति बडा है और मैंने यह कर दिखाया है। एक छोटे से ग्राम "लाम्बिया" के अधिपति श्री रायसल अब रायसल दरबारी तथा पचहजारी मनसबदार है।

लूणकरण ने देवीदास की नीति से गर्वित होकर उसकी अत्यन्त प्रशंसा की और दोनो भाई गले मिले। 'रायसल-जस-सरोज' इस घटना के प्रति भी मुखर है–

अमरसहर् का गाम अब, देईदास दबाय।
लूणकर्ण उत ते लरन, आयो चित्त उपाय ॥ १ ॥
जदि मग रोक्यो जावतो, गरट अरि–दल गाह।
जाय हत्थ–जुग जोरि कै, सो बोल्यो भडसाह ॥ २ ॥
जग नर वडो कि जीवका, राव कहो सत राह।
राज मुनि रखो रायसल, नरा पाण नर नाह ॥ ३ ॥
सब विधि राव जु साह ने, समुख अनत सराय।
जोधारा सो जीवका, जोधारा विन जाय ॥ ४ ॥
तन–मन दोऊ बधु मिलि, अधिक हेत उर आनि।
स्वै–स्वै थानन सचरै, मोद उभै दिस मानि ॥ ५ ॥
इत भटनेर सु आनि कै, सूबा–पति सरसाय।
बदिलि वली वनि वैठि कै, अमल सु दिली उठाय ॥ ६ ॥
पती खडपुर को प्रवल, दे फरमान दराज।
वेग सु दिली बुलाय कै, करन जग के काज ॥ ७ ॥
पाय हुकम पतिसाह को, ले भतीज निज लार।
लूणकरण सुत लाडिलो, नाम मनोर निहार ॥ ८ ॥
जग दिखावन काज जे, चढिग जुद्व चित–चाव।
धरनी हय–पोरन धुकिय, तपि ज ासिधुन ताव ॥ ९ ॥

इसके पश्चात् ही दिल्ली से बुलावा आने पर रायसल को भटनेर के युद्ध में भाग लेना पड़ा। इस युद्ध में इसने बड़े भाई लूणकरण के पुत्र मनोहर को भी साथ लिया था। मनोहरदास फारसी का अच्छा विद्वान् था तथा इसी ने मनोहरपुर बसाया था।[1]

भटनेर के युद्ध में भी इसकी वीरता से प्रसन्न होकर अकबर ने इसे खण्डेला तथा उससे उत्तर में उदयपुर दे दिया। ये दोनों नगर पहिले निरवाणों के अधिकार में थे।[2] इसके अतिरिक्त अकबर ने इसे राजा की उपाधि तथा 'रणजीत' नामक नगारा भेट किया और पूरा सेनापति बनाया। 'रायसल-जस-सरोज' के अनुसार—

अकबर कूरम ने अपे, नोपति ओर निसान।
चित सुध गयद चढाय के, पूरन प्रीति प्रमान। १॥
दियो नगारो वादिसा, राजा ने रणजीत।
सेनापति किय रायसल, पूरन कीन सुप्रीत॥ २॥

अपनी अपूर्व निष्ठा, त्याग एवं सेवा के फलस्वरूप रायसल दरबारी अकबर का घनिष्ठ हो गया था। संवत् १६४२ में इसे कासली तथा नागोर भी मिला था—

छाया सरीर नहि छोडि संग, इम कीन वंदगी चित उमंग।
हित-सहित साह तव प्रसन्न होय, दृढ जीव एक अरु देह दोय।
जाते प्रसन्न व्है साह जानि, अरु दीन पटै नागौर आनि।
घर-सहित कासली जुगल धाम, अरु दीन राव-पद अडिग आम।
सोला जु सतक बेयाल साल, इक आय खबिर ता बिच उताल।

वि० सं० १६६२ में बादशाह अकबर की मृत्यु हुई[3] तो खुर्रम तथा जहांगीर में गद्दी प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा चली। जयपुर के राजा मानसिंह ने खुर्रम का पक्ष लिया था, तथा [illegible] राजा रायसल दरबारी ने जहांगीर का खुल कर पक्ष लिया था। जब जहांगीर राज्य-गद्दी पर बैठा तो उसने भी रायसल को पूरा आदर दिया उस तथा उस [illegible] विश्वास करके उसे उदयपुर के राणा[4] तथा बीकानेर के

---

१ राजपूताना का इतिहास-तीसरा भाग-पृ १६५
२ कर्नल जेम्स टॉड कृत-एनल्ज एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान-भाग ३-पृ १३८४
३ अकबर-नामा-भाग ३-पृ-८३८
४. वीर-विनोद- [illegible] २२

महाराजा दलपतसिंह[1] के विरुद्ध भी भेजा था। बाद में उसको दक्षिण में नियुक्त किया गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गई।[2] जहांगीर ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।[3]

रायसल की मृत्यु हो जाने पर उसका पुत्र गिरधर राज्यगद्दी पर बैठा। इसने दक्षिण के युद्धों में कई बार भाग लिया। इसकी वीरता पर प्रसन्न होकर बादशाह ने वि० संवत् १६७६ में इसका मनसब २७०० जात और १५०० सवार कर दिया था। यह भी दक्षिण में वि० संवत् १६८८ में वीर-गति को प्राप्त हुआ था।[4]

उपर्युक्त तथ्यों से यह तो स्पष्ट हो गया कि राजा रायसल दरबारी तथा देवीदास का जीवन एक-समान है। एक छोटे से गांव लाम्या' से उठा कर इतनी ऊंची जगह पर पहुँचा देने के पीछे देवीदास का ही मस्तिष्क काम कर रहा था, अतः इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि देवीदास प्रबल वीर, सुयोग्य सेनापति, कुशल मन्त्री तथा चतुर नीतिज्ञ था।

देवीदास का जन्म-समय

प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता देवीदास के जन्म के संबंध में इतिहासकार मौन हैं। 'शेखावाटी का इतिहास' तथा 'रायसल-जस-सरोज' में भी इसके बारे में कुछ भी जानकारी नहीं दी गई है। 'क्षत्रियों का इतिहास' में एक स्थान[5] पर बताया है कि रायसल का दीवान उसके रहते ही मरा तथा उसको चिता तक वह साथ गया।' इससे यह ध्वनि निकलती है कि देवीदास की मृत्यु रायसल की मृत्यु से पूर्व हुई।

रायसल दरबारी अकबर का विशेष कृपापात्र था तथा अकबर की मृत्यु के पश्चात् यह जहांगीर का भी विश्वासपात्र बना रहा तथा उसने उसे विश्वस्त समझ कर ही हिन्दू-राजा दलपतसिंह के विरुद्ध युद्ध करने भेजा। जहांगीर सं० १६६२

---

१ टॉड कृत-राजस्थान-जिल्द ३-पृ १३८३

२ मआसिरुल उमरा-प्रथम भाग-पृ ३५२-३५३

३ तुजुक जहांगीरी-पृ ३२

४ राजपूताना का इतिहास-तीसरा भाग-पृ १९२-१९३

५ क्षत्रियों का इतिहास-रामदास-पृ ३८

में राज्यगद्दी पर बैठा। अकबर की मृत्यु भी सवत् १६६२ में ही हुई थी[1], अत यह तो सिद्ध है कि रायमल दरबारी सवत् १६६२ तक जीवित था। 'मआसीरूल-ऊमरा'[2] के अनुसार जहांगीर ने रायसल की वीरता से प्रसन्न होकर इसे दक्षिण में बुरहानपुर तथा इलीचपुर विजय करने के लिए भेजा। इलीचपुर का युद्ध वि० सवत् १६७१ में समाप्त हुआ था तथा इनकी मृत्यु भी इसी युद्ध मे दक्षिण में ही हुई थी।[3] अत यह स्पष्ट है कि रायसल की मृत्यु वि० सवत् १६७१ के आस-पास हुई थी।

'मुहणोत नैणसी री ख्यात'[4] से भी यह स्पष्ट होता है कि रायसल के बारह पुत्र थे—राजा गिरधरदास, लाड खा, भोजराज, परशुराम, तिरमण, ताज खा, हरराम, बिहारीदास, बाबूराम, दयालदास, वीरभाण तथा कुशलसिंह। इनमें से सबसे बडा पुत्र गिरधरदास सवत् १६८० में नौ साल की राज्यगद्दी भोगने के बाद बुरहानपुर में जब सैयदों से खाने जगी हुई तब सैयदों के हाथों मारा गया। गिरधरदास सवत १६८० में मरा तब उसे गद्दी पर बैठे नौ साल हो गये थे। गिरधर अपने पिता रायसल की मृत्यु पर ही गद्दी पर बैठा था[5], अत. यह स्पष्ट है कि रायसल की मृत्यु स० १६७१ में हुई।

ऊपर कहे अनुसार देवीदास की मृत्यु रायसल की मृत्यु से पूर्व हुई थी और रायसल उसकी चिता तक साथ गया था। श्रीसौभाग्यसिंह शेखावत के अनुसार देवीदास के वशज मदनलाल शाह भी रायसल के दीवान रहे थे। यह तभी संभव था, जब देवीदास की मृत्यु हुई हो, अत. यह तो निर्विवाद सत्य है कि देवीदास की मृत्यु वि० सवत् १६७१ से पूर्व ही हो गई थी।

देवीदास की मृत्यु दक्षिण में न होकर शेखावाटी में ही हुई है तो यह स्पष्ट है कि रायसल के दक्षिण के युद्धों में प्रस्थान करने से पूर्व ही देवीदास की मृत्यु हुई

---

१. विंसेट ए स्मिथ कृत-अकबर दी ग्रेट मुगल—पृ. ३५६
२ मआसी रूल ऊमरा-प्रथम भाग—पृ ३५२-३५३
३. जहागीर नामा-अनु० व्रज.रत्नदास—पृ ३६१
४ मुहणोत नैणसी री ख्यात-सपा० गौ० ही० ओझा—पृ ३५
५ राजपूताने का इतिहास-तृतीय भाग—पृ १६२

होगी। रायमल कब एलिचपुर (दक्षिण) विजय करने के लिये रवाना हुआ, यह तो इतिहास में स्पष्ट नहीं है, परन्तु अब्दुल कादीर बदायूनीं-कृत 'मुतखावउत-वारीख'[1] के अनुसार जब जहांगीर ने दक्षिण की विजय में व्यवधान होते देखा, तो उसने राजा मानसिंह को संवत् १६६४ में बंगाल से हटा कर दक्षिण की ओर भेजा। दक्षिण मे पहुंच, उसने बुरहानपुर तथा एलिचपुर जीत कर मुगल-साम्राज्य मे मिलाये। बाद में एलिचपुर में ही वह बीमार होकर संवत् १६७१ आसाढ शुक्ला १० को मृत्यु को प्राप्त हुआ।

रायसल दरबारी भी लगभग इसी समय मे दक्षिण की ओर-बढा होगा। अकबर की मृत्यु संवत् १६६२ में हुई, तब देवीदास जीवित थे। रायमल दक्षिण-विजय करने हेतु संवत् १६६४-६५ मे गये, इसमे पूर्व देवीदास की मृत्यु हो गई थी। अत यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि देवीदास की मृत्यु संवत् १६६२ से संवत् १६६४-६५ के बीच में ही किसी समय हुई।

देवीदास रायसल से पूर्व उसके बडे भाई लूणकरण के दरबार में दीवान थे। राव सूरजसिंह की मृत्यु के बाद लूणकरण गद्दी पर बैठे। लूणकरण संवत १६०५ में गद्दी पर बैठे थे।[2] उस समय देवीदास दीवान थे, अत यह स्पष्ट है कि वे प्रौढ तथा लूणकरण से बडे होंगे।

कुछ दिनो पूर्व कवि के वंशज गोविन्ददास खण्डेलवाल ने (जो कि अपने आपको ग्रन्थकार देवीदास की पीढियों में से बताते थे) जानकारी देते हुए कहा था कि उनकी बहियों के अनुसार देवीदास की मृत्यु संवत् १६३४ मे ८६ वर्ष की उम्र मे हुई थी तथा रेवासा ग्राम मे उनकी छतरी भी है।

हम ऊपर यह स्पष्ट कर चुके हैं कि देवीदास की मृत्यु संवत् १६६२ से संवत् १६६४ के बीच हुई, गोविन्ददासजी के अनुसार भी मृत्यु-संवत् १६६४ है परन्तु उनके कहे अनुसार यदि मृत्यु के समय उनकी अवस्था ८६ वर्ष की थी तो

---

१ अब्दुल कादीर बदायूनी-मुतखावउतवारीख-जिल्द २-पृ. ३७५

२. पडव नभ दरसन पहुमि, सूजो सुरग सिधाय।
नाहि दिग्घ बैठो तखत, अरु लूणकरन आय॥
—रायसल-जस-सरोज

उनका जन्म विक्रमी संवत् १५७८ में होना चाहिए, और लूणकरण के राज्यगद्दी पर बैठने के समय इनकी उम्र २७ वर्ष होनी चाहिए जो कि उचित भी कही जा सकती है। रेवासा ग्राम म ही रायसल का शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें देवीदास पर कुछ अक्षर हैं, पर अस्पष्ट हैं। यह शिलालेख वि० स० १६६१ का है।

जो भी सामग्री उपलब्ध है, उसके अनुसार देवीदास का जन्म-संवत् १५७८ तथा मृत्यु-सवत् १६६२ से सवत् १६६४ के बीच में ही कहा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त देवीदास के जीवन के बारे में अधिक बताने मे इतिहास मौन है, परन्तु इतने से ही स्पष्ट हो जाता है कि देवीदास खण्डेलवाल शाह होते हुए भी वीर, नीति-निपुण, दूरदर्शी, चतुर एव कुशल नीतिज्ञ थे।

ग्रन्थ-रचना-काल

देवीदास का केवल मात्र यही ग्रथ उपलब्ध होता है, जिसमें नीति के एक-सौ बाईस कवित्त हैं। हो सकता है, राज्य-कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण किसी अन्य ग्रथ की रचना करने के लिए समय न निकाल सके हों, परन्तु जो भी उपलब्ध है वही उनकी कीर्ति को उज्ज्वल करने के लिये पर्याप्त है।

लूणकरण के सम्पर्क मे आने के बाद ही उन्होंने समय-समय पर कवित्तों की रचना की थी। लूणकरण सवत् १६०५ मे राज्यगद्दी पर बैठे, अतः इन कवित्तों का रचनाकाल लगभग सवत् १६०५ और उसके बाद का ही माना जा सकता है।

स्तुत सग्रह

यह स्पष्ट नहीं है कि जिस क्रम में कवित्त प्रस्तुत पुस्तक में दिये हैं, उसी क्रम में कवि ने लिखे हों और चूंकि प्रत्येक कवित्त अपने आप में ही पूर्ण है, उसका एक दूसरे से पूर्वापर-सबध भी नहीं, अत यह उचित भी प्रतीत नहीं होता कि इस क्रम से ही कवित्त रचे हों। देवीदास ने समय-समय पर, जब भी जैसा प्रसग उपस्थित हुआ, उस परिस्थिति या प्रसग को ध्यान में रख कर कवित्त की रचना कर दी। बाद मे उन्होंने या उनके किसी शुभेच्छुक ने इनके कवित्तों को एक जगह लिख दिया, उस समय जो भी क्रम रहा वही क्रम आगे भी चलता रहा।

'राजनीति-कवित्त' की जितनी भी हस्तलिखित प्रतिया मुझे देखने को मिलीं उन सब में क्रम लगभग एक सा ही दिखाई दिया, एक दो कवित्त इसके अपवाद-स्वरूप लिये जा सकते हैं।

ग्रथ के दो नामकरण मिलते हैं। कुछ प्रतियों पर "राजनीति-कवित्त" लिखा मिलता है तो कुछ प्रतियो पर 'देवीदास रा कवित्त' भी लिखा मिलता है। जोधपुर मे प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान मे इस ग्रन्थ की निम्न आठ प्रतिया उपलब्ध हैं और उन सब में 'राजनीति रा कवित्त' लिखा है।

प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान मे उपलब्ध प्रतिया—

क्रम सख्या	प्रति संख्या	संवत्	विवरण
१	१२३७१ (८)	१८३५	शाके १७०० कातिक कृष्ण २ गुरुवार, अहिपुर नगरे ब्राह्मण गौड़ भीषनदास।
२	४२१६ (७)	१८६०	वर्षे चैत्रसुदी १५, भौमवारे।
३	१४३१८	१६०६	मिगसर सुदी ८ वार मगल वैश्य शिवलाल मलूकचन्द।
४	१३५१५ (१)	१६६०	काती वद १४, सेवग मोतीराम भगवानदास सोजत मध्ये (इस प्रति मे पहले १० पद नही है)
५	११३६	—	—
६	१६०४३	—	–प्रति, सुवाच्य एव स्पष्ट अक्षरो मे लिखी है।
७	१२३७६ (५)	—	–प्रति सुवाच्य एवं पठनीय है।
८	१३७७०	—	–प्रति मे सिर्फ १६ पद ही चुने हुए लिखे हुए है।

इसके अतिरिक्त खोज करने पर शोध-संस्थान चौपासनी, जोधपुर में भी पांच प्रतिया देखने को मिलीं, जिनका विवरण निम्न प्रकार से है—

क्रम-संख्या	प्रति-सख्या	संवत	विवरण
१	३४३५	१९१०	रा आसोज वदी ३।
२	४१०६	१८७०	अमरचद ग्राम केरु मध्ये वि० स० १८७० मध्ये (परन्तु यह सवत कृति पर नही होकर 'रैपर' पर ही लिखा है।
३	६८	—	मात्र ४० पद ही सगृहीत है।
४	१६३२	१९०९	साध सरूपदास सवत १९०९ जेठ वद १० (परन्तु इसमे मात्र १० पद ही उपलब्ध हैं)
५	२७३८ (४)	—	मात्र १७ पद ही सगृहीत है।

ऊपर बताई तेरह प्रतियों में सभी पर 'राजनीति रा कवित्त' ही लिखा हुआ मिलता है, कुछ प्रतियों में देवीदास-कृत राजनीति-कवित्त भी लिखा मिलता है।

इसके अतिरिक्त 'नागरी प्रचारिणी सभा' के याज्ञिक सग्रह में जो प्रति प्राप्त हुई है, उस पर भी "राजनीति के कवित्त" ही लिखा हुआ है, परन्तु इस प्रति का प्रथम तथा अतिम भाग लुप्त है, इसलिये निश्चयपूर्वक यह कहना कठिन है कि रचयिता ने इसका क्या नाम दिया था? प्रत्येक पत्र के हासिये पर ★ (तारे) का चिन्ह अंकित है, तथा इसके पूर्व श्री लिखा है

श्री ★
नी
१९

ऐसा प्रतीत होता है कि श्री 'मागल्यसूचक' है, और "नी०" नीति के कवित्त का सक्षिप्त रूप है, तथा इसके बाद में पृष्ठ-सख्या अकित है, इस प्रकार से सभवत "नीति के कवित्त" भी नाम हो सकता है। परन्तु एक दो को छोड बाकी सभी प्रतियों पर 'राजनीति रा कवित्त' या 'राजनीत-कवित्त' लिखा मिलता है, इससे यह सिद्ध है कि रचयिता ने इसका नाम राजनीति रा कवित्त' ही रखा था।

---

१ नागरी प्रचारिणी सभा-याज्ञिक-सग्रह-काशी-प्रति-सख्या–५५२।१२

नागरी प्रचारिणी में जो प्रति है, उसमे कवित्तो की संख्या ११२ है, इसके अतिरिक्त एक प्रति मे यह सख्या १२१ भी मिली है।[1] परन्तु अन्य सभी प्रतियों में जो कि सपूर्ण हैं कवित्तों की सख्या १२२ ही मिलती है। नागरी प्रचारिणी मे रखी प्रति का अंतिम पत्र लुप्त है। हो सकता है, उस अतिम पत्र पर १२२ वा कवित्त हो। १२२ से अधिक कवित्त किसी भी प्रति में नहीं मिले और अधिकांशत प्रतियों में कवित्तों की सख्या १२२ ही मिली, इससे यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि देवीदास-रचित इस कृति मे १२२ पद ही प्रामाणिक हैं।

चाहे जो भी हो, इसमे सन्देह नहीं कि नीति-काव्यों में यह सग्रह रत्नतुल्य कहा जा सकता है।

ग्रन्थ की विशेषता

'राजनीति रा कवित्त' अपने-आप मे सर्वाङ्गपूर्ण है। इसमे तत्कालीन नीति के विविध चत्र उभर कर सामने आये हैं। देवीदास न सन्त थे न मुनि, वे एक राव के मत्री थे। यही कारण है कि इनका काव्य ऐहिकता से प्रपूर्ण है। वह निवृत्ति-मार्ग का उपदेशक नहीं, अपितु प्रवृत्ति-मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। जीवन की छोटी से छोटी घटना को, सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन स्थिति को कवि ने अत्यन्त कुशलता से उजागर किया है। राजनीति और राज्यवर्गीय लोगो के कार्य क्या हों, इसका कितना सुन्दर चित्रण निम्न एक कवित्त मे ही हुआ है, देखिए—

छोटे छोटे गुलन को सूरन की वार कर
पातरे से पोधा पानी पोख कर पारवो।
फूली फूल वा दिन के फूल मोहि लेवै खरे
घने दरख्त एक ठौर तें उखारवो।
नैंने परे पायन तें टेक दे-दे ऊचे करै
ऊँचे बढ गए ते जहर काट डारवो।
राजन कु मालिन को दिन प्रत देवीदास
च्यार घरी रात रहैं इतनो विचारवो।

राजा के गुण तथा प्रजा के पति राजा के कर्तव्यों का कितना सुन्दर वर्णन ऊपर के कवित्त में हुआ है। वस्तुत वही तो सफल राजनीतिज्ञ है जो असमानताओं एवं असगतियों के वीच में से उभरता है, विपरीत परिस्थितियों मे भी मन के

---

१ प्रति सख्या १६०४३

सन्तुलन को बराबर रखता है। कवि ने इसी भाव को भगवान् शकर के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहा है—

मूसै पर साप राखै साप पर मोर राखै
वैहल पर सिघ राखै वाकै कहा भीत है।
पूतन को भूत राखै भूत को बभूत राखै
छ मुख को गजमुख यहै वडी रीत है।
काम पर वाम राखै विस पर अमृत राखै
आग पर पानी राखै सोई जुग जीत है।
देवीदास देखो ग्यानी सकर की सावधानी
सबै वात लायक पै राखै राजनीत है।

कवि देवीदास में यह एक विशेषता है कि वह एक ही कवित्त में वहुत अधिक नीतियुक्त बातें ठूस लेता है, परन्तु फिर भी जो कुछ भी कहता है, पूर्ण सावधानी से, परख कर, अनुभव की आग में तपा कर। निम्न कवित्त इस कथन का साक्षी है—

कीरत को मूल एक रैन-दिन दान देवो
धरम को मूल एक साच पहिचानबो।
वढिबे को मूल एक ऊचो मन राखिवो है
जानवे को मूल एक भली वात मानिबो।
व्याध वहु भोजन उपाध मूल हासी देवी
दारद को मूल एक आलस बखानबो।
हारवै को मूल एक आतुरी है रिन माझ
चातुरी को मूल एक वात कहि जानबो॥

इसी प्रकार—

सूवत तें जस जाय गरब तें लछि जाय
कुनार तें कुल जाय जोग जाय सग तें।
भूख तें मृजाद जाय लडायें तें पूत जाय
स च तें सरीर जाय सीलता कुसग तें।
कपट तें धर्म जाय, लोभ तें वडाई जाय
मागवै तें मान जाय पाप जाय गग तें।

नीत विन राज जाय क्रोध तें तपस्या जाय
देवीदास रजपूती जाय मुस्यै जग तें ।।

धन के सबध में देवीदास की नीति स्पष्ट है। कवि का स्पष्ट मत है, कि वास्तविक धन वही कहा जा सकता है, जो स्वकल्याणार्थ होने के साथ-साथ पर-कल्याणार्थ भी हो दौलत पर मक्खियों की तरह भिनभिनाना, या उसे दबोच कर रखना उचित कार्य नहीं। उचित तो यह है, कि ऐसा धन दीन-दुखियो की सहायता करे, उनके बिगडे कार्यों को सुगम कर दे। देवीदास ने ऐसी ही बात अपने एक कवित्त में कही है -

दोलत मिठाई तासो लपटे है लोग तातें
दोलत की माखी तिन कहा लौं उडावैगो ।
एती तोकु थोरी या को ठाकुर कहावै या तैं
वाटो है सबको बट सा सू तू हि पावेगो ।
माया यह कालवी की मिसरी को कुजा ताहि
वाट छान पीवगो सो भलेई कहावैगो ।
देवीदास या ही विन वाट खायो चाहै सा तो
दातन तुरावगो कै गाल ऊफरावैगो ।

अन्योक्ति-कथन में कवि सिद्धहस्त है। जो बात सीधे-सादे रूप म न कही जाय, उसे प्रतीक-माध्यम से व्यक्त कर दी जाय, यह कवि का स्वभाव रहा है। सुई और डोरे के माध्यम से कवि ने जो भले-बुरे मनुष्य की पहिचान स्पष्ट की है वह स्तुत्य है—

भले-बुरें मानस को पटतरो देवीदास
टरजी की सूई कहै अकेली यें दंत है ।
पैनो ओर अत्रर के गुन माहि छेद पारें
आप गुन-हीन तासो कहैं नेत-नेत है ।
अब सुनो दूजें ओर डोरे की भलाई वह
गैल तो चलाई पर गुन मो समेत है ।
ढिग-ढिग दूर-दूर जेई छेद पारै वह
तेई यह पूरि पूर ओर कर लेत हैं ।

देवीदास के कवित्तों के अध्ययन से हमें उस समय के समाज का, समाज की मन स्थिति और कार्य-कलाप का तथा उनके विचारों का दिग्दर्शन भी हो जाता है। उस समय का राज्य वर्ग कैसा था, साधारण जनता की स्थिति कैसी थी ? इन सबका चित्रण हमे देवीदास क कवित्तों में प्राप्त होता है।

नीचे मैं दो कवित्त दे रहा हूँ, जिसमें से एक में सफल चाकर के लक्षण तो दूसरे में फल मालिक के लक्षण बताये हे। मालिक और चाकर के गुण इस प्रकार से हैं—

विन कहै सब जांनै सासन सिर पै मानै
साहिब की भीर भान मन भाइयतु है।
सुख-दुख जी न श्रान थोरे ही रहे अघानै
धनी काज प्र न देत तेई गाइयतु है।
निडर स डर राखै डर मे निडर होइ
लाज सो लपेटे रहै छवि छाइयतु है।
घरी-घरी अरजी न होइ वरजी न करै
असे चाकर तो पूरे पुन्य पाइयतु है।

और अब श्रेष्ठ-स्वामी के लक्षण भी देवीदास के शब्दों में देखिए—

प्राण सम राखै ताको सुख अभिलाखै आछे
आछे वेन भाखै सदा वेई तो सराहियै।
चित हित पागे कहै काहू के न लागे पीर
परै भीर भाग ज्यों देवन उर दाहियै।
चार-वार तूठे तकसीर हू स रूठे दोस
लावत न झूठे दुख परै त निवाहियै।
कृत अति प्रीत औ प्रतीत एक रस अैसे
चाकर को देवीदास अैसे प्रभु चाहियै।

राजनीति में भी सत्य सर्वोपरि है, देवीदास की कुछ ऐसी ही मान्यता थी। उनके विचार से असत्य-भाषण मानव-पतन का प्रथम हेतु है। देखिये—असत्य भाषण की उन्होंने कितने कठोर शब्दों में निन्दा की है—

झूठ तें सकल नेम ध्रम पसु पुत्र हानि
झूठ तें ससार दुख सिंध ओलीयतु है।
झूठ ले कै सभा माझ झूठी साख भरे ताक
पित्रन को नरक द्वार खोलियतु है।
झूठ गाठ वाधि जहा जाई तहा न्याव झूठो
झूठे की सगत कीयें मार्‍यो डोलियतु है।
देवीदास कहै तीन ताप आपदा को सूल
पाप ही को मूल जहा झूठ वोलियतु है।

स्वर्ग और नरक देवीदास के शब्दों में कोई अलभ्य वस्तु नहीं, अपितु वे इसी पृथ्वी पर हैं। स्वस्थ-शरीर, स्वस्थ-मन और सज्जन-सग हो तो यह पृथ्वी ही उसके लिए स्वर्ग है, अन्यथा इसकी विपरीतता में यह पृथ्वी नरक के तुल्य वन जाती है। दोनों चित्र प्रस्तुत हैं—

पूरे कुल जनम निरोग हो सरीर घर
विभव-विलास सुरसरी-तीर धाम है।
साहसी हो पूत सुखदायक कुटुंव घर
पतिव्रता नारि यह पूरो मन काम है।
राम जू की भगत सकति दान देवे हू की
चाकर हुकमकारो जाको जस नाम है।
देवीदास एते गुन पाइयें जगत में तो
सूनमान मुकति को दूर तें प्रनाम है

और इसके विपरीत—

छोटे कुल जनम कुठोर वास देवीदास
रोगिल सरीर दिन दुख सो भरतु है।
दुखदाता पूत धूत कूरमा कलह-खान
करकसा नार नैंन देखत जरतु है।
पराधीन जीवन अजस लोक पूर रह्यो
मूरख कै हारे दोउ हरत परतु है।
अैसे को जनम देखै जग-माझ मेरे जान
जम के नरकवामी साहिवी करतु है।

ऐसा लगता है मानो भाषा पर देवीदास का जबरदस्त अधिकार है। वह ज्यो चाहे जिस रूप में चाहे, और जिस बात को कहना चाहे, धड़ल्ले से उसको कवि और नीतिकार कह देता है। न लाग लपेट है और न खींचतान—बात को कहने का प्रकार देवीदास के पास है। मनुष्य को किस प्रकार के लोगों से मित्रता रखनी चाहिए या किस प्रकार के लोगों से उसका व्यवहार ठीक हो, इसकी परख कवि ने एक ही कवित्त में दे दी है। मानव–पारखी देवीदास का कवित्त द्रष्टव्य है—

कृग्न सो मन के गरूरन सो मलिनि सो
पातकी सो तातकी सो मिल पै न कीजीयै।
वोल के चलचलें सो मीत के छलछले सो
वेद–पथ के हले सो कवहू न वीजीयै।
चोर सो, पर–वधू के रत, वरि मतवारे
हीन–जातनि सो तजि जो लो जग जीवीयै।
देवीदास देह धरै सुख चाहो आपको तो
इतने मनुष्यन सो सगत न कीजीयै।

देवीदास के कवित्तों की यह विशेषता रही है कि इसमें तत्कालीन समाज के सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व मिला है। सपूत पुत्र वही है जो ससार में नाम कमावे, अन्यथा पुत्र जनने की अपेक्षा माता का बांझ रहना ही ठीक है—

क तो जग जोर करि कै तो सुख भोग करि
कै तो गुण रूप कर नाम, ना कढाई है।
कै तो दान सील ह्वै कै जोरावर डील व्है कै
सूर सिर मोर ह्वै कै गीतनि गवाई है।
क तो जग पूज ह्वै कै तप तेज पुज व्है कै
इन मैं तै एक हू जस न उपजाई है।
जायै ऐसे पूतहि सपूती भई है तो देवो
दास कहै कहो वाझ कोन सी कहाई है।

यह नीति-कथन है कि जब धन मिलता है तो मद में मनुष्य फूल जाता है और जब धन के साथ यौवन का मेल हो जाता है तो फिर मनुष्य क्या-क्या अनर्थ नही कर डालता। कुछ इसी प्रकार का भाव कवि ने वदर के माध्यम से व्यक्त किया है—

पहिलै तो वादर व्है वाइ भरयो वावरो है
वीछी खायो वूढी वेस वुरो विकरार है।
मदरा कछुक पीयै विजया चढावै, वीज
वीसेक धतूरे ही के खायै वेसमार है।
ताहू मेक एच पाग्यो तातो डोल्यो भायो भायो
एनै पर भूत लाग्यो ग्रैसो कु प्रकार है।
देवीदास कहै ताको वैदन वुलावो कोउ
करो धो विचार वाको कौन उपचार है।

देवीदास उस समय जन्मे थे जब कूट-पदों का बोलबाला था। कबीर अपनी खजडी पर उलटवांसिया सुना चुके थे और सूर के कूटपद समाज में चर्चा के विषय हो चुके थे, फिर भला उनका असर देवीदास पर क्यों न पड़ता? उन्होंने भी अपने कुछ पदों में सफल कूटपदों का परिचय दिया है। ऐसा ही एक कवित्त देखिये—

दाव लै वकार पाच पाच गुनि चूके मति
छोड द चकार च्यार च्यारनि मे वसीय।
छोडे मत द्वै दकार छाडि दे दकार सात
तीननि मै हिल-मिल अति ही न गसीयै।
ह हा च्यार परिहर तीन ह हा मान लेत
भूल छ मकार माझ कवहू न रसीयै।
देवीदास कीजै द्वै उकार ले भकार तीन
एक ही नकार माझ सारो गुन नसीये।

कवियों और नीतिकारों ने स्त्रियो के सौन्दर्य की ओर पूरा ध्यान दिया है। काव्यों में पुरुष-सौन्दर्य का वर्णन उसके मुकावले में वहुत कम हुआ है, परन्तु देवीदास पुरुष का वास्तविक सौन्दर्य बताने में भी नही चूके। उनके शब्दों में—

पेट को निपट सुद्ध आखन लजीलो ओर
उर को गभीर होय महामीठो मुख को।
बांह को पगार पुनि पाय को अडिग होय
बोलन को साचो देवीदास सूधै रुख को।
मन को उदार, ढीलो हाथ को अकेलो एक
काछही को काठो है महा सुख दुख को।
पचकै पितामह नें अैसौ कै सिंगारयो तब
या तै कछु ओर हू सिंगार है पुरुष को।

तुलसी ने अपने पदों में तत्कालीन समाज का खुल कर वर्णन किया है। उस युग के देवीदास ने भी समाज की परिवर्तित स्थिति को कितने सुन्दर शब्दों में बाधा है, वह इतिहास के लिए लाभदायक एवं सहायक है-

तजै राजनीतै करै गाजत अनीतै ओर
भागत अनीतै घरनी तै जे सवाए है।
मागनै बुलावै नाहि मागवै बुलावै ओर
भाग न खुलावै खाई तेई मन भाए है।
रीझै न रिझावै मुरझाय मूह खीज उठै
जांनत न दाए देती जानत ए दाए हैं।
राजा राइ राने गुन नाने तो न मानै मागै
सब तै जमाने अब तै जमाने आए है।

विपत्ति में मानव के लिए धैर्य ही एक मात्र अवलम्ब है और शत्रुओं के बीच में मानव को रहना भी पड़ जाय तो ठीक उसी प्रकार रहे जिस प्रकार दांतों के बीच में जीभ रहती है। देवीदास की नीति इस बारे मे स्पष्ट है—

आपन अकेलो आसपास सब बैरी तब
दातन मे जीभ जैसै तैसी भात रहियै।
जानियै निकस-पैठ चलीयै नरम ह्वै कै
नेह करै तो पै वास नेह सो न नहियै।
अनमिले मिल्यो सो दिखाइए इते पर
सतावै तो देवीदास समै पाय सहियै।

दाव परै अैसो वोल एक वोलियै जुठौ सा
और पै दिवै यै जव ढेर करचो चहियै ।

नीतिकार और कवि होने के साथ साथ देवीदास एक भक्त भी हैं, उनकी नीति धर्म और सत्य पर आरूढ है । वह इस प्रकार की नीति का साक्षी नही कि जिसमें छल, कपट, धोखा और ठगी का बोलवाला हो । उसके वचन स्पष्ट हैं, उसका कार्य स्पष्ट है, उसकी वात स्पष्ट और दो टूक है । सफल राजनीति भी वही है जो सत्य को साथ लेकर चल रही हो जिसमे धर्म और ईश्वर का भी स्थान हो । प्रभु के लिए उनके शब्द कितने सारगर्भित और उज्जवल हैं—

जव–जव गाढ परी दासनि कु देवीदास
तव–तव ही महाय हर जू नै कीनो है ।
जैसे कछु नरहर देवजू निधान अैसो
कोन अवतारु अरु दया–रस भीनो है ।
मातानि के पेट तै स्वरूप धरै ओर ठोर
सु तो है उचित अैसो ओर को प्रवीनो है ।
प्रहलाद हेतु जान ता पर के बाधे आपु
पाथर के पेट मे तै अवतारु लीनो है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देवीदास एक सफल कवि ही नहीं, उत्तम कोटि का राजनीतिज्ञ भी था और राजनीतिज्ञ के साथ-साथ भक्त भी था । उसकी नीति धर्म और सत्य को छोड़ कर नहीं चली है, अपितु इन्हें साथ लेकर चली है । सैकड़ों वर्षों बाद महात्मा गांधी ने देवीदास की नीति को कार्यरूप में परिणित करते हुए व्यावहारिक पथ पर उतार, यह सिद्ध कर दिखाया कि राजनीति में भी सत्य और अहिंसा का समावेश सभव है और ईश्वर, सत्य, तथा नीति का पारस्परिक समन्वय एक सुखद एव सफल समन्वय माना जा सकता है ।

प्रभाव

कवि देवीदास पर्याप्तरूप मे मौलिक रहा है, तथापि निम्न अवतरणों से अनुमान होता है कि भर्तृहरि के नीति–शतक तथा अन्य सस्कृत–ग्रन्थों एव नीति-काव्यों का देवीदास ने अध्ययन किया है और उनका प्रभाव भी कवि पर पड़ा है । भर्तृहरि के नीति-शतक से कवि प्रभावित है । जैसे—

लोभश्चेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकै,
सत्य चेत्तपसा च किं शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ।
सौजन्य यदि किं निज स्वमहिमा यद्यस्ति किं मडनै,
सद्विद्या यदि किं धनै रपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥[1]

देवीदास के निम्न कवित्त मे सस्कृत के इस पद की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है—

लोभ सो न ओगुण पिसुनता सो पातक न
साच सो न तप नाही ईरषा सो दहनो ।
सुचि मो न तीरथ सुजनता मो सेवक न
चाह सो न रोग तीन लोक माहि रहनो ।
धरम सो न मित न दुरत जीव-घातक सो
काम सो प्रवल नाहि दतव सो लहनो ।
चिंता सो न साल देवीदास तीन लोक कहै
सतोष सो सुख नाहि कीरत सो गहनो ।[2]

देवीदास इतना होते हुए भी मौलिक रहा है । उसके भर्तृहरि के श्लोक की आठ बातों में से लोभ, पिशुनता, सत्य, शुचि-मन, सौजन्य और यश—इन छ बातों को ही ग्रहण नहीं किया, अपितु कवित्त में ईर्ष्या, चाह, धर्म, जीवघात, काम, चिन्ता और सन्तोष को अपनी ओर से भी जोड़ दिया है । इस परिवर्द्धन के कारण उसकी मौलिकता बहुत कुछ अक्षुण्ण रही है ।

इसी प्रकार एक और सस्कृत-पद और उससे समानता रखता हुआ देवीदास का पद देखिये—

सानन्द सदन सुताश्च सुधिय कान्ता मनोहारिणी,
सन्मित्र सुधन स्वयोषिति रति सेवारता सेवका ।
आतिथ्य गृहपूजन प्रतिदिन मिष्टान्नपान गृहे,
साधो सग उपासनाश्च सतत धन्यो गृहस्थाश्रम ।

---

१ शतकत्रयम्–पृ. २५।४४

२. राजनीति रा कवित्त–सख्या-८८

अब देवीदास को देखिये—

पूरे कुल जनम निरोग हो सरीर घर
विभव विलास सुरसुरी तीर धाम है।
साहसी हो पूत सुखदायक कुटुंब घर
पतिव्रता नारि यह पूरो मन काम है।
राम जू की भगन सकति दान देवे हू की
चाकर हुकमकारी जाको जस नाम है।
देवीदास एते गुन पाइयै जगत मै तो
सूनसान मुकति को दूर तें प्रनाम है॥

वस्तुत. देवीदास का अध्ययन गहन था और उसने अपने से पूर्व नीतिकारों को पढ लिया था। यह स्वाभाविक ही था कि उसके विचारों पर दूसरों का प्रभाव पडे परन्तु देवीदास ने वह ऋण ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं किया, अपितु उसमे सशोधन कर या परिवर्द्धन कर उसे और अधिक सारग्राही एव सरस बना दिया है।

ऊपर के पद में जहा गृहस्थाश्रम की विशेषताओं को स्पष्ट किया है, वहा 'सुरसुरी तीर धाम', राम जू की भगत, सकति दान देवे हू की, आदि बाते जोड कर कवित्त को अधिक यथार्थ और प्रभावकारी बना दिया है।

वस्तुतः देवीदास सारग्राही नीतिकार एव कवि थे। उन्होंने जहा भी जो उत्तम बात देखी, उसे स्वीकार करने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई और साथ ही अपने अनुभव का योग देकर उसे अधिक रमणीय अधिक सारग्राही एव अधिक यथार्थ बना दिया, यह कवि की विशेषता ही कही जायगी।

भाषा-शैली

'राजनीति रा कवित्त' की भाषा व्रज-मिश्रित डिंगल है और उसमें डिंगल की अपेक्षा व्रजभाषा का प्रभाव ज्यादा है। मारवाडी होते हुए भी देवीदास ने शुद्ध डिंगल न अपना कर अपने काव्य के लिए व्रजभाषा का प्रयोग किया। सभवत. इसका कारण परिष्कृत पिंगल भाषा का अध्ययन हो। काव्य में शेखावाटी क्रियाओं का पुट भी लक्षित होता है। विदेशी भाषाओ मे अरबी,फारसी और तुर्की शब्दों का प्रयोग करने में भी कवि नहीं हिचकिचाया है। भाषा के क्षेत्र में देवीदास पूर्णत सहिष्णु रहे हैं। मुगलों का राज्य चतुर्दिक् होने के कारण मुस्लिम-सस्कृति मे

प्रभावित शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक ही था, और कवि ने इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया भी है। ऐसे शब्दों में दीवाणी, गुलन, साहिब, दोलत, दरिया, महल, अमल, आदि अनेक शब्द गिनाये जा सकते हैं।

कवि ने स्थान-स्थान पर मुहावरों, कहावतों और पद्यांशों का प्रयोग कर भावों को प्राञ्जल और भाषा को सरल तथा चमत्कृत रूप प्रदान किया है।

कूवा माक मैडको तिमगल सौ ह्वै रह्यो (२३)

जब कोई ओछा व्यक्ति उच्च पद पर पहुँच जाता है तो वह इतरा कर शिष्ट व्यक्तियो का भी अपमान करने से नहीं चूकता और अपने-आपको वह सर्वाधिक समर्थ और वली समझने लग जाता है, ऐसे ही व्यक्ति के लिये उपर्युक्त कहावत लागू की जाती है।

"कूकर क्या निवहैगो साग सारदूल को" (२४)

जब साधारण सा व्यक्ति अपनी झूठी प्रशसा करने लगता है और डींगें हाकता है, परन्तु समय पड़ने पर मुह छिपा देता है, ऐसे ही व्यक्ति के लिए राजस्थान में वडे-बूढ़े कहते सुने जाते है कि "कूकर क्या निवहैगो साग सारदूल को"

"मुंह मे कारे और ऊपर तै गौरें है"

"मुह में राम बगल मे छुरी" हिन्दी के मुहावरे से यह मिलता-जुलता है, जब कि कोई व्यक्ति दिल में कपट रख ऊपर से सहानुभूति जताता है तो इसी मुहावरे का आश्रय लिया जाता है।

"छेरी के गरै को थन दूध को न मूत को"

प्राय. देखा जाता है कि बकरी के गले के पास थन सा मास लटका रहता है, परन्तु उसकी उपयोगिता कुछ भी नही होती। इसी प्रकार निकम्मे और वेकार मनुष्य के लिए उपर्युक्त कहावत प्रयुक्त की जाती है।

कवि ने कहावती पद्यांशों का पर्याप्त प्रयोग किया है, इनसे जहां भाषा में लालित्य आया है, वहां भावों में वजन और गभीरता भी । यहा कुछ ऐसे ही उदाहरण दिये जा रहे हैं–

"एक कौडी को दिचार"	(५)
"विष पर अमृत राखै"	(६)
"उपाध मूल हासी"	(८)
"कुनार ते कुल जाय"	(६)
"दौलत की माखी"	(१५)
"सपत के साथी"	(३३)
"मीन ज्यो न्हाय"	(३७)
"झूठ गांठ वाधि"	(३६)
"मरु की मरीचका"	(५४)
"सुसा को सीग ल्यावैगो"	(५४)
"बालक ज्यो गेह सो मिटारि डार"	(६०)
"ठाढो गज दरवाजै कूकरी सभा के बीच"	(६२)
"बोल के चलचले"	(७५)
"सुख की कलई"	(८६)
"एक ही नकार माझ सारे गुन नसीयै"	(६५)
"हाथ को ढीलो"	(६५)
"बहिरै कै आगै बीन वजाडवो"	(११०)
"आधरै के आरसी	(११०)
"मुलमा को ठाकुर"	(११४)

अन्त मे कहना होगा कि अकृत्रिम भाषा, नीति-पूर्ण उक्तिया, सारगर्भित भाव, स्वाभाविक अलकार, सशक्त पद्याश और अवसरानुकूल शब्दावली के प्रयोग से समूचा ग्रथ उज्ज्वल और दीप्त है।

राजनीति रा कवित्त की प्रतियो का परिचय

'राजनीति रा कवित्त' के सम्पादन में तीन प्रतियों का प्रयोग हुआ है। जिनमें से 'क' प्रति मूल पाठ के रूप में स्वीकार की गई है तथा अन्य दो प्रतियों को क्रमश: 'ख' और 'ग' नामक सकेतों से सबोधित किया गया है। इन प्रतियो का परिचय इस प्रकार है–

प्रति 'क'

खोज करने पर 'राजनीतिरा कवित्त' की जितनी भी प्रतियां प्राप्त हुईं, यह प्रति उनमें से सर्वाधिक प्राचीन है। प्राचीन होने के साथ-साथ यह स्पष्ट एवं मौलिक भी रही है। प्रयत्न यह रहा है कि सर्वाधिक प्राचीन प्रति को मूल पाठ के रूप में स्वीकार किया जाय जिससे अधिकाधिक संबंधित लेखक के वातावरण में रह सके।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के केन्द्रीय जोधपुर संग्रहालय की प्रति क्रमांङ्क १२३७१ (८)। लिपिकर्ता ब्राह्मण गौड भीषणदास। लिपि स्थान- अहिपुर-नगर। लिपिकाल सवत् १८३५ शाके १७०० कार्तिक कृष्ण २, गुरुवार। यह प्रति सुवाच्य और सुन्दर लिपि मे एक परमकुशल लिपिकर्ता द्वारा लिखित है। हमारे यहा प्राचीन एव जीर्ण प्रतियो की प्रतिलिपि करने की सुदीर्घ परम्परा रही है और यह प्रति भी इसी परम्परा की द्योतक है। "यादृश पुस्तक दृष्टवा तादृशं लिखितं मया" लिखते हुए लिपिकर्ता ने कृति के मूल रूप को सुरक्षित रक्खा है। इस प्रकार यह प्रति सर्वथा विश्वसनीय है और इसको सम्पादन मे प्रमुख स्थान दिया गया है।

प्रति "ख"

यह प्रति भी राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के केन्द्रीय कार्यालय, जोधपुर के सौजन्य से ही प्राप्त हुई है। सवत् १८६० के चैत्रसुदी १५ सोमवार की लिखी यह प्रति भी सुवाच्य एव सुपठनीय है। प्रथम प्रति से इस प्रति का लिपिकाल बाद का है, इसलिये इसे 'ख' प्रति- के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रति क्रमाक ४२१६ (७) है।

प्रति "ग"

"ग" प्रति राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान केन्द्रीय कार्यालय- जोधपुर में सुरक्षित है। प्रति का क्रमांक १४३१८ है। यह प्रति लिपि-परम्परा को अक्षुण्ण रखती हुई संवत् १९०६ मिगसर सुदी ८ वार मंगल को लिखी गई थी। लिपिकार वैश्य शिवलाल मलूकचन्द थे। प्रति सुवाच्य एवं पठनीय है।

प्रस्तुत सम्पादन में उक्त प्रतियों के सम्पूर्ण पाठों और पाठान्तरों को विधि-वत अंकित किया गया है। अनेक सम्पादक अपनी इच्छानुसार प्राचीन पाठ में परिवर्तन करते हुए पाठान्तर अत्यल्प और नाममात्र के लिये ही देते हैं, परन्तु, इस प्रकार करने से प्राचीन पाठों का मूल रूप प्रकाशित नहीं हो पाता।

प्रस्तुत सम्पादन में हमने काव्य की उक्त दोनों प्रतियों के विभिन्न प्राचीन पाठों को विधिपूर्वक पूर्णरूपेण देते हुए मूल रूप को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है।

परिशिष्ट में जसुरांम कृत 'राजनीत-विस्तार' दे दिया गया है। इसमे आठ अगों पर विचार किया है- (१) राजअग (२ रानी अग ३) राजकुमार अग (४) वजीर अग (५) मुसाहब अग (६) रावत अग (७) रयत अग, और (८) कवि अग। प्रत्येक अग में कवि ने सबधित विषय पर सूक्ष्मता से विचार कर गभीर एव श्रेष्ठ राजनीति स्पष्ट की है।

कवि ने प्रारभ मे जगदम्बा को स्मरण कर सरस्वति से बुद्धि एव वाणी की याचना करता हुआ अपने आश्रयदाता का भी वर्णन किया है। जिस समय दिल्ली के सिंहासन पर औरगजेब का अधिकार था, उस समय सोलकी जगमाल का अमेपुर पर अधिकार था। इसकी प्रामाणिकता निम्नलिखित दोहों से स्पष्ट होती है।

जिन वखतन मे पातसाह राजत आलमगीर।
तिंनै वखत पैदा कियो गुन गनिजन गभीर॥
सोलकी जुगमाल सुत उदयासीघ अनेक।
गून दिनै तातै गुनी वाध्यो ग्रथ विसेप॥
समत नाम अठारसै वरस चउदन माहि।
आसो मुदी नामो सुकर गुन वरन्यौ चित चाहि॥
राज जदुकुल जीत सुत नगर अमेपुर नाम।
मही रेवारा जिन मही वरन-वरन विसराम॥

उपर्युक्त दोहों से स्पष्ट है कि यह लघुग्रंथ सवत् १८१४ आश्विन शुक्ला ६ शुक्रवार को सम्पूर्ण हुआ।

भाव, भाषा, छद, शैली एवं विषय-सम्पादन में कवि बेजोड़ है, इसमें सन्देह नहीं।

पाठको की सुविधा हेतु मूल पाठ के अन्त में छन्दों की अकारादि क्रम से अनुक्रमणिका, छद-सख्या विषयानुसार कवित्त, अलंकार मुहावरों की दृष्टि से अनुक्रमणिका, शब्दार्थ आदि दे दिए गये हैं।

संपादन का इतिहास और आभार प्रदर्शन

"राजनीति रा कवित्त" नीति-शास्त्र का एक अमूल्य रत्न है, आकार में छोटा होते हुए भी इसमें जितनी विविधता, विशदता और गहराई है, वह अपने आप में एक प्रमाण है। सर्व प्रथम मेरे सम्मान्य मित्र डॉ० नारायणसिंहजी भाटी ने इस ग्रंथ की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया और आग्रह किया कि यदि इसका सम्पादन हो जाय तो साहित्य के लिए यह महत्वपूर्ण देन होगी।

प्रति देखी तो श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत ने भी इसकी सराहना की और सुझाव दिया, कि यदि यह सम्पादन राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित हो, तो प्रामाणिक और महत्वपूर्ण कार्य बन सकेगा। डॉ० नारायणसिंहजी मुझे तत्कालीन उप सचालक महोदय गोपालनारायणजी बहुरा की सेवा में ले गये। श्रद्धेय बहुराजी और भाटीजी ने प्रतिष्ठान के सम्मान्य सचालक पद्मश्री मुनि-जिनविजयजी महाराज पुरातत्वाचार्य के समक्ष ग्रंथ की साहित्यिक एव नैतिक उपयोगिता प्रगट की। पूज्य चरण ने सहर्ष कहा कि मैं स्वयं चाहता था कि इस प्रकार के ग्रथ का सम्पादन हो, अत उन्होंने प्रति का अवलोकन कर मुझे सम्पादनार्थ आवश्यक निर्देश देते हुए कार्यसम्पन्न करने का आदेश दिया।

लगभग एक वर्ष के अनवरत श्रम के पश्चात् यह कार्य सम्पन्न कर, डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया मुझे नवागत निदेशक डॉ० फतहसिंहजी की सेवा में ले गये, उन्होंने सम्पादन देख कुछ अमूल्य सुझाव दिये, जिसके अनुसार ग्रथ की उपयोगिता और बढ सकती थी। उनके सुझावों के अनुसार ही ग्रंथ का परिशिष्ट और अनुक्रमणिका तैयार की।

इस ग्रथ के सम्पादन में मैंने राजस्थानी शोध संस्थान के सचालक डॉ० नारायणसिंहजी भाटी से बराबर सहायता प्राप्त की है, संस्थान के अन्य कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने मुझे जो सहयोग दिया है, वह स्तुत्य है । 'रायसल-जस-सरोज' की हस्तलिखित प्रति तथा रायसल दरबारी का दुर्लभ्य चित्र श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के सौजन्य से प्राप्त हुआ, अत सम्पादक उनका आभारी है। देवीसिंहजी मण्डावा एम० पी० ने भी देवीदास तथा रायसल के बारे में जो महत्वपूर्ण जानकारी दी, एतदर्थ उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। टिप्पणियों एवं शब्दार्थों को तैयार करने में डॉ० पुरुषोत्तम-लाल मेनारिया और लक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी का भी पूर्ण सहयोग रहा है, अत. लेखक उनके प्रति आभार प्रगट करता है ।

मुझे यह कार्य सम्पन्न करने का जो अवसर प्रदान किया, उसके लिये मैं डॉ० फतहसिंह, वर्तमान निदेशक का विनम्रता पूर्वक आभार मानता हूँ। साथ ही ज्ञात-अज्ञात जिन विद्वानों एव मित्रों का मुझे सहयोग मिला, उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ।

सी/जी २६ हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर.

(डॉ०) नारायणदत्त श्रीमाली

देवीदास कृत
राजनीति रा कवित्त

॥ श्री गणपत्यबिकाभ्या नम ॥

अथ देवीदास कृत राजनीत रा कवित लिख्यते ।[1]

नीत ही तै धरम धर्म[2] तै[3] सकल मिद्ध[4]
नीत ही[5] तै[6] आदर सभान[7] वीच[8] पाइयें[9] ।
नीत तै अनीत छूटै नीत ही तै सुख[10] लुटै[11]
नीत लीयें[12] बोलै[13] भलो[14] वकता[15] कहाइयै[16] ।
नीत ही तै राज राजै नीत ही तै पातिसाही[17]
नीत ही[18] को[19] नव[20] खंड माहि[21] जस गाइयै[22] ।
छोटन[23] को[24] वडे करै[25] वडे महावडे[26] करै[27]
र तै[28] सबही[29] को[30] राजनीत ही सुनाइयै[31] ॥ १ ॥

---

१ १ ख अथ राजनीत रा कवित्त लिखते, ग अथ देविदास कृत लिख्यतें । २ ख ग धरम । ३ ख ग तै । ४ ख सिद्धि, ग सिध । ५ ग हि । ६ ग ते । ७ ख समानि कव । ८ ग बीच । ९ ग. पाइमें । १० ग सुख । ११ ख लूटै, ग लुटै । १२ ख लीयें, ग हीं तै । १३ ख ग बोलै । १४ ग भलौ । १५ ख वकता, ग कता । १६ ख कहाईयें, ग कहाई । १७ ख. पातसाही, ग. पातसाई । १८ ग हीं । १९ ख कौ, ग कु । २० ख नऊ, ग. न । २१ ग माहें । २२ ग. गाईयें । २३ ख छोटेन । २४ ख कु, ग कौ । २५ ग करें । २६ ग म्हावड़ें । २७ ग करें । २८ ग तातें । २९ ग सवहि । ३० ख. कु । ३१ ख सुनाईयै, ग सुनाईयें ।

कोन[1] यह[2] देस[3] कोन[4] काल कोन[5] वैरी[6] मेरो[7]
कोन[8] मेरो[9] हितू[10] मोहि ढिग[11] तें[12] न टारवो[13]।
केती[14] आय पद केतो[15] खरच कितो[16] कवूल[17]
तें[18] ही उनमान मोहि[19] मुख[20] तें[21] निकारवो[22]।
सपति की[23] आवन को[24] कोन[25] मेरे[26] अवरोध
ताही[27] को[28] उपाव यह[29] दाव[30] उर धारवो[31]।
राजनीत राजन[32] को[33] दिन प्रत[34] देवीदास[35]
च्यार[36] घरी[37] रात रहै[38] इतनो[39] विचारवो[40] ॥ २ ॥

छोटे[41] छोटे[42] गुलन[43] को[44] सूरन[45] की[46] वार[47] करै[48]
पातरे[49] से[50] पोधा[51] पानी[52] पोख कर[53] पारवो[54]।
फूली[55] फूल[56] वा[57] दिन के[58] फूल[59] मोहि[60] लेवें[61] खरे[62]
घने[63] दरखत एक ठौर तें[64] उखारवो[65]।

---

२. १ ख कौंन, ग कुंन। २ ग. एही। ३ ग दंस। ४ ख. कौंन, ग. कु। ५ ख. कौंन, ग कुन। ६ ग वरी। ७ ग मेरौ। ८ ख. कौंन, ग कुन। ९ ख. मेरौ, ग मेरौ। १० ग. हेसु। ११ ख टिग, ग दिग। १२ ख तैं, ग. तें। १३ ख टारिवैं, ग. टारिवौं। १४ ग केति। १५ ग कें तों। १६ ख. कितौ, ग केतौ। १७ ख. कुवल, ग कवल। १८ ख तैंही, ग तैंहि। १९ ग. मौही। २० ग. सुख। २१ ख तैं, ग ते। २२ ख निकारिवैं, ग नीकासवौ। २३ ग कि। २४ ख कौं, ग कु। २५ ख. कौंन, ग कुन। २६ ग मेरें। २७ ग ताहि। २८ ग. कौ। २९ ग. यहि। ३० ग वाउ। ३१ ख धारिवैं, ग. धारवौं। ३२ ख. राजनि। ३३ ख. कु, ग कौ। ३४ ख ग प्रति। ३५ ग देविदास। ३६ ग चार। ३७ ग. घरि। ३८ ग रहें। ३९ ख. इतिनी, ग. ईतनो। ४० ख. विचारवैं, ग. वीचारीवौ।

३ ४१ ग छौटं। ४२ ग छौटं। ४३ ग गुलन। ४४ ख. कु, ग कु। ४५ ग सुरन। ४६ ग कि। ४७ ग वार। ४८ ग करें। ४९ ग पातरें। ५० ग सें। ५१ ख पौधा, ग पोंधा। ५२ ख पानी। ५३ ख करि, ग करी। ५४ ख पारिवैं, ग पारीवौं। ५५ ग फूली। ५६ ग फूल। ५७ ख वादनि, ग वारन। ५८ ग. कै। ५९ ग फुल। ६० ग मौहि। ६१ ख लैवे, ग लेंवें। ६२ ग करे। ६३ ग घनें। ६४ ग तें। ६५ ख. उपारिवैं, ग उखारीवौं।

नैनै[1] परे[2] पायन तै टेक[3] दे[4] दे उचे[5] करे[6]
उचे[7] वढ[8] गए ते[9] जरूर काट[10] डारबो[11] ।
राजन[12] कु[13] मालिन[14] को[15] दिन प्रत[16] देवीदास
च्यार[17] घरी रात[18] रहैं[19] इतनो[20] विचारबो[21] ॥ ३ ॥

आरभ त जाह[22] वहु लोगन[23] सो[24] वैर होय[25]
दूसरे[26] करत जाहि[27] धर्म[28] ठैहरै[29] नही[30] ।
करत करत जाहि[31] उपजें[32] कलेस बहु[33]
फल अैसो[34] लागै[35] वा[36] सो[37] पेट हू[38] भरै[39] नही[40] ।
अति छोटो[41] काम[42] जैसो[43] कुल मैं[44] न कीयो[45] होय[46]
अताही[47] दुरत[48] कै[49] जु पूरो हू[50] परै[51] नही[52] ।
देवीदास[53] जा मैं[54] लाभ खरच बराबर ही[55]
बुद्धवान[56] ह्वै[57] कै[58] अैसो[59] कारज करै[60] नही[61] ॥ ४ ॥

---

१ ग नीचें । २ ख. परे पाइति ते, ग. नए परें ताकु । ३ ग टेवक । ४ ग. दें । ५ ख ऊचे, ग उचें । ६ ख. करो, ग. करो । ७ ख. ऊचे, ग. उचै । ८ ख वढि. ग. बढ । ९ ग. सो । १० ख. काटि । ११ ख. डारिवे, ग. डारिवौं । १२ ख राजनि । १३ ख. कौं, ग को । १४ ख मालीन, ग. मालन । १५ ख. कु, ग कों । १६ ख ग प्रति । १७ ग. चार । १८ ग राति । १९ ख. रहै, ग रहें । २० ख. इतनौ, ग. ईतनो । २१ ख विचारवै, ग वीचारीवौं ।

४ २२ ख जाहि ग जहा । २३ ग लोंकन । २४ ख. ग. सु । २५ ख. ग. होत । २६ ख दूसरै, ग. दुसरो । २७ ग जहां । २८ ख. ग ध्रम । २९ ख ग ठहरै । ३० ग. नहि । ३१ ग जहा । ३२ ख. ग उपजै । ३३ ग. वहु । ३४ ख अैसौ, ग अेंसों । ३५ ग. लागें । ३६ ख. जा, ग ता । ३७ ख. सौं, ग सौ । ३८ ग कु । ३९ ग. भरें । ४० ग. नहिं । ४१ ग. छौटौ । ४२ ख काम । ४३ ख अैसौ, ग अेंसों । ४४ ग. मे । ४५ ग कियो । ४६ ख. होइ, ग होयें । ४७ ख. अति ही, ग. अति हि । ४८ ग. दुरत । ४९ ख कै जु, ग कें । ५० ख ऊ, ग. हु । ५१ ग परे । ५२ ग नहि । ५३ ग देविदास । ५४ ख मै, ग. मे । ५५ ग हें । ५६ ग वुधिवान । ५७ ग ह्वो । ५८ ग कें । ५९ ग एसो । ६० ग करें । ६१ ग नहिं ।

एकन[१] के बोल[२] लोल तोल हल के[३] स[४] मोल
एक कोडी[५] ही[६] के[७] अविचार न समेत[८] है[९] ।
कहै[१०] कीर[११] ही[१२] तो[१३] भले[१४] नर ही[१५] तो[१६] अति भले[१७]
अैसे तो[१८] मनुष्य[१९] मही[२०] कोन[२१] जाने[२२] केत है[२३] ।
साच[२४] सिर लीयें[२५] विरले[२६] सरल देवीदास
रैंन[२७] दिन आपनै[२८] विचार[२९] मैं[३०] सचेत[३१] है[३२] ।
याही[३३] तैं[३४] वडे[३५] पुरुष[३६] बोलै[३७] वडी[३८] वेर[३९] क्यो[४०] जु[४१]
बोल काजै[४२] बोलता[४३] पुरष[४४] ज्यान[४५] देत है[४६] ॥ ५ ॥

मूसै[४७] पर सांप राखैं[४८] साप[४९] पर मोर राखै[५०]
वैहल[५१] पर सिंघ[५२] राखै[५३] वाकैं[५४] कहा भीत[५५] है[५६] ।
पूतन[५७] कौं[५८] भूत[५९] राखैं[६०] भूत[६१] को[६२] बभूत[६३] राखै[६४]
छ मुख[६५] को[६६] गजमुख[६७] यहै[६८] वडी[६९] रीत है[७०] ।

---

५ १ ग. एक । २ ग. बोल । ३ ग. कैं । ४ ख. ग. रु । ५ ख. कोड, ग कोडि । ६ ग हि । ७ ग कें । ८ ग समेंत । ९ ग हें । १० ख कही, ग कहि । ११ ग किर । १२ ग. हि । १३ ख तौ, ग तो । १४ ख. भलै, ग भलें । १५ ग हि । १६ ख. तौ । १७ ख भलै । १८ ख तौ । १९ ग. मनुष । २० ग महि । २१ ख कौंन, ग. कुन । २२ ख. जानै, ग. जातें । २३ ग हें । २४ ग साच । २५ ख लियै, ग लिए । २६ ख विरलें । २७ ग रेंन । २८ ग अपनें । २९ ग. बीचार । ३० ग मे । ३१ ग. सचेंत । ३२ ग हें । ३३ ग. याहि । ३४ ग तें । ३५ ग वडे । ३६ ग. पुरष । ३७-ग बोलें । ३८ ग बडि । ३९ ग. बेर । ४० ख. क्यौं, ग कु । ४१ ग. जु । ४२ ग काजें । ४३ ग. बोता । ४४ ख. पुरुष । ४५ ख जान, ग जान । ४६ ग. हें ।

६ ४७ ख. मूसे, ग मुसे । ४८ ग राखें । ४९ ग. साप । ५० ग राखें । ५१ ख ग. बैल । ५२ ख. स्यघ, ग. सीघ । ५३ ग राखें । ५४ ग वाके । ५५ ग मित । ५६ ग. हे । ५७ ग पुतन । ५८ ख ग कु । ५९ ग भुत । ६० ग राखें । ६१ ग भुत । ६२ ख कु, ग कौ । ६३ ख. विभूत, ग. बीभूत । ६४ ग राखें । ६५ ग. मुख । ६६ ख कु, ग को । ६७ ग गजमुख । ६८ ग. यहे । ६९ ग वडि । ७० ग. हे ।

काम पर वाम[1] राखै[2] विस[3] पर अमृत[4] राखै[5]
आग पर पांनी राखै[6] सोइ[7] जुग[8] जीत है[9] ।
देवीदास देखो[10] ग्यानी सकर की[11] सावधानी
सबै[12] बात[13] लायक[14] पै[15] राखै[16] राजनीत[17] है[18] ॥ ६ ॥

तनक सो[19] तिनगा छिनक[20] माझ[21] वाउ[22] फिरै[23]
ह्वै[24] करी[25] प्रचड कर[26] छार छार[27] वनीयै[28] ।
कोनै[29] माझ[30] बालक[31] सो[32] बिलवा[33] सुकुच[34] बेठो[35]
दाव परे[36] उदरा[37] हि चूकै[38] नाहि[39] हनीयै[40] ।
जैसो[41] है[42] सुवैद[43] काटी[44] ज्यो[45] की[46] फिर[47] त्यु[48] ही होय[49]
भूलीयै[50] न ज्यो[51] लो[52] तो[53] लो मूल तै[54] न खनियै[55] ।
वसुधा[56] के[57] वीच[58] जो[59] विजय[60] चाहे[61] ताको[62] वीर[63]
वैसधर[64] वैरी[65] व्याध[66] छोटे[67] नाहि[68] गिनियै[69] ॥ ७ ॥

---

१ ग वाम । २ ग राखें । ३ ग. वीप । ४ ग अमृत । ५ ख राखै, ग राखें ।
६ ग राखें । ७ ख ग सोई । ८. ख ग जग । ९ ग हें । १० ग ग्यानी देखो ।
११ ग कि । १२ ख सब, ग सबें । १३ ख. वात । १४ ख लायकु ।
१५ ख पै, ग पें । १६ ग राखें । १७ ग राजिनीत । १८ ग हें ।

७ १९ ख सौ, ग सु । २० ग छीनक । २१ ख माज । २२ ग बाऊ । २३ ख फिरै ग फिरें । २४ ख ह्वै, ग देह । २५ ख. करि, ग कर । २६ ख करै, ग करें । २७ ग बार । २८ ग वनीअें । २९ ख कौनै, ग कुनें । ३० ग माज । ३१ ख वालकु, ग बालकु । ३२ ख. ग सौ । ३३ ख. विलवा, ग बीलवा । ३४ ख. सकुच, ग सकुच । ३५ ख वैठौं, ग बेंठो । ३६ ग. परें । ३७ ग उदरा । ३८ ग. चुकें । ३९ ख. नही, ग नहि । ४० ख हनियै, ग. हनीयें । ४१ ग जेसी । ४२ ग हे । ४३ ग त्यों सुवेंद । ४४ ग काटि । ४५ ख ज्यों, ग जों । ४६ ग कि । ४७ ख फिरि, ग फीर । ४८ ख त्योही, ग तोहि । ४९ ख होइ, ग होय । ५० ग भूलीयै । ५१ ख ग जो । ५२ ख लु, ग लौ । ५३ ख तो लु ग. (रिक्त) । ५४ ग मुल । ५५ ख खनियै, ग. खनीअे । ५६ ग वसुधा । ५७ ख. कै, ग कें । ५८ ख वीच । ५९ ग जौ । ६० ग वीजय । ६१ ग चाहें । ६२ ख तो कु, ग तो कु । ६३ ग वेर । ६४ ख वैसदर, ग वेर । ६५ ख वैर । ६६ ग व्याधि । ६७ ग छोटै । ६८ ख नही, ग नह । ६९ ख गनियै, ग गनीयें ।

कीरत[1] को[2] मूल[3] एक रैन[4] दिन दान देवो[5]
धरम को[6] मूल[7] एक साच पहिचान[8] वो।
वढिवे[9] को मूल[10] एक ऊचो[11] मन राखिवो[12] है
जानवे[13] को[14] मूल[15] एक भली वात मानिवो[16]।
व्याध[17] वहु भोजन[18] उपाध[19] मूल हांसी देवी[20]
दारद[21] को मूल एक आलस वखानवो[22]।
हारवै को[23] मूल एक आतुरी[24] है रिन[25] मांझ
चातुरी[26] को मूल[27] एक वात कहि[28] जांनवो[29] ॥ ८ ॥

सूवत[30] तै[31] जस[32] जाय[33] गरव तै[34] लछि[35] जाय[36]
कुनार[37] तै[38] कुल जाय[39] जोग जाय[40] सग तै[41]।
भूख[42] मृजाद जाय[43] लडायै[44] तै पूत[45] जाय[46]
सोच तै सरीर जाय सीलत कुसग तै।

---

८ १ ख किरत। २ ख कौं ग कौ। ३ ख. मुल। ४ ख. रैंन। ५ ख देयौ ग देवौ। ६ ख को, ग कौ। ७ ख. मुल। ८ ख. पहिचांन, ग पहिचानवौ। ९ ख वढवें, ग. वटिवे। १० ख. मुल। ११ ग ऊचौ। १२ ख. राखवो हैं, ग राखिवौ है। १३ ख ग जानवे। १४ ख. को, ग कौ। १५ ख मुल। १६ ख मानयौं, ग मानिबौ। १७ ख. व्याधिको। १८ ख मोज। १९ ख उपासी। २० ख. देवीदस। २१ ख दालद। २२ ख वखनंयो ग वखानिबो। २३ ख ग. कौ। २४ ख. आतुर हैं। २५ ख. रिन माज, ग रनमाझ। २६ ख. चातुरि। २७ ख मुल। २८ ख करि। २९ ख जानियौ ग. जानिवौ।

९ ३० ख सुमत, ग सूंमत। ३१ ख. तैं। ३२ ग जसु। ३३ ग जाइ। ३४ ख. तें। ३५ ख लछ, ग. लछि। ३६ ख. जाअें, ग. जाइ। ३७ ख कुनानारी। ३८ ख तें। ३९ ख. जाअे, ग. जाइ। ४० ख जाअें, ग जाइ। ४१ ख तें। ४२ ख भुख। ४३ ख. जाअें, ग जाइ। ४४ ख. डाए, ग लडाए। ४५ ख पुत। ४६ ख. जाअें, ग जाइ।

कपट[1] तैं धर्म जाय[2] लोभ तैं[3] वडाई[4] जाय[5]
मांगवै तैं मान जाय पाप जाय[6] गग तैं।
नीत विन[7] राज जाइ[8] क्रोध तैं तपस्या[9] जाय[10]
देवीदास[11] रजपूती जाय[12] मुस्यै[13] जग[14] तैं ॥ ९ ॥

मैंमत[15] मतग[16] देख[17] फोज[18] चतुरग देख[19]
जीते केउ जग देख[20] प्रजा कर[21] देत[22] है।
गाढे[23] गढ[24] कोट देख सूरन[25] की[26] जोट[27] देख
संपति[28] अटोट देख सुख सो[29] सचेत[30] है।
देवीदास[31] तो पै नृप[32] नीतन[33] की[34] नीत यह[35]
वैरी[36] पै वचैगो सोई सदा सावचेत[37] हैं।
नातो[38] जैसे[39] सुदर[40] सरवा[41] छित वाती[42] छित[43]
तेल छित[44] दीयै कु[45] वयार[46] मार लेत[47] है[48] ॥ १० ॥

---

९ १ ख कपटे । २ ख जायें, ग. जाइ । ३ ख. त । ४ ख. वडार । ५ ख जाअें, ग जाइ । ६ ख. जाअें, ग. जाइ । ७ ख वीन । ८ ख दायें । ९ ख तपसा । १० ख. जाअें, ग जाइ । ११ ख देवीदास । १२ ख जायें, ग. जाइ । १३ ख. मुरें, ग मुरैं । १४ ख. जग तें, ग. जग तै ।

१० १५ ख. मेंमत । १६ ग मातंग । १७ ग देखि । १८ ख फोजे, फौज । १९ ग देखि । २० ग देखि । २१ ख. ग. करू । २२ ख देतु, ग. देति । २३ ग. गाटे । २४ ग गट । २५ ख सुरन । २६ ख. कि । २७ ख. चोट । २८ ख. सपत, ग. सपति । २९ ख कों । ३० ख. समोंतु । ३१ ख. देविदास । ३२ ख नृ । ३३ ग नितिनी । ३४ ख. कि । ३५ ख. ग. यहै । ३६ ख वेंरी । ३७ ख. सावचेतु । ३८ ख न तो, ग. ना तो । ३९ ख. जेसे, ग. जसै । ४० ख सदर, ग. सुदर । ४१ ख. सुरवा, ग. सवा । ४२ ख. छीतवाती, ग. छितवाति । ४३ ख छत, ग. छीत । ४४ ख छत, ग. छीत । ४५ ख. को । ४६ ग वहार । ४७ ख. लेतु, ग. लेतु । ४८ ख. हें ।

देखो तीन लोक तें[1] थकाई[2] अंधकार[3] पीठ[4]
दूर[5] कीनो ऐसे भानु कर कें[6] उदोत हैं[7]।
वारनी[8] मगन[9] देख[10] रवि को[11] कहर[12] ही के
पल में[13] कोहर जग छायो[14] ओत[15] पोत है।
कवहू[16] प्रकास या अकास को[17] दवाय[18] लेत
कवहू गगन गाजे तिमर के गोत हैं।
हार मानै[19] तिमर[20] नि वैठ[21] रहै[22] तिमरारि[23]
वैर वारे कवहू[24] असावधान[25] होत[26] हैं[27]॥ ११ ॥

एक[28] रवि उगै[29] छवि देख[30] दव[31] जात[32] तम[33]
सव ही[34] उछाह होत दीठ[35] हावभाड[36] की।
तीनो[37] लोक तिमर[38] तिराइ[39] तिमरारि[40] विन[41]
पै[42] वुरीन[43] होई[44] मिटै[45] विलोक[46] निचाड[47] की[48]।

---

११ १ ख तें। २ ख थकाये। ३ ख अधकार। ४ ख ग पीट। ५ ख दुर। ६ ख करकें, ग करके। ७ ख हे। ८ ख वारुनी, ग वारुनी। ९ ख गमन। १० ख देखी, ग. देखै। ११ ख को, ग. कौं। १२ ख ग कुहर। १३ ख मे, ग मे। १४ ख छाओ, ग छायो। १५ ख ओतु पोतु हैं। १६ ख कवहु। १७ ग कु। १८ ग दवाइ। १९ ख मानी। २० ख तीमर। २१ ख वेग, ग वैठि। २२ ख रहें। २३ ख तिमरार। २४ ख कवहु। २५ ख कसावधानु। २६ ख होतु। २७ ख हे।

१२ २८ ग एकु। २९ ख उगें। ३० ख.ग देतु। ३१ ग दवि। ३२ ख जाजें। ३३ ग तमु। ३४ ख सवहि। ३५ ख. दिठ। ३६ ख हावभाव, ग हाइमाइ। ३७ ख तीन, ग तीनौं। ३८ ख तिमर। ३९ ख तीरायें। ४० ख तीमरारी। ४१ ख वीन। ४२ ख पें। ४३ ख. वुरीन। ४४ ख होअें। ४५ ख मीटें। ४६ ग विलोक। ४७ ख नचाई। ४८ ख. कि।

ऊगै[१] सूर[२] बारह जगत[३] वाट[४] बारह[५] कै[६]
जाइ[७] तहा[८] वार महाप्रलय[९] वलाइ[१०] की ।
भली[११] इक्क[१२] नायकी[१३] है[१४] सोउ[१५] जो न होइ तो या
बुरी वहु नायकी[१६] तै[१७] नीकी निरनाइ[१८] की ॥ १२ ॥

दानव को[१९] मास मेद[२०] लेकै मधुसूदन[२१] नै[२२]
मेदनी[२३] वनाइ[२४] ग्रैसो[२५] वेदन[२६] मै गायो है[२७] ।
ग्रैसी याधि नाइ[२८] धकै[२९] भुजत[३०] ·है[३१] भूप मव[३२]
जस[३३] सो सुवास[३४] खाइ सोई[३५] मन भायो[३६] है ।
भूपति कहाइ जाहि देखत ही देवीदास
तीन छूट जाइ सोई माई पूत जायो है ।
ग्ररि के हथ्यारनी वीना रन[३७] व्ही[३८] दीन दुख
साहिव तो[३९] सोई परमेसूर[४०] वनायो है ॥ १३ ॥

मूढ नृप जो ग्रजा प्रजाहि मार[४१] खायो[४२] चाहै
ताको[४३] एक वार ही तो[४४] त्रिपति[४५] निदान है ।
वुद्धिवान ह्वै कै परनाम कु विचारै चित्त
ग्रजा प्रजा वीच तो ग्रनेक खान पान है ।

---

१ ख उगें । २ ख सुर । ३ ख जुगत । ४ ग. वाद । ५ ख वाहर । ६ ख ग कौं । ७ ख जाअें । ८ ग तह । ९ ख म्हाप्रलयें । १० ख बलायंकि । ११ ख. भलि । १२ ख एक । १३ ख नायेंकि । १४ ख हें । १५ ख होअें तोअें । १६ ख नायंकि । १७ ख हे । १८ ख नीरनारअें कि, ग निरनाय की ।

१३ १९ ग कौ । २० ख समे । २१ ख मदसुदन । २२ ख नें । २३ ख. मंदनी । २४ ख बनाई । २५ ग. अैसे । २६ ख वेदन । २७ ख गाग्रो हें । २८ ख नायें । २९ ख धीकें । ३० ख भुजक, ग भुजक । ३१ ख हे । ३२ ख भुप । ३३ ग जसु । ३४ ग सुवासु । ३५ ग तौही । ३६ ग भायौ । ३७ ग. रिन । ३८ ग की । ३९ ग. तौ । ४० ग परमेसुर ।

१४. ४१ ग. मारि । ४२ ग खायौ । ४३ ग ताकु । ४४ ग तौ । ४५ ग नृपति ।

देवीदास कहै भूप पालत है पोख दे[1] कै
अजा प्रजा विथै[2] तै जानत सुजान है।
आमष तैं दूध सो अघावे केउ वार तातें
राजन[3] को[4] पारिवे अजा प्रजा समान है ।। १४ ।।

दोलत[5] मिठाई तासो[6] लपटे है लोग तातें
दोलत की माखी तिनै कहा लो[7] उडावैगो।
एती तोकु थोरी याको ठाकुर कहावै यातै
वाटो है सवको वट सासू[8] तू[9] हि पावैगो।
माया यह कालवी[10] की मिसरी को कुजा[11] ताहि
वाट[12] छान पीवैगो सो भलेई[13] कहावैगो।
देवीदास याही विन वाट खायो[14] चाहै सो[15] तो
दातन[16] तुरावैगो कै गाल ऊफरावैगो[17] ।। १५ ।।

यारनु[18] गुमान करै दारिदी[19] कै सेवै घरे[20]
सुख[21] ओरै[22] अनुसरै असे मूढ ओर है।
ग्यानी कै प्रपच राचै ससारी गिनै[23] न पच[24]
राजा कै[25] कृपनता कै सूम सिरमोर[26] है।
गनिका कुरूप धनवान कै[27] फकीरी घर
वाध कै सिथल भयो रात दिन जोर है।
जग मै जो वसीयै तो हसीयै[28] न काहू देवी
हस्यो ही जो[29] चाहो[30] तोए हसिवै की ठोर[31] है ।। १६ ।।

---

१ ग दै। २ ग विरथै। ३ ग राजनि। ४ ग. कुं।

१५. ५ ग. दोलति। ६ ग. तासौं। ७ ग. लु। ८ ग सारू। ९ ग. तुहू।
१० ग. कालपी। ११ ग कूजा। १२ ग. वाटि। १३ ग भलोई। १४ ग. खायौ।
१५ ग सूतौ। १६ ग दातनि। १७ ग. निफरावैगो।

१६. १८ ग. नू। १९ ग दारदी। २० ग घेरै। २१ ग सुखी। २२ ग. अंरै।
२३ ग. गनै। २४ ग. पाचै। २५ ग ह्वै। २६ ग. मौर। २७ ग. ह्वै।
२८ ग हसियै। २९ ग जौ। ३० ग चाहौ। ३१ ग ठौर।

संग लीयै चतुरग चमूगढ
कोट अवास सबै विघ[1] जोउ।
को धनस अवास[2] हथ्यार तरदुज
कायर सूर मै घाटन कोउ।
आय परै नहि भीर उपद्रव
जो लो वयार चली जर खोउ[3]।
तो लग तूल को पाथर को
मु पहारु[4] पहारु[5] वरावर दोउ[6] ॥ १७ ॥

उक्कल[7] सुद्ध[8] स चिक्कन[9] सुदर
चचल होय[10] नही[11] पुनि भूपर।
वोकल[12] ओर[13] भलो[14] थल को[15]
सव की[16] सहै ठेसर[17] है मन[18] धू पर।
आइ[19] परै[20] जु भली सबुरी[21]
सोई लेइ[22] चढाइ[23] सबै सिर[24] ऊपर।
एक[25] कवित्त कहै देवीदास
विचारहु[26] थभ प्रवान दुहु[27] पर ॥ १८ ॥

---

१७ १ ग विधि। २ ग कोस। ३ ग खोऊ। ४ ग पहार। ५ ग पहार।
६ ग दोऊ।
नोट—'ख' प्रति मे यह पद नहीं दिया गया है।

१८ ७ ग उज्जल। ८ ख. सुध। ९ ख. सचिवन, ग सचिकन। १० ख हयें, ग होइ।
११ ख नहि। १२ ख. खौजल, ग वोझल। १३ ख.ग ओर। १४ ख मलैं।
१५ ख कु, ग कौ। १६ ख. कि। १७ ख टेंसर, ग तेसर। १८ ग मनों।
१९ ख आय। २० ख परें। २१ ख. ज बुरी, ग रू बुरी। २२ ख. लेय।
२३ ख. चढायें। २४ ख. सीर। २५ ख एह। २६ ख वीचारहु। २७ ख दहुं।

ओसर[1] सु[2] सनी आछी दक्षिता[3] की छवि लीयै[4]
युक्त[5] सो[6] जटी[7] है[8] जाके[9] अग अवदात है[10]।
माच सो सनीयै[11] मनो[12] हरि[13] सो[14] मिली[15] विचारै[16]
परिनाम[17] नीकी[18] मीठी श्रोता[19] अर्थंत[20] है[21]।
आखर नि[22] थोरी[23] ओर अर्थ[24] करि[25] महावडी[26]
ओर[27] को हितू है[28] जाकैं[29] सुनै[30] दुख जात हैं[31]।
वेद की सो[32] वानी वात सोई वात कहावत
देवीदास ओर वात वातनि[33] की वात है ॥ १६ ॥

सरद[34] की चादनी से उजरे[35] अमोल सुभ
सुदर सु[36] वृत्त ते[37] दुराए[38] दुरवे[39] कहै।
वडे गुनवत देविदास मन[40] मोहि लेत
पानप[41] सपूरन[42] सुढार ढरवे कहै[43]।

---

१६. १ ख. औसर। २ ख. सो। ३ ख दवितांकि। ४ ख लीअें। ५ ख जुक्ती, ग जुक्ति। ६ ख सु, ग सौं। ७ ख जटि। ८ ख हे। ९ ख ग जाके। १० ख हें। ११ ख सनीहें। १२ ख मन, ग मनु। १३ ख हरी। १४ ख ग सौ। १५ ख मीली। १६ ख. वीचारें। १७ ख परीनाम। १८ ख नीकि। १९ ख श्रौतांन, ग श्रोतान। २० ख ग अघात। २१ ख हें। २२ ख. आखरन। २३-ख थौरि। २४ ख. अरथ। २५ ख करी। २६ ख म्हावडि। २७ ख. औेर। २८ ख हेतु। २९ ख जाकें। ३० ख. सुन। ३१ ख हें। ३२ ख किसी। ३३ ख. वातन, ग वातन।

२० ३४ ख सर। ३५ ख उजलें, ग. ऊजरे। ३६ ख सौ। ३७ ख वे। ३८ ख दुंरायें। ३९ ख ग वे के। ४० ख. मने। ४१ ख. पानीप। ४२ ख सपूरन, ग संपूरन। ४३ ख कंहें, ग के है।

कहुं[1] एक कूर की[2] कुराई करि फूट[3] गए[4]
फिर[5] मूढ़[6] मोरचो[7] चाहै[8] वेन मुरबे कहैं[9]।
मीतन के मन मोती फाटि[10] टूट[11] द्वै भये[12]
सु लाख देकें जोरो कहा फेर जुरबे कहैं[13] ॥ २० ॥

भले बुरे मांनस को[14] पटंतरो देवीदास
भांत-भात[15] कोयै[16] ईख ओरस[17] न देतु[18] है।
वारु[19] आपकु ठिलाइ[20] खड-खड ह्वै पिलाइ[21]
मार खाइ[22] परनाम रस को[23] निकेतु[24] है।
अब सुनो[25] सिपा[26] घनो फूल[27] फल वृद्ध[28] कर[29]
जरतै[30] कटाइ[31] परचो पांनी मैं[32] अचेत[33] है[34]।
आपकु सिराइ[35] पुनि[36] आवकु[37] सिराई[38] निज[39]
चाम उपटाई[40] पर बवनसो[41] हेतु है ॥ २१ ॥

---

१ ख काहु, ग कहू। २ ख कुंराक। ३ ख. फुट। ४ ख ग गएं।
५ ख. सीर, ग. फिरि। ६ ख. मुड। ७ ख मौरों। ८ ख. चाह।
९ ख कैहे, ग के है। १० ख फटि। ११ ख टुक, ग. टक। १२ ख. भअै, ग भए।
१३ ख. के हें, ग के है।

२१. १४ ख को, ग को। १५ ख. भांति भांति। १६ ख. किई, ग कोयैं।
१७ ख ओरस, ग ओरस। १८ ग देत। १९ ख. वार। २० ख. छीलायें ग. छिलाइ।
२१ ख खड ह्वै पीलायें जायें, ग. खड खड ह्वै पिलाइ। २२ ख. खायें।
२३ ख ग. को। २४ ख. न गोतु, ग. निकेत। २५ ख सुनो, ग सुनौं।
२६ ख.ग. सन। २७ ख फुल। २८ ख. कषि। २९ ख. करें, ग. करि।
३० ख जरेतें। ३१ ख कटायें। ३२ ख. मे। ३३ ख. अचेंतु, ग. अचेत।
३४ ख हें। ३५ ख सरायें, ग सराइ। ३६ ख. पुनो। ३७ ख.ग. आपकुं।
३८ ख सरायें, ग. सराइ। ३९ ख. नीज। ४० ख उवटाअें, ग. उपटाइ।
४१ ख ग सु।

भले बुरे मानस को पटतरो देवीदास
दरजी की सूई[1] कहे[2] अकेली[3] यै देत[4] है।
पैनो[5] ओर अवर के गुन माहि[6] छेद पारै[7]
आप गुन-हीन[8] तामो कहै नेत-नेन[9] है।
अब सुनो दूजे ओर डोरे की भलाई, वह
गैल तो चलाई पर गुनमो समेत[10] है।
ढिग-ढिग दूर-दूर[11] जेई छेद[12] पारै वह
तेई यह पूरि[13] पूर[14] ओर कर लेत है[15] ॥ २२ ॥

कूवा[16] मा क[17] मैडको तिमगल सो ह्वै रह्यो[18]
तहा आयो हस उड्यो[19] नीचै कूप पानीयै[20]।
वैठो उपकठ वोल्यो[21] मरोर[22] सो[23] मैडको तु[24]
को है कु[25] राजहस[26] तेरो घर[27] जानियै[28]।

---

२२ १ ख सुई। २ ख कहे, ग कही। ३ ख अकेलु। ४ ख देतु। ५ ख पानीर।
६ ख. माज, ग माहि। ७ ख मारी। ८ ख हिन। ९ ख नेतु। १० ख समेतु।
११ ख जेई। १२ ग छोद। १३ ख ओर। १४ ख.ग करि।
१५ ग पुरी पुरी लेतु हे, ग पूर पूर लेत है।

२३ १६ ग कुआ। १७ ग माज, ग माझ। १८ ग रहौं। १९ ख उडो, ग उड्यो।
२० ग दसो नीचे कूप पानीया, ग देग नीचै कूप पानियें। २१ ख वोलो।
२२ ग मरोर। २३ ग. सु। २४ ग तू। २५ ख हुं, ग हू।
२६ ख.ग. दोनों प्रतियों मे राजहस मे पूर्व 'तो' अक्षर है। २७ ग घर।
२८ ग जानीयें।

मानसर[1] के तो वडो[2] मोफलग[3] हू[4] ते वडो[5]
मो[6] घर हू तै वडो झूठ[7] कैसें[8] आनीयै।
जा जीव की[9] ज्यो[10] लो पोहच[11] ना ही देवीदास
ताको बुरो मन माक[12] तनक[13] सो न मानीयै ॥ २३ ॥

माथो वन्यो[14] मूह[15] वन्यो मूछ[16] वनी पूछ[17] वनी
लाघव वन्यो है पुनि[18] वाघ सम तूल-को[19]।
रग्यो चग्यो अग[20] वन्यो लक[21] वन्यो पजा वन्यो
कुत[22] म सटा[23] समूह[24] सिंघ ही[25] के सूल[26] को।
गुजवे की[27] वेर[28] मोन[29] गैह[30] बैठो[31] देवीदास
कैसो[32] ही सुभाव[33] कुद[34] फाद फाल[35] फूल[36] को।
कुजर के कुभह[37] विदारवे[38] की वेर कैसें
कूकर[39] पै[40] निवहैगो[41] साग सारदूल[42] को[43] ॥ २४ ॥

---

१ ग मानर। २ ग वडौ। ३ ख मोफलाग ग मोफलाग। ४ ख हु।
५ ख ग वडौ। ६ ख मेरो, ग मेरे। ७ ख भुठ। ८ ख केसे। ९ ख कि।
१० ख.ग जहा। ११ ख पौज, ग. पौहौच। १२ ख मा हे, ग माही।
१३ ख तनकु, ग तनकौं।

२४ १४ ख वनो। १५ ख मुह, ग मुहु। १६ ख मुछ। १७ ख पुछ।
१८ ग. पुन्य। १९ ग कौ। २० ग आगु। २१ ख ग लाकु। २२ ख पुत।
२३ ख मसाटा। २४ ख समुह। २५ ख हि। २६ ख सुल। २७ ख कि।
२८ ख ग बेर। २९ ख मुन, ग मून। ३० ख ग गहि। ३१ ख वेगें, ग वैठे।
३२ ग. प्रति मे नहीं है। ३३ ख.ग समाव। ३४ ख कुद। ३५ शब्द 'ख'
प्रति मे नहीं है। ३६ ख फुल। ३७ ख ग कुभहि। ३८ ख. वीदारवे।
३९ ख. कुकर। ४० ख तें। ४१ ख नीवहेगो। ४२ ख सादुल।
४३ ख ग कौ।

लोचन चरन चेंचु[1] चोख कर चोखे रग[2]
देवीदास ऊपर तें[3] उजरो[4] ऊ हेरि[5] है[6] ।
उची नार[7] कर[8] बैठो[9] मोन[10] अभिमान[11] गहि
पैंडक[12] मराल की[13] सी चाल पग फेरि[14] है[15] ।
असी भाति[16] पेरव[17] तोहि हीयै[18] अवरेख[19] पुनि[20]
सकल नकल[21] देख[22] हस[23] कहि टेरि[24] है ।

एक रु[25] भई जो कोउ[26] पीर आनि[27] मिल्यो[28] तव
एरे[29] वक वीर-नीर छीर क्यो[30] निवेरि[31] है ।। २५ ।।

असाढ मैं[32] निपज्यो[33] सावन[34] मैं लहलानो[35]
भादु[36] मैं पुलग छाड[37] पलटा[38] भराभरी ।
क्वार[39] के कनागत मैं[40] फूल फूल[41] मस्त भयो
वर सो[42] चलाई है सगाई की[43] खराखरी ।

---

२५. १ ख. चुंप । २ ख. चुप करी चोखो रंग, ग. चेंचु चोख कौर चोखे रगे । ३ ख पें । ४ ख उजरें, ग. ऊजरो । ५ ख. ऊहेरी । ६ ख हैं । ७ ख. नारी, ग नारि । ८ ख. प्रति मे नहीं है, ग करि । ९ ख बेंगे, ग. बैठे । १० ख. मौन । ११ ख. अभीमां । १२ ख पेंडुक, ग पंडुक । १३ ख कि । १४ ख. फेरी । १५ ख हैं । १६ ख. माती, ग मात । १७ ख. पेखी, ग पेखि । १८ ख हिए । १९ ख. अविरेख । २० ख पुनी । २१ ख. नफल । २२ ग देखि । २३ ग. हसु । २४ ख. टेरी, ग टेर । २५ ख. रूप । २६ ख को कुं, ग कोऊ । २७ ख. आंनी, ग आन । २८ ख मीलौ । २९ ख एर । ३० ख. को, ग. क्यौं । ३१ ख नीवेर ग. निवेर ।

२६. ३२ ख मे । ३३ ख नीपजो । ३४ ग. संवन । ३५ ग. लहलहानौ । ३६ ख. मादो । ३७ ग. छाडि । ३८ ख. लपट, ग. लपटाव । ३९ ख. कार । ४० ख. मे । ४१ ख फुल २ । ४२ ख. वर सु । ४३ ख कि ।

वरु कहै घर[1] है[2] तिहारो मो पै मया करी
अगहन व्याहन[3] है[4] जैसी[5] है[6] परापरी[7] ।
देवीदास देवउ वेदात[8] काढ[9] रह्यो वह
भाड भयो भीडाकर[10] वर[11] सै[12] बराबरी ॥ २६ ॥

कोन[13] पाय पर्‍यो तुम[14] तिवटे[15] मे[16] हो[17] ज्यो[18] वट[19]
भए[20] हो[21] तो रहे क्यो न साखा[22] इक[23] दूक[24] है ।
साखा जो वढाई तो फले[25] असे[26] काहि[27] काजै[28]
जापै[29] होत कोरन[30] पखेरन[31] की कूक[32] है ।
फले भली करो तो नए हो असे[33] काहि[34] काज
नए हो तो सहो देवी[35] जो कोउ कछू[36] कहै ।
डार[37] पात जटाऊ[38] कै[39] अंचे[40] मत चटको जु[41]
वाट मैं भए हो वट[42] रावरी[43] ए[44] चूक[45] है ॥ २७ ॥

---

१ ख ग घरु । २ ख प्रति मे नहीं है, ग कहै । ३ ख.ग व्याह । ४ ख ग ह्वै । ५ ख सैसी । ६ ख. इकी । ७ ख. खराखरी । ८ ख दांत । ९ ग. काढि । १० ग. भिडाकरि । ११ ख. सुर, ग. बर । १२ ख. सु, ग. सौं ।

१३ ख कौहो, ग. कोहो । १४ ख. भंमई । १५ ख तवट । १६ ख. मे । १७ ख हु । १८ ख ग. जौ । १९ ख वढ । २० ख. भयो । २१ ख. मे नहीं है, ग है । २२ ख साख्या । २३ ख. ईक, ग एक । २४ ख. टुंक । २५ ख. फल । २६ ख. असें, ग. हो अैसे । २७ ख ग. काहे । २८ ख. काज । २९ ख. जाप । ३० ख कौरक, ग. कोरिक । ३१ ख.ग पखेरू । ३२ ख कुक । ३३ ख ए । ३४ ख ग काहे । ३५ ख. वेवि । ३६ ख. कछु । ३७ ख दार । ३८ ख. जटउ । ३९ ख कें । ४० ख अैंचे । ४१ ग जू । ४२ ख. वाट मे केवट जहि, ग वाट मं भए हौ षह । ४३ ख रावरि । ४४ ख हि । ४५ ख चुक ।

सर[1] सो सरोज सो[2] सुधाकर[3] सो सुक[4] सो
समीर[5] सो सदाई जाकै पास अनुसरि[6] हैं।
अनुचर चातग[7] सो वगुला[8] को[9] जातक[10] सो
भोर[11] सो भलाइ कहो[12] केसै परिहरि[13] है।
हाथी सो हिरन सो है पानी को सो अग जाको
वन सो[14] विहग[15] सो पै जाकी ढिग[16] परि[17] है।
देवीदास अैसे भट वारह जो[18] वार होई[19]
कहो[20] धो विचार[21] ताको[22] वैरी कहा करि[23] है[24] ॥ २८ ॥

विन कहे[25] सव जानै सासन सिर[26] पै[27] मानै
साहिव की[28] भीर भानै मन भाइयतु है।
सुख-दुख[29] जी न आनै थोरे ही[30] रहे अघानै
धनी काजे प्रान देत तेई गाइयतु[31] है।

•

---

२८ १ ग सरु। २ ग सौं। ३ ख सुंक, ग. सुधाकरु। ४ ख मे नहीं है, ग. सुकु।
५ ग समीरु। ६ ख अनुसरे। ७ ख चातुक, ग चातुक। ८ ख. वगला।
९ ख के। १० ख. जातुक। ११ ग. भौरु। १२ ख. कहे। १३ ग परहरि।
१४ ख ग फो। १५ ख वीहग। १६ ख अग। १७ ख परी। १८ ख. जा।
१९ ख होये। २० ख. कहु। २१ ख वीचार। २२ ख. जाको।
२३ ख. कैरी। २४ ख. हे।

२९ २५ ख कहें। २६ ख सी। २७ ख पें। २८ ख कि। २९ ख दुगु सुग्व,
ग दुख सुग। ३० ख हि। ३१ ख गायेतु, ग गाईयतु।

निडर[1] मै डर[2] राखै डर[3] मै निडर[4] होइ[5]
लाज सो[6] लपेटे रहै छबि छाइयतु[7] है।
घरी-घरी अरजी न[8] होइ[9] वरजी न करै
अैसे चाकर तो पूरे[10] पुन्य पाइयतु[11] हैं ॥ २९ ॥

प्रान सम राखै ताको[12] सुख अभिलाखै[13] आछे
आछे[14] वैन[15] भाखै सदा[16] वेई तो सराहियै[17]।
चित हित[18] पागे कहै[19] काहू के न लागै पीर
परै[20] भीर[21] भागै ज्यो[22] देवन[23] उर[24]-दाहियै[25]।
वार वार तूठै[26] तकसीर हूँ सै[27] रूठे दोस
लावत न[28] भूठे[29] दुख[30] परै तै[31] निवाहियै[32]।
कृत अति प्रीत ओ[33] प्रतीत[34] एकरस[35] अैसे[36]
चाकर[37] को[38] देवीदास अैसे प्रभु चाहियै[39] ॥ ३० ॥

---

१ ख नीडर, ग. निडरु। २ ख ग डरु। ३ ख. निडर। ४ ख. डरू। ५ ख. होई। ६ ख सु. ग. सों। ७ ख. छाअतु, ग. छाईयतु। ८ ख. अरजि। ९ ख. होए। १० ख. पुरे। ११ ख. पायतु।

१२ ख. ताकु, ग ताको। १३ ख अभीलाखे। १४ ख. मुख। १५ ख. बेंन। १६ ख सदों। १७ ख. सराईहिए। १८ ख. हितचित। १९ ख. कैहे। २० ख. परि। २१ ख पेर। २२ ख. भागें। २३ ख. जो। २४ ख ग. दुवन। २५ ख. दाहियों। २६ ख तूठें। २७ ख. सें, ग सुं। २८ ख. ल्यावत। २९ ख. नु। ३० ख. जुंठ, ग. भूठे। ३१ ख. परें। ३२ ख. नीवाहियो। ३३ ग. औ। ३४ ख. प्रतित। ३५ ख. एक रसु, ग अेकरस। ३६ ख. अंसे। ३७ ख. चाकरीनी, ग. चाकरनि। ३८ ख. कों, ग. कु। ३९ ख. अंसे प्रतीत प्रभु चाहियै, ग. अेसें प्रतीत प्रभु चाहिअें।

सदाचार लीन सब बात मै प्रवीन[1] पायै[2]
अनपायै[3] पीन[4] हीन कबहू[5] न भाख्यो है।
कुल के कुलीन[6] कपटी न अलसी न जिन[7]
देवीदास लोक-परलोक अभिलाख्यो[8] है।
अैसे[9] पूरे पुन्यनि मिले[10] है[11] जाहि[12] चाकर जे
साकर[13] मैं सुरलोक[14] वेद अैसै[15] भाख्यो है।
साहिब कितोक[16] देहै केतो सनमान कैहै[17]
मान के[18] बदलै उन प्रान करि राख्यो[19] है ॥ ३१ ॥

बात-बात[20] ऊपर खुसामदी करतु है जे[21]
मूह पर मीठे[22] पीछै चवाईनि[23] को गरो।
सपत के साथी[24] स्यार मक[25] सू[26] दीवे[27] हुस्यार[28]
लेवै[29] कु हुस्यार[30] अैसे चाकर कूवा परो।

---

३१ १ ख प्रविन। २ ख पायें, ग पाअें। ३ ख पाए। ४ ख पिन, ग पीत। ५ ख कवहु। ६ ख. कुलिन। ७ ख जीन। ८ ख. अमीलाख्यो। ९ ख अैस। १० ख मीलें। ११ ख प्रति मे नहीं है। १२ ख. जाहि के बाद 'नेक' शब्द है। १३ ख ग. साकरे। १४ ख सुरलीक, ग सूरलोक। १५ ख. भेद, ग इह। १६ ख. कु। १७ ख. कहैं। १८ ख कहे। १९ ख.ग. रारयो।

३२. २० ख वात २। २१ ख. वरतु है खुसामद, ग खुसामद करतु है जो। २२ ख. मीनो। २३ ख ग न। २४ ख सारयो। २५ ख. मुंक। २६ ख ग. सु। २७ ख. दिवें। २८ ख हुसार। २९ ख लेव, ग लेवे। ३० ख हुसार।

कृत को[1] न मांनै एक डगै डरु' जानै गरज
ह्री मैं[2] अरज ठानें[3] तिन[4] विना[5] ही सरो।
देवीदास सीरे पेट सेवक न वीच[6] सोधि[7]
अैसे[8] न अलुफातें सवाई[9] दे विदा करो[10] ॥ ३२ ॥

दूवरे[11] से आवै भूखे[12] कांम को[13] किलकिलावैं[14]
जित[15] ही लगावैं[16] हम जोड[17] करैं[18] सो कहै।
साहिव नै भूखे[19] जान दुर्वल[20] की[21] दया आंन
मेल[22] दीने माल पर कहु न[23] अटोक है।
जहा मूह[24] घाल्यो[25] तहां ठिल[26] गयो[27] सरवेस[28]
मात[29] गए पल माहि कोन[30] सुनै को कहै।
फेर[31] दुहि[32] लीजै[33] तव काम आवैं[34] देवीदास
कहीयो[35] विचार[36] अंधो[37] चाकर किजो कहै॥ ३३ ॥

---

१ खग. कु। २ ख. मे। ३ ख नै। ४ ख तीन। ५ ख पीना। अतिम दो पक्तियां 'ग' प्रति मे नहीं है। ६ ख बीच। ७ ख सध। ८ ख, ऐस। ९ ख. सवायें। १० ख देविदास रो।

३३. ११ ख दुवरे। १२ ख भुखे। १३ ग. कु। १४ ख. किलकोलावैं। १५ ख जीत। १६ ख. लगावें। १७ ग. सोई। १८ ख करें। १९ ख. भुखो। २० खग दुरवल। २१ ख. कि। २२ ख महु। २३ ग म। २४ ख. मुह, ग. मुह्व। २५ ख. घालो। २६ ख. गील, ग. गिल। २७ ख गय, ग. गए। २८ ख सरवस, ग सरबस। २९ ख माती। ३० ख कुन। ३१ ग. फेरि। ३२ ख दुह। ३३ ख. लीने। ३४ ख आव। ३५ ख करियो। ३६ ख बीचार, ग विचारि। ३७ ख. अंधो, ग यंधो।

हितकारी[1] ह्वै के दसै दाइ[2] निज[3] साहिब[4] सों
हित[5] की-न कहै तोहि तू[6] पनै[7] मे[8] खामी[9] है।
वैसैं[10] सभासद की[11] सुबुधन[12] की हद कीजो
सुनै नही[13] देवीदास सो तो सठ स्वामी[14] हैं।
मत्री[15] होय[16] हित को कहै या[17] ओर राजा होय[18]
सार को गहै[19] यातो तो[20] जोरावर[21] नामी है।
नातर[22] नृपति[23] है विपति[24] ही को गामी[25] ओर
मत्री वह निहचै नरक ही को[26] गामी है।। ३४ ।।

वातन[27] वहानहार[28] चित[29] के लहनहार
अतर मै[30] कारे ओर ऊपर तें गोरे है।
जानीयो[31] उनही[32] थोरे दिन[33] के रहनहार[34]
दे करि[35] कुमत्र स्वामी सकट मै वोरैं[36] है।

३४　१ ख हीतकारी। २ ख दाई। ३ ख. नीज। ४ ख साईव। ५ ख. हत। ६ ख. तु। ७ ख. यनें। ८ ख. मे। ९ ख. खाई। १० ख. वेंसे। ११ ख. कि। १२ ख. सुबुधीन। १३ ख. नहें। १४ ख. सामी। १५ ख. मीत्री। १६ ख. होये। १७ ख. कहिश्रा। १८ ख. होये। १९ ख गहि। २० ख. तों जों। २१ ग. जोरावह। २२ ख. नातो। २३ ख. नृपपति। २४ ग विपत। २५ ख. कामी। २६ ख, प्रति मे नहीं है, ग. कौं।

३५　२७ ख वातनं, ग वतिनि। २८ ख वहैनहार। २९ ख चीत, ग वित। ३० ख में। ३१ ग. जानियौं। ३२ ख ई नहं, ग. उनहि। ३३ ख. हिन। ३४ ख हारें। ३५ ख. दे करि। ३६ ख वैंरे।

नांहि न अनीत के सहनहार हम तेरी
पोर के रहनहार बाभन हैं भोरे[1] है[2]।
राजन[3] के चित[4] के गहनहार घने पर
देवीदास हित[5] के कहनहार[6] थोरे है॥ ३५ ॥

एक पाव[7] पेट[8] सो लगाइ[9] लीनो लपटानो[10]
दूजै पाव[11] ठाढो[12] मुख् महा[13] मोन[14] हैं गह्यो[15]।
ना रही[16] निवाइ[17] इक[18] ठौर[19] कर[20] मैंठि[21] चोचि[22]
पीठ[23] मैं[24] दुराइ[25] राखी रूप जाय[26] ना कह्यो[27]।
हलिबो[28] चलिबो[29] मेट[30] सास वाव[31] रोक राख्यो[32]
आखन[33] मैं[34] जीउ[35] दभ[36] कापै[37] जात[38] है कह्यो[39]।
छोटी-छोटी मछरी[40] उछलवे[41] कु[42] देवीदास
देखीयो[43] बगुला यह[44] प्रभुला सो ह्वै रह्यो[45]॥ ३६ ॥

---

१ ख मोर। २ ख. हैं। ३ ग राजानि। ४ ख चीत। ५ ख हेत।
६ ग कहानहार।

३६ ७ ख पाए। ८ ख पें। ९ ख. लगायें, ग लगाय। १० ख लपटानौ, ग. लपटानै।
११ ख. पायें। १२ ख. ठाटों, ग ठाठों। १३ ख म्हा। १४ ख मुनि।
१५ ख. ह्वै, ग गहों। १६ ग नारहि। १७ ख. नवाय, ग नवाइ।
१८ ख ईक। १९ ख. ठार, ग. ठौरी। २० ख करी, ग करि,।
२१ ख मेठी। २२ ख चचु, ग. चंचु। २३ ख पीत, ग. पीटु,।
२४ ख मे, ग राथ,। २५ ख दुरायें। २६ ख जायें। २७ ख कर है।
२८ ख हलबों, ग हलिबौ,। २९ ख चलबो, ग चलिबौ,। ३० ग मेटि।
३१ ग, वाउ। ३२ ख ग राखी। ३३ ख ग आखनि। ३४ ख मे। ३५ ख. जीव।
३६ ख दम ग दभु। ३७ ख कापें, ग कापै। ३८ ख जातु, ग. जातु।
३९ ख कहो। ४० ख मछरिन, ग मछीरी,। ४१ ख छल, ग निछल,।
४२ ख कौ, ग कुं। ४३ ख देखोओ। ४४ ख अेह। ४५ ख. रहीं।

मीन ज्यो[1] न्हाय[2] फनी ज्यों[3] भखै[4] पांन[5]
मेख ज्यु[6] पत्र अहार वढावै[7] ।
चातक[8] सो[9] जलहीन[10] रहै[11] नित[12]
न्योरन[13] ज्यो[14] गिर[15] व्योर[16] वसाव[17] ।
खाक[18] मै[19] लोट उठै[20] खर ज्यो[21]
अरु ध्यांन धरै[22] वक ज्यो[23] कहा पावै[24] ।
देवी कहै[25] यों सुजान[26] सुनो जु[27]
दिखारो कीयै[28] कछु हाथ न आवै[29] ॥ ३७ ॥

पंचन[30] प्रतीत[31] सांच सांच के समीप हरि[32]
साच ही तै[33] देव मन वछित[34] करतु[35] है[36] ।
सांच ही तै[37] मुगत[38] भुगत[39] होत साच ही तै[40]
देखो देव देत[41] आग पांनो- न डरतु हैं ।

---

३७. १ ख. जो, ग ज्यों, । २ ख. नहायें, ग. न्हाइ । ३ ख जौ । ४ ख भखैं ।
५ ख पन, ग. पौन, । ६ ख. जो, ग ज्यों, । ७ ख. वढायें । ८ ख ग चातुक ।
९ ख जों, ग सौ, । १० ख जलहिन । ११ ख. रहें । १२ ख. नीत ।
१३ ख न्योरनीं । १४ ख. ज्यो, ग. जु, । १५ ख. गीर, ग. गिरि, ।
१६ ख व्यौर, ग. व्यौर, । १७ ख. वसावें, ग वटावें । १८ ख खांक ।
१९ ख में । २० ख. उठें, ग. उठे । २१ ख. जो, ग ज्यों । २२ ख धरें ।
२३ ख जों । २४ ख. पावें । २५ ख कहें । २६ ख सुजीन । २७ ख. ग सु ।
२८ ख. कियें । २९ ख आवें ।

३८ ३० ख मंचनी, ग. पंचनि । ३१ ख प्रतित । ३२ ख. हरी, ग हीरि ।
३३ ख हित । ३४ ख वछीत ग. वंछत । ३५ ख. फलतु । ३६ ख हे ।
३७ ख. हितें । ३८ ग. मुकति । ३९ ग भुगति । ४० ख. हिते । ४१ ग. दंत ।

सिंघ[1] साप सकट[2] न बोरै[3] तासो[4] सांच[5] लाग्यो
सांच तै निसक देह धीरज धरतु हैं।
देवीदास मन साचै देव अनुकूल[6] ओर[7]
धरम को मूल[8] जहां साच आचरतु[9] है ।। ३८ ।।

झूठ[10] तै[11] सकल नेम ध्रम[12] पसु[13] पुत्र हांनि[14]
झूठ[15] तै ससार दुख सिंघ[16] ओ लीयतु[17] है।
झूठ[18] लेकै[19] सभा माझ[20] झूठी[21] साख भरै[22] ताके
पित्रन[23] को[24] नरक द्वार[25] खोलयतु हैं।
झूठ गाठ बाधि[26] जहां जाई तहा न्यावे[27] झूठो[28]
झूठे[29] की सगन[30] कीयै[31] मार्यो डोलियतु है।
देवीदास कहै तीन ताप आपदा को सूल[32]
पाप ही को मूल जहा[33] झूठ[34] बोलियतु है ।। ३९ ।।

---

१ ख सीघ ग सघ। २ ग सकटे। ३ ख. बोलें ग बोलें। ४ ख. तु सुं। ५ ख. सच। ६ ग. अनकूल। ७ ख. ओर। ८ ख. मु ल। ९ ख. अचरतु।

३९ १० ख जुठ। ११ ख. तें। १२ ख. धुंम। १३ ख पशु। १४ ख. हानी। १५ ख. जुठ। १६ ख, सीघु। १७ ख ओलीएत, ग. औलीयतु। १८ जुठ। १९ ग लैंकें। २० ख ग. माँहि। २१ ख जुंठी। २२ ख भरें। २३ ख पुत्रनो। २४ ख ग. कु। २५ ख के कियो, ग. किवार। २६ ग. वाघ। २७ ग न्याई। २८ ख. जुंठो। २९ ग. भूठ। ३० ग. संगति। ३१ ग कियें। ३२ ख. मूल। ३३ ग. तहा। ३४ ख ज्रुंठ।

जो[१] कछु[२] विधाता लिख्यो[३] लेकर[४] ललाट[५] पाट
ताही[६] पर आपनो[७] अमल आप करि लै।
सोनै[८] कै[९] सुमेर[१०] भावै[११] मारवार माहि ताहि[१२]
घटै[१३] वढै[१४] नाही[१५] य[१६] निहचै[१७] मै धरलै[१८]।
देवीदास कहै जोई होनहार सोई ह्वै[१९] है
मन मै सतोख रैन-दिना[२०] अनुसर[२१] लै[२२]।
वापी सर[२३] सरिता[२४] भरे है सात सागर नो[२५]
तू[२६] तो[२७] तेरे वासन समान पानी भर[२८] लै ॥ ४० ॥

पूरे[२९] कुल जनम निरोग[३०] हो[३१] सरीर घर
विभव विलास[३२] सुरसुरी[३३] तीर धाम[३४] है[३५]।
साहसी हो पूत[३६] सुखदायक[३७] कुटव[३८] घर
पतिव्रता[३९] नारि[४०] यह पूरो[४१] मन काम है।

---

४० १ ग जौ। २ ग कछ। ३ ख लीख्यो। ४ ख. लेकरी ग लैंकरि। ५ ख लेलाट ग लिलाट। ६ ख. ताहि। ७ ख/ग आपनो। ८ ख सुने, ग सोनो। ९ ख के। १० ख समेर ग. सुमेरे। ११ ख भावें। १२ ख. जाहु, ग जाहि। १३ ख घटे। १४ ख वधे। १५ ख नाहें, ग. नाहि। १६ ख ग यह। १७ ख. नीहचें। १८ ख. धरलई ग धरिलै। १९ ख ग. कै। २० ख रैन दिनां मन मे सतोष। २१ ख. अनुसर ग. अनुसरि। २२ ख लें। २३ ख. कूप। २४ ख. सरीता। २५ ख पें, ग पै.। २६ ख. तु। २७ ख. ते। २८ ग भरि।

४१ २९ ख पुरे। ३० ख नीरोग। ३१ ख. हे, ग. हौ। ३२ ग विसाल। ३३ ख सुरसरी। ३४ ग धामु। ३५ ख. हे। ३६ ख ग सपूत। ३७ ख सीखदाअक, ग. सुखदाइक। ३८ ख कुटम। ३९ ख प्रतिव्रता। ४० ख नोरी। ४१ ख पुरे ग पूरौ।

राम जू की भगत[1] सकति[2] दान[3] देवे[4] हू[5] की
चाकर हुकमकारी जाको[6] जस[7] नाम हैं।
देवीदास एते गुन पाइयै[8] जगत मै तो
सूनसान[9] मुकति[10] को दूर[11] तै प्रनाम[12] है ॥ ४१ ॥

छोटे कुल जनम[13] कुठोर[14] वास देवीदास
रोगिल[15] सरीर दिन[16] दुख सो भरतु है।
दुखदाता पूत धूत क्रूरमा[17] कलह[18] खान[19]
करकसा नार[20] नैन देखत जरतु हैं।
पराधीन[21] जीवन अजस लोक पूर[22] रह्यो[23]
मूरख[24] कै[25] हारे दोउ[26] हरत परतु है।
ऐसें को[27] जनम देखै जग माझ मेरे जान[28]
जम के नरकवासी साहिवी[29] करतु है[30] ॥ ४२ ॥

---

१ ख. मगन ग. भगति। २ ख. सगत। ३ ख. ग दिन। ४ ख. देवि ग देवे। ५ ख ग हि। ६ ग जाकौ। ७ ख. जसु। ८ ख. पाई। ९ ख. ग सुनसान। १० ख मुकती ग. मुकत। ११ ख. दुर। १२ ख. प्रनामा।

४२ १३ ख जनमे। १४ ग कुठौर। १५ ख ग. रोगल। १६ ख. हैंन। १७ ख कुर। १८ ग कलहि। १९ ग. खानि। २० ख. नारी, ग. नारि। २१ ख. पराधिन। २२ ख. पुंर। २३ ख रहो। २४ ख. ग. मुरख। २५ ख वें, ग. ह्वै। २६ ख. दोख। २७ ग. का। २८ ग. जानें। २९ ख. हासीवो। ३० ख. हें।

लाज के सो जड़ कहै[1] व्रती सो कपटी[2] कहैं
सुचि[3] सो कहत यह[4] कैसो[5] दभ लीनो हैं।
सूर[6] सो[7] निठुर[8] कहै मृदु बोलै[9] दीन[10] कहै
वकता सो[11] वातनि[12] मुखर दोष[13] दीनो है।
कोमल सो[14] कहै मतिहीन[15] छिमावत सो[16]
कहत असमर्थ[17] यह[18] कैसो[19] भय भीनो है।
देवीदास कहै ऐसो कोन[20] है जु[21] इन मूढ
दुर्जन जननि कर[22] अक[23] तन कीनो है ॥ ६३ ॥

मून[24] वैठ[25] रहै तो सभा मै मूक[26] नाम[27] पावै
बोले वार-वार तो लवार सगरे[28] कहै।
ढिग जाइ वैठत ही[29] ढीठ[30] दूर[31] वैठ कहै
अप्रगल[32] तहा कैसी[33] भात[34] कर[35] कै[36] रहै।

---

४३. १ ख करैं। २ ख कपटि। ३ ख. सुच। ४ ख. यहि। ५ ख केसो। ६ ख सुर। ७ ग सौं। ८ ख. नीठोर। ९ ख खोले। १० ख दिन। ११ ख. सु। १२ ख. वातम। १३ ख वोषी। १४ ग. सु। १५ ग मतहीन। १६ ख. सौं, ग सु। १७ ख. असमरथ। १८ ख. यहि। १९ ख केसो। २० ख कुन। २१ ग. जो। २२ ग. करि। २३ ख अक।

४४. २४ ख मोन, ग. मौंन। २५ ख. वेंठ। २६ ख मुक। २७ ग नांव। २८ ग. सगरैं। २९ ग. कहै। ३० ख ढीग, ग ढीठ। ३१ ख दुर। ३२ ग. अप्रगलम। ३३ ख. केसी। ३४ ख भाति। ३५ ख करी ग करि। ३६ ख के।

छिमाकर[1] रहै तो[2] डरप[3] स्यार[4] कहै[5] सव[6]
वरावरी[7] करै[8] कहैं[9] नीच के लखन है[10] ।
देवीदाम कहै जे पराए[11] भए चाकर हैं[12]
ते विचारे कहो कौन[13] भात के सुख[14] लहै[15] ॥ ४४ ॥

वडेन[16] के सीस पै तनक[17] तिनका लेत[18]
ताहि थिर[19] तासो वावे[20] वडे प्रीत के पनै ।
सावधान भए जन माधव[21] लो[22] भूले[23] नाहि[24]
प्रान याकै[25] काजै[26] देहि[27] ऐसे[28] सुख[29] सो[30] सनै ।
देवीदास अव सुनो[31] नीचन की ऐसी गति[32]
कोन[33] भात कीजै[34] हाथ वैसे[35] उनकै मनै ।
प्रान हू लु[36] देकै उपकार हि करै जो कोउ
ताहि खलु[37] तिनका को किनका कीये[38] गनै ॥ ४५ ॥

---

१ ख. छमाकरी, ग छमाकरि । २ ख. के वैठे तो । ३ ख. डपै । ४ ख. सार । ५ ख कहे । ६ ख सर्वे । ७ ग वरावीरी । ८ ख. ग करे । ९ ख कहि । १० ख. हैं । ११ ख. परायें । १२ ख. हैं । १३ ख कहों धो विचार कुन । १४ ख सोख । १५ ख. लहे, ग लहैं ।

४५. १६ख वडन, ग वडेनि । १७ ख ग तनकु । १८ ग लत । १९ ख. थीर/ग थर । २० ख बाठे । २१ ख ग मावध । २२ ख लुग, ग. लौं । २३ ख भूली । २४ ख. नाहे । २५ ख जीके । २६ ख काज । २७ ख. दे देहि । २८ ख येंसों । २९ ख. सोख । ३० ग सुं । ३१ ग सुनो । ३२ ख. गत । ३३ ख को । ३४ ख फिजे । ३५ ग बंसे । ३६ ख. लौं । ३७ ख खत्ती । ३८ ख. किए ।

वहै[1] नर वहै[2] नाव[3] वहै घर वहै गाव[4]
वहै[5] कुल इन[6] मैं[7] तें एक हू न चलिगो[8]।
वेई गुन वहै बल वेई[9] बोल वहै बुध[10]
वेई सगे मित्रन मैं एक नहि हलिगो।
हा हा[11] एक[12] अरथ विहीन कैसो देखीयतु[13]
छिन[14] माहि गुन को समूह[15] मानो गलिगो[16]।
वहै उन लोगनि[17] को[18] ओर सो[19] लगन लागो[20]
देवीदास वहै[21] अग[22] साग मो बदलिगो[23] ॥ ४६ ॥

तप[24] तो[25] पतन[26] सील[27] जस को अमर जान
यह[28] जीय आनि दान चित[29] चाहियतु है।
बडे जे[30] महीप[31] सातो[32] दीपन[33] के दीपक[34] से
बिना दान कहु[35] अैसे दान[36] पाइयतु है।

---

४६ १ ख. वहे। २ ख. चहे। ३ ख. नाम। ४ ख. गाम। ५ ख. वहे। ६ ख हिन। ७ ख मौं। ८ ख. लीगौ। ९ ग. वेई। १० ग. बुधि। ११ ग हाइ। १२ ग. एकु। १३ ख देखियत। १४ ख. छीन। १५ समुह। १६ ख गलीगौ। १७ ख लोकन, ग. लोगन। १८ ख. ग. कौं। १९ ख. सु। २० ख लाग्यौ, ग लागौ। २१ ख. वहें। २२ ग आग। २३ ख. वदलीगौ, ग. वदलगौ।

४७. २४ ख ग तन। २५ ख कौं, ग तौ। २६ ग तपन। २७ ग सीत। २८ ख. यहि। २९ ख. चीत। ३० ख. जै। ३१ ख. महाप। ३२ ग सो तो। ३३ ख दीपनी। ३४ ख दिपक, ग. दीनक। ३५ ग. कहूं। ३६ ख दा।

बलि[1] की[2] तो पीठ सिव मास अविनास भयो
जगदेव देखो[3] देह यो लुटाइयतु है।
देवीदास करन की खाल ही खलक[4] जानै[5]
दधीच के हाड़ गोड अजो गाइयतु[6] है ॥ ४७ ॥

ऊजरे[7] महल नांहि[8] पालखी वहल[9] नाहि
चहल पहल नाहि[10] होम की[11] हवन सी।
माते गजराज[12] नांहि[13] मांगनै[14] की लाज[15] नाहि[16]
कवि को समाज नाहि[17] दीसै[18] अरि वन सी।
देय नाहि[19] खाइ[20] नाहि[21] जोरत अघाय[22] नाहि[23]
देवीदास कहै वह[24] वस्तु[25] है[26] वमन[27] सी।
घने दुख जोरी घने दुखन सो[28] राखतु[29] है
यहै[30] जो पै सपदा तो आपदा कवन सी ॥ ४८ ॥

---

१ ख बल। २ ख. कि। ३ ख देख्यो, ग देखौ। ४ ख. जगत, ग खल।
५ ख. जाने। ६ ग. गाईतु।

४८ ७ ख उजरे। ८ ख नांहे। ९ ख वल। १० ख नांहे। ११ ख कि।
१२ ख गजरा। १३ ख नाहे। १४ ख. मागवे। १५ ख लाजा।
१६ ख नाहे। १७ ख. नाहे। १८ ख. दिसें। १९ ख नाहे। २० ख. खाम्रे,
ग खाय। २१ नाहे, ग नाही। २२ ख अघाम्रे। २३ ख नाहें।
२४ ख वहे। २५ ख ग वसु। २६ ख दे। २७ ख ववप ग ववन।
२८ ख स। २९ ख राखत। ३० ख यह।

सूम[1] की उदारताई दाता[2] की[3] कृपनताई[4]
वचन[5] की चतुराई[6] कहो[7] को वखान है ।
मागने की हलकाई गुन की[8] सुभगताई
घोरा[9] की[10] तताई ताहि[11] कैसै[12] उर आन[13] है ।
मीत मिलै की सिलाई मान की[14] रुखाई[15] और
वोल[16] की[17] मिठाई[18] देवीदास सुख दान है[19] ।
कुच की[20] कठोरताई अधर[21] की मधुराई[22]
कविता[23] की[24] सरसाई जान है सुजान है ॥ ४९ ॥

वैठो[25] सठ सूम मद[26] पीयें[27] घूमवो[28] करे[29]
मरोर[30] नार[31] पीठ दै न[32] दीठ[33] जोर हू सकै ।
आछो[34] गुन[35] जोर जाइ[36] जोम सो[37] सभा मै वैठ[38]
वैसे[39] वा पवीस[40] सो कविस[41] वाद ही[42] वकै ।

---

४९ १ ख दाता । २ ख सुम । ३ ख. कि । ४ ख. कृपनताई । ५ ख. ग क्रोध । ६ ख तखनताई, ग. तपनताई । ७ ग. कहौ । ८ ख कि, ग. सी । ९ ख घोरे । १० ख कि । ११ खततारताई । १२ ख. केसे । १३ ख ग. आनि । १४ ख कि । १५ ख. ग. रुसाई । १६ ग. वैल । १७ ख कि । १८ ख मीठाई । १९ ख हैं । २० ख कि । २१ ख. अधुर । २२ ख. मधुरताई । २३ ख कवता । २४ ख. कि ।

५० २५ ख वेठो ग. वैठौ । २६ ग घूम । २७ ख. पीए । २८ ख. धुमवो । २९ ख फर । ३० ख मेरोर । ३१ ख. नारी । ३२ ख देन । ३३ ख दिठ, ग, दोठ । ३४ ख आछो । ३५ ख गुन । ३६ ख जाम्रे ३७ ख सुं । ३८ ख. वंठे । ३९ ख वेंसे । ४० ग समीस । ४१ ख कवी । ४२ ग. हा ।

सुदर सरुप मृदु[1] लोइनी[2] तरुन तूं[3] तो
तीखन[4] कटाछ तानि[5] तानि[6] तन[7] कुं तकै[8]।
लेती[9] मन मुसकै[10] सु[11] पुस[12] कोउ ओर वह[13]
देवीदास क्यो[14] रिकाय[15] तु सकै नपुंसकै ॥ ५० ॥

सुदर सुघर मृदु[16] आखर मधुर तर[17]
मनोहर मोदकर गुन सो समेत[18] है[19]।
काहू[20] कविराज की अवाज है अमृत रूप
जामैं[21] भारी भारती[22] कलोल मोल लेत है[23]।
ताहि[24] सुनि कूर[25] कहै[26] हु तो मूर समझ्यो न[27]
निज[28] दोष ओर माक[29] देवे कु[30] सवेत[31] हैं।
देवीदास जैसै ढीली[32] चोली[33] देख सूकी नार[34]
हिरदो न खोजै[35] दरजी हि[36] दोष[37] देत[38] हैं ॥ ५१ ॥

---

१ ख. अग। २ ख लोयनी। ३ ख तुं। ४ ख. तीछन। ५ ख. कटाछन सौं। ६ ख तान। ७ ख. तिन। ८ ख तकें। ९ ख. लती। १० ख. मुसकुं। ११ ख सौं। १२ ख. पुरस। १३ ख. वहै।–१४ ख. कु। १५ ख ग. रीझाय।

५१ १६ ख. मृदुं, ग. मृंदु। १७ ख. तरु। १८ ख समेंत, ग. समेति। १९ ख हैं। २० ख काहु। २१ ख. जामे। २२ ख. भारति। २३ ख हैं। २४ ख ताहिन। २५ ख. कूरि। २६ ख. कें। २७ ख. मूरख मजोन, ग. मूर समझ्यौ। २८ ख. नीज। २९ ख. माहे, ग. माहि। ३० ख. कों। ३१ ख. ग सचेत। ३२ ख. ग. टीलो। ३३ ख चौलि, ग चोली। ३४ ग नारि। ३५ ख. खोंजो। ३६ ख [illegible]। ३७ ख दोस। ३८ ख देतु।

दावानल[१] दारिद[२] की देह माहि[३] दो[४] लगै तो[५]
सोउ[६] तो सतोप वार ले के सियराइयै[७] ।
आपने अद्रिष्ट पर हारि मारि[९] बैठ[१०] रहै[११]
वादि[१२] जाच[१३] जाच कोउ[१४] काहे को[१५] सताइयै[१६] ।
हाय[१७] जब आय[१८] बैठे[१९] सजन समीप लोग[२०]
अतिथ निरास मागनोऊ[२१] फिर[२२] जाइय[२३] ।
तिनको[२४] धिकार सुनै[२५] कानन मैं दो लगै सु[२६]
देवीदास कहै कहो[२७] काहे सो[२८] बुझाइयै[२९] ॥ ५२ ॥

प्रहिलै[३०] तो[३१] आगलै[३२] सो[३३] प्रीत कर[३४] परनाम[३५]
पदवी[३६] को[३७] पहुचावै[३८] ह्वै[३९] कै[४०] परकाजु[४१] सो[४२] ।
करि[४३] सनमान ले[४४] समान ताहि बैठै[४५] वह
गरमा[४६] कु[४७] पाइ[४८] जव होइ[४९] नैक[५०] साजु[५१] सो[५२] ।

---

५२. १ ख दावादल । २ ख ग. दारद । ३ ख. माहे । ४ ग. दू । ५ ग जो । ६ ख. सौं । ७ ख. सीअ्रराईअ्रै, ग. सियराईयै । ८ ख. अदुष्ट, ग अद्दष्ट । ९ ख. डार, ग डारि । १० ख वेठ । ११ ख. रहे । १२ ख वाद । १३ ग. जाचि । १४ ग कोऊ । १५ ग. कौ । १६ ख ग सताईयै । १७ ख. हाये । १८ ख हाये । १९ ख वेठी । २० ख. लोक । २१ ग. मागनौउ । २२ ख. फीर । २३ ख जाईअें । २४ ख तीन को । २५ ख सुने । २६ ख. श्रु । २७ ख काहो, ग. कहौ । २८ ख काहु, ग काहे सौ। २९ ख. बुभाइयै ग बुझाईयै ।

५३. ३० ख पहिर्ले । ३१ ग तौ । ३२ ख. आगला, ग. आगले । ३३ ख सु । ३४ ख करी, ग. करि । ३५ ख परीनाम, ग. परिनाम । ३६ ख. पदवि । ३७ ख. कौ, ग कु । ३८ ख पहुचावें । ३९ ख वें । ४० ख. कें । ४१ ग परकाज । ४२ ग सौं । ४३ ख कर । ४४ ख. प्रति मे नहीं है । ४५ ख. वेठे । ४६ ख. ग गरमा । ४७ ख को । ४८ ख पाये । ४९ ख. होए । ५० ख नेंक । ५१ ग. साज । ५२ ख सु ।

हलके[1] उठाइ[2] ऊंची पदवी[3] को[4] पहुचावै
नीचो[5] जु कीजै[6] गरवो[7] होइ[8] सिरताजु[9] सो[10] ।
देवीदास तासो[11] कित राज[12] होइ[13] चाकर के[14]
गुन को[15] न जांनै राजा होइ बुतराजु[16] सो[17] ॥ ५३ ॥

वार वार वहुत जतन कीयै[18] वेरु[19] हू मैं[20]
पैले तै परम कष्ट तेल पुनि पावैगो ।
काहू[21] एक काल करि[22] कोउ[23] एक कै हू फेर
मरु की मरीचका मै[24] प्यास हू बुझावैगो[25] ।
पुहमी पहारू पर पूरन[26] परजटै[27] तै[28]
कदाचित सोध कै[29] सुसा[30] को सींग[32] ल्यावैगो[33] ।
देविदास कहै[34] तीन लोक असो कोउ नाहि[35]
कैहू[36] भांत[37] करि[38] कै[39] मुरख[40] समझावैगो[41] ॥ ५४ ॥

---

१ ग. हुलकं । २ ख. उठाओं । ३ ख पदवि । ४ ग कु । ५ ख नीचे, ग. नोचौ ।
६ ख किजें, ग कीजै । ७ ग. गरवौ । ८ ख होय । ९ ख सीरताज, ग. सिरताज ।
१० ख ग सौ । ११ ख. तासु । १२ ख कवितराज, ग. कतराज ।
१३ ख. होयें । १४ ग. जो । १५ ख. ग कौं । १६ ख बतराजु, ग. बुतराज ।
१७ ख ग सौ ।

५४. १८ ख. कियें । १९ ख वारं, ग वारू । २० ख मे । २१ ख. काहुँ ।
२२ ख. कर । २३ ख कीऊं । २४ ख मे । २५ ख. बुजावेंगौ । २६ ख. पुरन ।
२७ ख परजट । २८ ख तें । २९ ख कें । ३० ग. सुसै । ३१ ग कौ ।
३२ ग सींगु । ३३ ख लावेंगो । ३४ ख क । ३५ ख नाहे । ३६ ख. किहु ।
३७ ख भांति । ३८ ख. कई । ३९ ग. प्रति मे नहीं है । ४० ख. मूरख ।
४१ ग समुझावैगो ।

भोरन[1] की[2] भीर भई आम पास आन छई[3]
जान्यो[4] यह राजहंसी[5] महू[6] फूल महक्यो।
सूवा जानै[7] स्वाद फल फूल फाल खैहैं[8] हम
ग्रीध्र[9] जान्यो[10] मास[11] को[12] समूह[13] देख[14] गहक्यो[15]।
देवीदास कहै जान्यो हसनि कमन खंड
वाट के बटोहीन[16] को[17] चित लोभ लहक्यो।
ए रे पापी वृथा वढि[18] निपट[19] निकाम[20] सठ
सेमर[21] के रूख[22] तैं[23] अभागे कोन[24] डहक्यो ॥ ५५ ॥

नालसि[25] मिलत[26] जग जीवन सु[27] प्रीत राखै[28]
सीतल सभाव[29] देख[30] तीन ताप को नसै[31]।
मित्र[32] कोउ दोउ[33] देखै[34] फूल[35] उठै आछी[36] भात[37]
को सहि[38] धरे है सुभ वासना लीयें लसै।

---

५५ १ ख. मोरन, ग. भौंरन। २ ख. कि। ३ ख सई। ४ ख जानौ। ५ ग. राजीव। ६ ख ग. समूह। ७ ग. जांन। ८ ख खेंहै। ९ ख गटीघ, ग गीध। १० ख. जानी। ११ ग. मास। १२ ख को, ग कौ। १३ ख. समुह। १४ ग देखि। १५ ख ग गहक्यो। १६ ग बटोहीनि। १७ ग कौ। १८ ख. वटि, ग. वटि। १९ ख. नीपट, ग निपाट। २०. ख. नीकाम, ग निकांन। २१ ख सेवरे। २२ ख. रुख। २३ ख. तें। २४ ख क्यो, ग कौंन।

५६ २५ ख नालस। २६ ख. मीलत। २७ ख. सौं। २८ ख राखें। २९ ख सोमाव। ३० ख. देखें, ग. देखै। ३१ ख. कौन सौ, ग. कौन सै। ३२ ख मीत्र। ३३ ख. दोत। ३४ ख देख। ३५ ख फुंल। ३६ ख. अैसी। ३७ ग मति। ३८ ख सह।

देवोदास कहै उर सग्रह गुन को गहै
दड को कठोर मुह मधु के लीयें[1] रसें[2]।
अैसै[3] कुल[4] कमल के गुन होइ[5] जहा यह[6]
निहचै[7] है तहा छोड़[8] कमला कहा वसैं[9] ॥ ५६ ॥

पांनी[10] तें[11] कमल भयो तातै कमलासन सु[12]
कमलासन ते[13] जगु[14] देत[15] है दिखाई[16] कों[17]।
तोन लोक लोकनाथ विश्व ब्रह्मड वीच
ताको[18] मूल[19] पांनी जीव जात[20] के सहाई को[21]।
तो सो वडो ह्वै कै[22] कोउ अैसो काम करै अैसी[23]
काहे उपमा रे लहि[24], पीरन पराई को[25]।
जाल मै वधाइ[26] सरनागत[27] निजगत भयो
धिक[28] तोय तोकु[29] तेरी इतनी वडाई[30] को[31] ॥ ५७ ॥

---

१ ख लीअें। २ ख रसें। ३ ख असे। ४ ख. कुल। ५ ख. हायें।
६ ख येंहि। ७ ख नीहचै, ग निहचो। ८ ख. छोडि। ९ ख. वसें।

५७ १० ख पानि। ११ ख तें। १२ ख सों। १३ ख. तेहे। १४ ख जग।
१५ ग. देतु। १६ ख वीखाई। १७ ख ग. कौं। १८ ख. तोको
१९ ख मुल। २० ख. जत। २१ ख ग कौं। २२ ख. ब्रह्म। २३ ख. अैसी
२४ ख. दखी। २५ ख ग कौं। २६ ख बधायें। २७ ख. सरनागतन
२८ ख. धीकौं, ग धिकु। २९ ख. ठौंकु ग तोकौं। ३० ख वगाई
३१ ख ग कौं।

पहिलै विवादै विवहार धन को न कीजै[१]
जाचीयै न तापै आय मागै ताहि दीजियै[३]।
मित्र[४] के घर[५] मैं घरनी सो मिल[६] वैठियै[७] न[८]
हँसियै[९] न दूर[१०] वसीयै[११] न छोरू लीजियै[१२]।
कोउ भेद पावै तो न भूलै[१३] देवीदास कहै
मन की दुराइयै[१४] न[१५] तातो[१६] भयै[१७] खीजियै[१८]।
प्रीत खोयो चाहियै तो कीजियै[१९] परसपर[२०]
प्रीत राख्यो[२१] चाहियै[२२] तो इतनी[२३] न कीजियै[२४] ॥ ५८ ॥

जिन के[२५] उदार चित गाव-गाव वीच[२६] मित्त[२७]
पूरे[२८] गुनवत सवही[२९] के सुखदात है[३०]।
रूप के उजारे नैन[३१] तारेनि[३२] मैं[३३] राखि लीजै[३४]
वोलन मैं[३५] मोल लेत ग्रैसी मुख वात[३६] है[३७]।

५८. १ ख वीवाद। २. ख. कीजे। ३ ख. दिजीयें। ४ ख. मीत्र। ५ ख. घेर। ६ ख मील, ग. मिलि। ७ ख. ग. वैठीयै। ८ ख. म.। ९ ख. हसीयें। १० ख दुर। ११ ख. वसीये। १२ ख. लिजीयें, ग. लीजीयै। १३ ख. भुंले। १४ ख. दुरायई। १५ ख. ना। १६ ख. ताते, ग. तातौ। १७ ख. भए। १८ ख. खीजीयें, ग. खीजीयै। १९ ख. किजीयें। २० ख पर पर। २१ ख. राखो। २२ ख. चाहियें। २३ ख ईतनी। २४ फाजीयें।

५९. २५ ख जीनके। २६ ख. विच। २७ ख. मीत्र, ग. मेत। २८ ख पुरे। २९ ख हि। ३० ख. है। ३१ ख नेंन। ३२ ख. तारन। ३३ ख में। ३४ ख राखीजे। ३५ ख मे। ३६ ख ग वात। ३७ ख. हें।

साथ लागे[1] सुख फिरै[2] लछि[3] लागी रुख फिरै[4]
भाग खुलै[5] जहा को[6] तहाई चल[7] जात[8] है[9]।
कापुरष गुनहीन[10] दीन[11] मन नीच नर
तात की[12] तलाई वीच वैठे कीच खात[13] है ॥ ५९ ॥

जनम[14] तै नेह[15] हु न करै[16] वहु[17] नीको नर
उदासीन अति ही बुरो[18] न मनभावनो।
नेहु[19] करि[20] वालक ज्यो[21] गेह[22] सो[23] मिटारि[24] डारै[25]
वह भारी लागै मोहि[26] मन को[27] भयावनो[28]।
देवोदास कहै[29] जैसै जग[30] को जनम अव
देखन[31] मै[32] तादस[33], लागै[34] न अकरावनो[35]।
आछे भले देखत हो कै हूं फेर फिर[36] गई
आखन को जेसो नरु[37] लागत डरावनो[38] ॥ ६० ॥

---

१ ख. लागी। २ ख. फरें। ३ ख. लछ। ४ ख. फीरें। ५ ख. फुले।
६ ख कि, ग. कौं। ७ ख. चले। ८ ग जातु। ९ ख हे। १० ख गुन हिन।
११ ख दिन। १२ ख. कि। १३ ख. चवात, ग चखातु।

६०, १४ ग जन्म। १५ ख नहुं। १६ ख. करें। १७ ख. वहें, ग. वहु।
१८ ग बुरौ। १९ ख नेह। २० ख कर। २१ ख. जं। २२ ख. गीह।
२३ ख. सुं। २४ ख विडार। २५ ख डारें। २६ ख. मोहे। २७ ग. कौं।
२८ ख. ग. भयावनौ। २९ ख. कहें। ३० ख. गज। ३१ ख. देंखत, ग देखत।
३२ ख नं। ३३ ख ताईस, ग तादस। ३४ ख. लागें। ३५ ख अकरानवौ।
३६ ख ग फेर फेर। ३७ ख. नर। ३८ ख. ग. डरावनौ।

आए गुनी[1] जानि दुरा[2] सह बैठ रह्यौ[3]
परलोक काजै[4] धन साथै धरि लेउगौ[5]।
बिना[6] अपराध ज्यौं[7] साधु[8] कौं[9] सतायौ अब
जीतै[10] तीन[11] लोकन कौ राज करि[12] लेउगौ[13]।
बुरीन तें[14] बच्यो[15] नाहि[16] सुकृत[17] तें सच्यो[18] नाहि
देवीदास जान पनौ साथै मार देउगौ[19]।
आए सरनागत[20] ते आरत ते राखे नाहि
अब पुरषार्थ हि लेकै थार देउगौ[21] ॥ ६१ ॥

पढ़े[22] गुनी[23] गुन[24] पाठ[25] चातुरी निपुन[26] पाठ[27]
कीजियै[28] न सेलो[29] सब साहू जो सहू[30] भरी ।
बीरन[31] बिराने[32] द्वार गए को सुभाव यह[33]
अपमान[34] मान[35] साहु केरी करी बहू[36] री ।

---

६१. १ ख. गुनी । २ ख. दुराये । ३ ख. रहो । ४ ख. ग. काजे । ५ ख. लगयो, ग, लेगयो । ६ ख. बीन । ७ ग. साधु । ८ ख. ग. नैं । ९ ख. ग संताप । १० ख जीवे । ११ ख तिन । १२ ख कर । १३ ख. लेगयो । १४ ख बुरीन सें, ग बुरी तीनें । १५ ख बचो । १६ ख. नहीं । १७ ख. सुकृतं । १८ ख सचा । १९ ख. दें गयो, ग देइगा । २० ख सरनागत ग. सुरनागत । २१ ख दें गयो ।

६२. २२ ख. पढ़े । २३ ख गुन । २४ ख. गुनी । २५ ख. पाय । २६ ख नीपुन । २७ ख पाठे । २८ ख. कीजीअे । २९ ख सेलो । ३० ख. ग. सहू । ३१ ख बारन । ३२ ख बीराने, ग. बीराने । ३३ ख यहे । ३४ ख मांन । ३५ ख. अपमान । ३६ ख. ग बहु ।

कूर[1] पै[2] कुकवि[3] चले जात[4] हैं[5] सभा के वीच[6]
तोको जो अटोक देवी[7] काहू[8] पल दू[9] करी ।
ठाढो गज दरवाजै कूकरी सभा के वीच[10]
कूकरी सु[11] कूकरी रु[12] तू करी सो[13] तू करी ॥ ६२ ॥

देवीदास[14] सभा वीच पढै सुक[15] से[16] सुकवि
रूप आछे परगुन की[17] गरूर[18] पकरै[19] ।
लेहु पट[20] पढो जु[21] ताही पै लडावै भूप[22]
तव वे पीयूप से अमोल वोल वहुरै[23] ।
कहा भयो काहू[24] जो कीयो[25] न सनमान कोउ
पढो[26] थो[27] कहै न तोर कोउ[28] जीभ जकरै[29] ।
काक से[30] कुकवि है कुजाइ[31] गहि बैठै तो वे
कानन सताइवे को[32] काइ[33]–कोंइ[34] न करै[35] ॥ ६३ ॥

---

१ ख कुर। २ ख पें। ३ ग. कु कवि। ४ ख जीत। ५ ख. हें
६ ख. विच। ७ ख देवि। ८ ख काहु। ९ ख. दु।
१० ख दरव्याजे ठाढो गज कुंकरी समा कें विच, ग दरवाजै ठाढौ गज कूकरी
समा कै वीच। ११ ख. सों। १२ ख. हें। १३ ग सु।

६३ १४ ख देविदस। १५ ख सुक। १६ ख. सु। १७ ख. कि। १८ ख. गरु।
१९ ख पकरी। २० ख. पटं। २१ ख ग. पढौजु, पढौजू। २२ ख भुप।
२३ ख. करें, ग बो करें। २४ ख काहु। २५ ख कीऔ। २६ ख. पढे।
२७ ख. प्रति मे नहीं है, ग यौं। २८ ख. रहेंगे, ग. रहेगे। २९ क डाकरें, ग. जकरें।
३० ख सु। ३१ ख कुजायें। ३२ ग. कु। ३३ ख. कायें। ३४ ख काय।
३५ ख करें।

देवन[1] दरस[2] नाहि[3] दया देव तरु को न[4]
काम कामधेनु[5] को न[6] इहै[7] निरधार[8] है[9] ।
पारजात[10] को न[11] पीर[12] चीता[13] चिंतामनि को न[14]
ओर[15] कोन[16] ऐसो तीन लोक मै उदार[17] है ।
गरज[18]–गरज[19] चारयो[20] वोर[21] ते लरज पूरी
धारन सो[22] धरनी कहुँ[23] न वार पार है[24] ।
देवीदास कहैं धन्य परजन देव जगु-[25]
जाइवे को[26] मेरै जानै[27] तेरे[28] सिर भार[29] है ॥ ६४ ॥

सूम कहै धन ले[30] धरा मैं[31] धरि[32] राखीयै[33] सु[34]
अहै[35] काम जबै[36] हि[37] विपनि[38] आनचूर[39] है ।
दानी[40] कहै काहे को विपत आवै धनीनि[41] कै[42]
देवीदास पूरन[43] पुरष है सो पूर है ।

---

६४. १ ख देवनें, ग देवनै । २ ख. ग दरद । ३ ख नाही । ४ ख ग. कौन ।
५ ख कामधेन । ६ ग. कु । ७ ख. यहे, ग. यहे । ८ ख. नीरधार, ग निरधारु ।
९ ख हैं । १० ग पागरजात । ११ ग कौन । १२ ग पीरु । १३ ग. चिंता ।
१४ ख. कौन । १५ ख ओर । १६ ख कौन, ग कौन । १७ ग उदारु ।
१८ ग गरजि । १९ ग गरजि । २० ख चार, ग च्यारयो । २१ ख ओर ।
२२ ख ग सों । २३ ग कहू । २४ ख. हे । २५ ख जग । २६ ग कु ।
२७ ग जान । २८ ग तीरे । २९ ख सीरभार, ग सिरभारु ।

६५. ३० ग लें । ३१ ग मे । ३२ ख धरी । ३३ ख राखीयें, ग राखिअें ।
३४ ग जु । ३५ ग एहे । ३६ ख जब । ३७ ग हे । ३८ ख वीपती, ग विपत ।
३९ ग आनचुर । ४० ग दान । ४१ ग धनीन, ग धनीनि । ४२ ग के ।
४३ ग पुन्न ।

सूँम कहै वह तेरो पूरन पुरष है जो[१]
कुपत[२] होइ सचित[३] विहान[४] तु विसूर है।
दानी कहै मूढ[५] परमेसर[६] कुपित भये[७]
धरनी[८] में सच्यो[९] तेसु वातें कहा दूर हैं ॥ ६५ ॥

दानि[१०] कहै[११] सुनि[१२] सूम जु तू[१३] धन
देय[१४] न खाय[१५] कहा मत पायो[१६]।
सूम[१७] कहै[१८] धन[१९] देउ न खाउ सो[२०]
दारिद[२१] के डर को[२२] डर पायो[२३]।
तूं जु[२४] लुटावत रैंन[२५] दिना
वरदान कह्यो[२६] किनि[२७] है बहकायो[२८]।
देवी[२९] कहै धन देतु हो[३०] याही[३१] तें
मोहि[३२] को[३३] दारिद[३४] को[३५] डर[३६] आयो[३७] ॥ ६६ ॥

---

१ ख. जो, ग. जा। २ ख. कुपुत, ग. कुपित। ३ ख. ग. संचत। ४ ग. विहार। ५ ख मुढ। ६ ख. परमेश्वर, ग परमेसुर। ७ ख भए। ८ ग. धरती। ९ ग साच्यों।

६६ १० ख दानी, ग. दान। ११ ख. कहे। १२ ख सुन। १३ ख तो। १४ ख दई, ग देई। १५ ख. खायें, ग खाइ। १६ ख पाअें। १७ ख सुम। १८ ख कहे। १९ ग. धनु। २० ग सु। २१ ख ग दारद। २२ ग. के। २३ ख. दरपायौं, ग डरपायो। २४ ख ग ज। २५ ख. रेन। २६ ख कहों। २७ ख किन। २८ ख बहरकयौ। २९ ख दांनी। ३० ख देत हुं, ग देत हों। ३१ ख याहि। ३२ ख. ग. दारद। ३३ ख. कें, ग के। ३४ ख दर, ग. डर। ३५ ग. कौ। ३६ ख. दर। ३७ ख. पाम्रो, ग. पायो।

पानी को भटभटात भेक[1] जामैं[2] डोलत है
कीच[3] वीच[4] काछवे दुरावति[5] है[6] देह नैं[7]।
पक माहि[8] मुरझांनी[9] मछरी तरफरात
कैंकरे गरत माहि रहे गहि गेहनैं।
देवीदास कहै सूके सर को विलोक[10] एक
विना घना-घन कोन दुख इनके[11] हनैं[12]।
ताही मैं[13] मतग माते[14] थाह अवगाहतु[15] है[16]
पल माहि ऐसी कीनी[17] महाराज[18] मेह नैं[19] ॥ ६७ ॥

हरे-हरे तरवर[20] सूकेन[21] के साथ[22] देखो[23]
चटक[24]-चटक[25] वरे[26] दावानल दाहे[27] तैं[28]।
वेलन[29] समेत ऊँचे ऊँचे रूख[30] वाय[31] वेग
जर तैं डराक[32] देकैं[33] पल माहि[34] ढाहे[35] तैं।

---

६७. १ ख भेके। २ ख जा मे। ३ ख किच। ४ ख कीच। ५ ख दुरावत, ग दुरावत। ६ ख हैं। ७ ख नें। ८ ख माम। ९ ख मुरजानी। १० ख वीलोक। ११ ख ईनके। १२ ख हनें। १३ ख. ग मे। १४ ख मातें। १५ ख अवगात। १६ ख हे। १७ ख किनी। १८ ख म्हाराज, ग माहाराज। १९ ख ने।

६८. २० ख ग तरोवर। २१ ख फॅनी, ग. सूकेनि। २२ ख पाय। २३ ख देख्यो, ग देखा। २४ ग चटकि। २५ ग. चटकि। २६ ख परें। २७ ख दहि, ग दाहे। २८ ग. तें। २९ ख बेलन। ३० ख रूग, ग रग। ३१ ख वाये। ३२ ख ग जगाक। ३३ ख देषे, ग देकें। ३४ ख माहे, ग मोहि। ३५ ख टाहे।

एरे वीर[1] मेह वाही[2] नेह की सुरत[3] कर[4]
देवीदास कहै तरु तेंही[5] सीच[6] वाहे[7] तें[8]।
एक तो नीरद[9] निरदई[10] नीर देइ नाहि
और दूजे[11] विजुरीन[12] मारति[13] है[14] काहे तें ॥ ६८ ॥

ए जु इन[15] वृछनि[16] के ओडा[17] ओडी डारये[18] जु
उत्तम[19] अबोटी[20] वोटी[21] सोरभ[22] अमापु[23] हैं।
वरन[24]-वरन[25] पान पल्लव[26] पलिग[27] वेलि[28]
सुखन[29] सो केज[30] रहै[31] मिट्यो[32] परितापु[33] है।
ओरन के दुख दूर करे खरे खरे ये जु[34]
फूले[35] फले हरे[36] तन तन की[37] न दापु[38] है[39]।
देवीदास करुनापरायन परमदान
पालक पयोद एक तेरो परतापु[40] है ॥ ६९ ॥

---

१ ख. बीर। २ ख वाहि। ३ ख सूरत, ग सूरति। ४ ख. करी। ५ ख तेहि। ६ ग. सींचि। ७ ख चाहे। ८ ख. ग. तें। ९ क. ग. नीरव। १० ख नीरदेई। ११ ख दुजें। १२ ख बीजुरीनी, ग. विजुरीनि। १३ ख मारत, ग. मारति। १४ ख हे।

६९ १५ ख ईनो, ग इनि। १६ ख वृछनी। १७ ख. अेडी, ग ओडी। १८ ख डारीयें। १९ ख उतम। २० ख अचौटी, ग अचोटि। २१ ख वोटि, ग. वोडी। २२ ख. सोरभ, ग सौरभ। २३ ख अमाप, क अमावु। २४ ख वरख, ग वर। २५ ग कारन। २६ ख. पलव, ग पल्ल। २७ ख पुलींग, ग पुल्लगे। २८ ख वेलीं। २९ ख सौखन। ३० ख ग फेल। ३१ ख ग रहे। ३२ ख ग. मीञ्यो। ३३ ख ग परतावु। ३४ ख एजु। ३५ ख फुले। ३६ ख हर। ३७ ग कों। ३८ ख दाप। ३९ ख. हें। ४० ख परताप।

कैतो[1] देह पाइ[2] धरै[3] धरम के[4] ग्रैसे पाइ[5]
ग्रासन छिनाइ[6] लेत[7] जातै पुरुहूत[8] को।
कै लो[9] करि[10] उद्यम[11] ग्रपार धन जोर कर[12]
घूरत[13] कहाइ[14] काम करलै सपूत[15] को।
कैतो मनकामना ग्रसेष सुख भोगवै कै[16]
मुकति[17] को[18] मिलै[19] जहा[20] मूल[21] पाचभूत को।
इनमै[22] तै एक हू वनै न तो जनम पाइ[23]
छेरी के[24] गरै[25] को थन दूध[26] को न मूत[27] को ॥ ७० ॥

रे नभ मैं[28] निरवल[29] तेरे ग्रव कन काजै
घने दिन[30] रह्यो ऊँचै[31] चोच उचकाइ[32] रे।
वापी कूप सर सरितानि सो न पहिचान
मांगन पै ग्रैसैनि पै मागन वलाइ रे।

---

७० १ ख केतो। २ ख. पाग्रो। ३ ख धरो। ४ ख. क। ५ ख पाजे।
६ ख छीडायें, ग. छिडाइ। ७ ग. लेह। ८ ख. पुरहुंत। ९ ख केतो, ग कैतो।
१० ख कर। ११ ख उदम। १२ ख. कोरी, ग. कोरि। १३ ख घुरत।
१४ ख कहायें। १५ ख ससुत। १६ ख के। १७ ख मुकत। १८ ख. कु।
१९ ख मीलें। २० ख. जोहां। २१ ख. मुल। २२ ख ईनमे।
२३ ख पाया। २४ ख. कों। २५ ख गर्रा। २६ ख दुध। २७ ख मुत।

७१. २८ ख ग नभ मै। २९ ख नीरमल। ३० ख दिन, ग दिनि।
३१ ख चेंचु, ग चैंचु। ३२ ख उचि उचकाय, ग उचकाई।

घन तेरो जल पूर[1] तो मै भरपूर[2] रह्यो[3]
इनहू[4] को कोनहू[5] करन हाइ[6]-हाइ[7] रे।
देवीदास चातक[8] मे[9] जातक को दयाहीन
आपनो[10] मधुर मेघ धुनि[11] तो सुनाइ[12] रे॥ ७१॥

केते दिन चातक के जात के निचात[13] भए
गात भए सिथल[14] त्रिसा[15] जोर[16] तरसै[17]।
तरफे तिलमिलाइ[18] निवले[19] विलविलाय[20]
आयो पूछ[21] पूछ[22]-चाही[23] बारद को दरसै[24]।
देवीदास कहै[25] हाय निरदई[26] घन नीरद[27]
कहाई[28] धिक तोको तेरे[29] या घनर सै।
जावन[30] मे[31] आसुन की [बूंद] जितै जितनी गिरी
गिन[32] उतनी यो बूंद[33] बार हू[34] न[35] बरसै[36]॥ ७२॥

---

१ ख भरपूर। २ ख पुरहोई। ३ ख तेहूँ। ४ ग इतेहू। ५ ग. कौतहू।
६ ख. हाय। ७ ख हाय। ८ ख चाक। ९ ख. ग कों। १० ख अपनी।
११ ख ग धुन। १२ ख सुनाय।

७२. १३ ख चीचात। १४ ख सीथल। १५ ख. त्रीसा, ग त्रीषा।
१६ ख सौं जोर, ग सौं जोर। १७ ख. ग. तरसे। १८ ख. तिरमीलायें।
१९ ख नीवलो। २० ख बीलायें, ग विलविलाय। २१ ख पुछ। २२ ख पुछ।
२३ ख. वाहि। २४ ख दरसें। २५ ख कहे। २६ ख नीरदइ।
२७ ख घन निरद, ग नीरद। २८ ख कहाअ, ग कहाइ। २९ ख तेरे तोकों।
३० ख जुचित, ग जाचत। ३१ ख मे। ३२ ग गिनि। ३३ ख बुद।
३४ ख बारद। ३५ ख नां। ३६ ख. वरछें।

तैसो[१] दुख नाहि देत मागवो वटाउन[२] पैं[३]
ताहू[४] मै कनुका[५] कहु[६] माइबो न[७] पाइबो[८] ।
तैसो[९] दुखं[१०] नाहि[११] देत[१२] माया बस[१३] हीन[१४] सूम[१५]
गुनहीन[१६] आगें[१७] दीन[१८] ह्वै कै गुन गाइवौ[१९] ।
देवीदास[२०] जिनसो[२१] वरावर को बैठनो[२२] व्है[२३]
सोइवो[२४] रु गाइबो[२५] रु खेलवो रु खाइबो[२६] ।
तैसो दुख देतु है तिन के द्वार जाइ भोह[२७]
सहै है जिन की तिनै[२८] दीनता दिखाइवो[२९] ।। ७३ ।।

जासो[३०] अति प्रीत[३१] सव[३२] जग मैं विदित[३३] होइ[३४]
जासो पुनी वैर होइ दसो दाय[३५] छीजीयै ।
देवीदास कहै जो[३६] जहाज[३७] को[३८] विनज[३९] करै[४०]
धूरत कहावै[४१] ताकी[४२] वातै नांहि[४३] धीजीयै[४४] ।

---

७३. १ ख तेसो, ग तैसो । २ ख. वठऊन । ३ ख. मे । ४ ख. ताहु । ५ ख कनूंका । ६ ख काहु, ग कहूँ । ७ ख. मायावो, ग. माइवौ । ८ ख. पायेवौ, ग पाइवौ । ९ ख तेसो । १० ख दुख । ११ ख. नाहे । १२ ख ग. देतु । १३ ख. ग द्रव । १४ ख हिन । १५ ख सुम । १६ ख अहिन्नेके । १७ ख आगें । १८ ख दिन । १९ ख गायवौ । २० ख. देविदास । २१ ख ग. जीन सौं । २२ ख वेठवो, ग बैठवौ । २३ ख हें, ग है । २४ ख. सोयवो । २५ ख गाम्रवो । २६ ख. खायेवौ । २७ ग भौंह । २८ ग. तिन्है । २९ ख दिखाईवौ ।

७४. ३० ख जासौं, ग जासौं । ३१ ख. प्रीती । ३२ ख सरव । ३३ ख. वीतीदिन । ३४ ख होयें । ३५ ग. दाइ । ३६ ख जी । ३७ ख जीहानी । ३८ ख. कौं । ३९ ख वीनज, ग वनिज । ४० ख. करे । ४१ ख कहावे । ४२ ख ताकि । ४३ ख. नहि । ४४ ख. विजीयें ।

जांनै कहुँ पहिलै[1] कदाप[2] चोरी करी[3] होइ
कुल सील[4] रहत[5] विचार कर[6] लीजीयै।
सुख[7] चाहो[8] आपको[9] तो सबकूं सदा की सीख
इतने[10] मनुष्यन सो सगत न कीजीयै[11] ॥ ७४ ॥

क्रूरन[12] सो[13] मन के[14] गरूरन[15] सो[16] मलीनि[17] मो
पातकी[18] सो तातकी सो[19] मिलवै[20] न कीजीयै[21]।
वोल के चलचले[22] सो[23] मीत के छलछले[24] सो
वेद–पथ[25] के हले[26] सो कवहू न धीजीयै[27]।
चोर[28] सो[29] परवधू के रत वरि[30] मतवारे
हीन[31] जातनि[32] सो[33] तजि जोलो[34] जग जीवीयै।
देवीदास देह धरै सुख चाहो[35] आपको[36] तो
इतने[37] मनुष्यन[38] सो[39] सगत न कीजीयै[40] ॥ ७५ ॥

---

१ ख पहिले। २ ख कदापी, ग. कदापि। ३ ख. करि। ४ ग. वीत। ५ ग. रहित। ६ ख. करी। ७ ख सोखै। ८ ख. चाहें। ९ ख. आप कु। १० ख. ईतने। ११ ख. किजीयें।

७५. १२ ख कुरन। १३ ख सो, ग. सौं। १४ ख. क.। १५ ख. गरुन, ग. गरुरनि। १६ ख. ग सौं। १७ ख. मलीन, ग. मलीननि। १८ ख. पातकि। १९ ख सु। २० ग मिलीवैं। २१ ख पीजीयें, ग. पीजीयै। २२ ख. बलचलें, ग. चलचलै। २३ ग सौं। २४ ग छलछल। २५ ग पथ। २६ ख. वहले। २७ ख. धीजीयें। २८ ग चौर। २९ ग सु। ३० ग करे। ३१ ख. हिन। ३२ ख जातन। ३३ ख ग. सौं। ३४ ग लु। ३५ ख चाहें। ३६ ख आपकौं। ३७ ख. ईतने। ३८ ख. मनुष। ३९ ख सु। ४० ख किजीयें।

कौन[1] दिना कमल वुलावत[2] है भौरन को[3]
रूखन पखेरन[4] को[5] वे जु[6] मडरात[7] है[8]।
सारस बुलाए[9] कहो कवहू[10] सरोवर[11] नैं
सरितान[12] छडीयै[13] जव हाई[14] समात[15] है।
चद्रमा की चीठी[16] कव गई[17] थी[18] चकोरन को[19]
घन के वुलायै[20] विन[21] चातक[22] चिचात[23] है।
देवीदास कहै त्यो सुकवि गुनी लोग[24] एतो[25]
दुनी माहि[26] जही[27] कछू देखै तहा[28] जात[29] है[30] ॥ ७६ ॥

एक जात दोउ एक रूख[31] पर वैठ[32] कही[33]
एक सी[34] लगत देह हलकी[35] न भारी तैं[36]।
एक ही वरन[37] एक ठोर वस वास[38] हुतो[39]
अतर रती न हुतो देख[40] परकारी तैं।

---

७६ १ ख. कुन। २ ख बुलात। ३ ग कु। ४ ग पखेरनि। ५ ख. कु। ६ ख. पिजु। ७ ख मडरातु। ८ ख हे। ९ ख. बोलायें। १० ख ग कबहूवौं। ११ ख सरोपर, ग. स्रोवर। १२ ख. सरीतान, ग सलितानि। १३ ख. छाडीऐं, ग छाडियैं। १४ ख जुहाई। १५ ख. समातु। १६ क ग. चीरी। १७ ख. ग. आई। १८ ख ग. ही। १९ ग. कु। २० ख बोलाए, ग. वुलाई। २१ ख. वीन। २२ ख. चातुक, ग चातुक। २३ ख. चीचाहें, ग चिचातु है। २४ क. लोक। २५ ख. एता, ग. एतौ। २६ ख. माहे। २७ ग. नही। २८ ख. ग तहीं। २९ ख. जातु। ३० ख. हे।

७७. ३१ ख. रुख। ३२ ख. बेठे। ३३ ख कहि। ३४ ख. से। ३५ ख हलकि। ३६ ख. तें। ३७ ख खरव। ३८ ख बसबोस। ३९ ग. हुतौ। ४० ख देखे, ग देखैं।

कह्यो[1] ह्वां कहत कोन[2] कोयल कवन काक
मूक ह्वै रह्यो[3] न कूर[4] करी चूक[5] भारी[6] तें।
देवीदास कहै अनवोलै[7] ही भरम हुतो[8]
वायस[9] वलातकार वोल वाट पारी तें[10] ॥ ७७ ॥

लोक माहि[11] कोयल[12] को आदर[13] अधिक देख
लवा कहै भूले[14] लोक याके सतकार मैं।
आधी[15] कूर[16] कारी दारी वोल भारी भारी जग[17]
मोह्यो[18] तै कु कलिवारी[19] जानैं[20] तेरे पार मैं।
एरे वीर[21] लवा कहे लोक मोसो मया करै
काहे तै धो तोहि[22] भूज[23] खातु[24] है अहार मैं[25]।
काहे[26] की वहसि[27] मोहि तोहि[28] देवीदास कहै
मेरो[29] घरु अव[30] पर तेरो घर[31] भार[32] मैं[33] ॥ ७८ ॥

---

१ क कीहा ग. कौहौ। २ ख. कुन। ३ ख रहो। ४ ख. कुर। ५ ख. चुक। ६ ख. मारि। ७ ख. अनखोले। ८ ग. हुँतौ। ९ क. वाइस। १० ख. लें।

७८ ११ ख. माज को। १२ क. कोइल। १३ ग. आदरु। १४ ख. भुलें। १५ ख आधि। १६ ख. कुर। १७ ख. ग. जग। १८ ख. मोहों, ग. मोह्यो। १९ ख. कलयारी। २० ख. जान, ग. जाने। २१ ख. खीर। २२ ख तोइ। २३ क भजु। २४ ख खात। २५ ख में, ग. मे। २६ ख. काहि। २७ ख खहिस, ग वहसि। २८ ख. तोहे। २९ ख मेरे। ३० ग आंव। ३१ ग घरु। ३२ ग. जारू। ३३ ख. मे।

फाल[1] रहे[2] रुख फल भूख[3] लागे[4] तोर[5] खाहि[6]
प्यास लागै अनयास[7] भरे नदी[8] नारे है।
फल की[9] पुहुम[10] पूरी सेजले[11] बिछाइ[12] राखो[13]
गेहु[14] वास[15] भर भरे एई भुज भारे[16] है।
गिरी[17] गुहा गेह मति गेहनि सु नेह कीयै[18]
देवीदास कहै जोगी जग[19] जाल जारे हैं।
जो[20] इनै[21] डुलावत[22] है वार वार तेतो इन[23]
याके कारबार वार वार–वार मारे[24] हैं।। ७९ ।।

सजन कुलीननि के पहिलें तो कोप[25] नाहि[26]
कदाचित करै छिन[27] एक मैं परिहरै[28]।
छिन[29] मै[30] न छूटै[31] कोप काहू एक कारन तें
तो[32] पर[33] विरोधी[34] के विकार को[35] नही धरै।

---

७९. १ क. फल। २ ग रहै। ३ ख भुख। ४ ख. लमे। ५ ख. तारे, ग तोरि। ६ ख. खाह। ७ ख अनग्रास। ८. ख नदि। ९ ख कि। १० ग पुहिम। ११ ख क. सेकले। १२ ख वछायें। १३ ख. राखें। १४ ख गेद, ग गेंडु। १५ ख. ग वासुं। १६ ख. भाएं। १७ ख गोर। १८ ख. ग. किए। १९ क. जल, ख जगम। २० ख. ज, ग जे। २१ ख. ईन्ह, ग इन्है। २२ ख. मुलावत, ग. डुलावतु। २३ ग. ईन। २४ क. मेरे।

८०. २५ ख. कोंप, ग. कोपु। २६ ख. नाहै, ग नहि। २७ ख. छीन। २८ ख परहरें। २९ ख. छीन। ३० ख. मे। ३१ ख छुटें। ३२ ग तो। ३३ ख. पे। ३४ ख. विधि, ग विराधी। ३५ ख कुं।

देवीदास बडेन[1] के कोप के फल[2] की वेर[3]
छोड कै विकार वैरी[4] हू कु[5] सुख सौ[6] भरै।
बडेन की वेरुख की बोलन गरागरी सु
नीचन[7] के नेह की बराबरी तऊ करै ॥ ८० ॥

अैसो कोउ न मिले[8] हौ जासौ[9] मिल[10] बैठ[11] दुख
पेट को कहीजै सुनि[12] लेइ[13] होत भेट[14] मैं।
ता घरी[15] घटाइ[16] आधै[17] आध के[18] घटाइ[19] लेइ[20]
अैसो अस[21] नाव तो न आवै कोउ जेट मैं[22]।
देवीदास दीसै[23] सब स्वारथ के[24] परायन[25]
तिन सौं दुख भीखवे[26] को लीयो न गमेट मैं[27]।
वात के वभूला[28] पेट भीतर ही उठे अरु
रसना के लार आइ[29] जात[30] रहैं[31] पेट मैं[32] ॥ ८१ ॥

---

१ ग. वडेनि। २ ख. खल। ३ ख बेर। ४ ख. बेरी। ५ ख. कौं।
६ ख सो। ७ ख. नीचत, ग. नीचनि।

८१ ८ ख मीले। ९ ग जासु। १० ख. मील, ग मिलि। ११ ख बेठ।
१२ ख सुन। १३ ख लेय। १४ ग भेंट। १५ ख परी। १६ ख. घटायें।
१७ ग आधें। १८ ख को। १९ ख बठायें, क वटाइ। २० ख. लेहि।
२१ ग. आस। २२ ख जेमटे। २३ ख दिसें। २४ ख. परा। २५ ग परायनि।
२६ ख जीखवें। २७ ख मे। २८ ख. ग. बलूला। २९ ख. ओय।
३० ख जातु। ३१ ख प्रति मे नहीं है। ३२ ख. मे।

करतार मारे[1] जग[2] आइ कै[3] जनम हारे
कोरन[4] परे हैं धिक[5] उनके[6] समाज को[7]।
पीरन पराई एक स्वारथ परायन है
पेट ही के चेरे जे चुमावें[8] बीज[9] भाज को[10]।
अैसो[11] कोऊ विरलो[12] विरच नै वनायो है जु
पेट हू परायें काजें[13] लेत नीर नाज को[14]।
आपनें[15] उदर काजें[16] पीवें[17] वाडवाग जोई
सोई पानी पीवत पयोद[18] पर काज को ॥ ८२ ॥

कैतो[19] जग जोग करि[20] कैतो सुख भोग करि[21]
कैतो गुण[22] रूप करि[23] नाम ही[24] कढाई[25] हैं[26]।
कैतो दान सील[27] ह्वै कै जोरावर[28] डील ह्वै कैं
सग्मौर[29] ह्वै कै गीतनि[30] गवाइ[31] है।

---

८२. १ ग मारैं। २ क. ग जन। ३ ख. आयें के। ४ ख कारन, ग कोरनि। ५ ख ग धिकु। ६ ख. नर के। ७ ख ग. कौं। ८ ख चुमायें, ग. चुमावें। ९ ख विज। १० ख कु, ग कौं। ११ ख एसो। १२ ख बीरलो। १३ ख काज। १४ ख कु। १५ ख अपने, ग आपनो। १६ ख काज। १७ ख पीए। १८ ख पयोंध।

८३. १९ ख केतो। २० ख. कर। २१ ख कर। २२ ख. गुन। २३ क कर। २४ ग ह। २५ ख कमाय। २६ ख. हे। २७ ख. सिल। २८ ख. जोरावर की। २९ ख सीरमोर। ३० ख. गीतन। ३१ ख. गवाय।

कै तो जग[1] पूज[2] ह्वै कै तप तेज पुज ह्वै कै
इन[3] मैं तै एक हू जस न[4] उपजाइ[5] हैं[6]।
जाये[7] ग्रैसे[8] पूतहि सपूती[9] भई है तो देवी-
दास कहै कहो वाभ कोन[10] सी कहाइ[11] है ॥ ८३ ॥

चढी[12] दोउ[13] ग्रनी भीर परी है[14] घनी मैं जीव
जाको लोन[15] जगत मैं खायो तैं[16] ग्रघाइ[17] है।
ताकै[18] हेत देकै[19] प्रान टूक-टूक[20] ह्वै कै पर-
लोक मैं वडाई ग्रोर देवलोक[21] पाइ[22] है[23]।
टालो[24] दीयैं[25] ग्रागर निकालो छोड हेरे[26] कुल
कालोंई लागैगो[27] ग्रांन पर्‌यो भलो दाइ[28] है।
देवीदास भीर परैं[29] भोन जैहै निकरि[30] कै[31]
फिर[32] ग्रैसी[33] जीकर[34] कै कोन[35] काज ग्राइ[36] है ॥ ८४ ॥

---

१ ग. जगत। २ ख पुज। ३ ख ईन। ४ ख न जस, ग जसं न। ५ ख उपजाए। ६ ख. हे। ७ ग. जाय। ८ ख एसें। ९ ख सेंपुति, ग. सेपूति। १० ख. कुन। ११ ख कहाय।

८४, १२ ख चढि। १३ ख. दोनू, ग. दोऊ। १४ ख. हे। १५ ग. लौंन। १६ ख. तें। १७ ख. अघाये। १८ ख. ताके। १९ ग दे। २० ख टुक टुक। २१ ख. देवेलेंक। २२ ख. पाए। २३ ख हे। २४ ग टालो। २५ ख. दिएं। २६ ग. हेरे। २७ ख लगें। २८ ख. दाए। २९ ख. भीर के। ३० ग. नीकरि। ३१ ख के। ३२ ख फेर, ग. फिरि। ३३ ख. वेंहु। ३४ ग. करि। ३५ ख. कुन, ग कौन। ३६ ख आज।

साच[1] को[2] सरम को[3] सरन आयें[4] पालक को
सरधा को धरम को कुल जैसी[5] चाल है[6]।
सूरन[7] को[8] मीलन को[9] और दान सीलन[10] को
जाननो[11] दया को सतोष हीन[12] हाल है[13]।
रज को[14] रु तेज को[15] भलाई को मिताई[16] को
भगत-भावना[17] को पति-लीन वाल[18] है[19]।
देवीदास कहै देस-देस फिर[20] दीप देख्यो[21]
आज काल[22] कलि[23] माझ[24] इन को[25] दुकाल है ॥ ८५ ॥

पडित[26] गुमाई साह[27] साहिव सरस[28] सूरि[29]
सिरदारन[30] की[31] लीक लोक मैं[32] वढाई हैं[33]।
राजा राव उमराव रायजादे[34] साहिजादे
देसपति महीपति[35] दोलत चढाई है[36]।

---

८५. १ क ग सम्व। २ ख. कौं, ग को। ३ ग. को। ४ ख आए। ५ ख स। ६ ख. हैं। ७ ख. सुरन। ८ ग को। ९ ग कौं। १० ख सील। ११ ख ग जानन कौ। १२ ख हिन। १३ ख हैं। १४ ग. कौं। १५ ग कौ। १६ ख मींताई। १७ ग भाव-भावना। १८ ख खाल। १९ ख हैं। २० ख ग दीप। २१ ख. देखौं, ग देखौ। २२ ग कालु। २३ क काल। २४ ख माज। २५ ख. कुं, ग कौं।

८६ २६ ख. पडीत। २७ ख. साहि। २८ क सरम। २९ ख सुर। ३० ख सीरदारनी। ३१ ख कि। ३२ ख मे। ३३ ख वढाईयै। ३४ ग राइजादे। ३५ ख म्हीपती। ३६ ख हे।

घनवारे पूतवारे[1] सुदर सरूप[2] वारे
जिन[3] जाइ[4] सागर लौं[5] कीरत[6] वढाई है[7]।
देवीदास ए तो सव दुख ही के भाजन है[8]
ऊपर नैक[9] सुख की[10] कलई[11] चढाई है ॥ ८६ ॥

पल मैं[12] पंखेरू अैंच[13] लीये हैं अकास मैं[14] तै
ऊची कहा पुहची[15] है[16] देखियो[17] सलाकई[18]।
वन मै[19] तै वाघवर व्योरनि[20] तै विषधर[21]
छोडै[22] नही[23] क्योहू देऊ[24] काहू की तलाकई[25]।
ओडै जल जाय[26] मिस[27] जलचर[28] अैंचि[29] लीने
कीने[30] आपु[31] वस[32] जहा उतनी जलाकई[33]।
देवीदास कहै कोउ कबहू वचै[34] न क्योंहू
देखो तीनो[35] लोक काल कर की[36] चलाकई[37] ॥ ८७ ॥

---

१ ख. गुतवारे। २ ख सुजान, ग सजुत। ३ ख जीन। ४ ख. जायें। ५ क लु। ६ ख. कीरति, ग. कीरुत। ७ ख. पढाईयें। ८ ख. हें। ९ ख नेकु। १० ख. कि। ११ ख कल।

८७. १२ ख मे। १३ ख. अेंच। १४ ख. में। १५ ख पुह्चो, ग पुची। १६ ख. हे। १७ ख देखोयें, ग. वेखियो। १८ ख. सलकई। १९ ख मे २० ख चौरनी। २१ ख. वीषघर। २२ ख ग. छोडे। २३ ख. नहें। २४ ख देतू। २५ ख. तलाई। २६ ख जाए। २७ ख. मीसी, ग मिसि। २८ ख. जलचर्राहे। २९ ख. अेंच। ३० ग कीनं। ३१ ख. आप। ३२ ख. बस, ग. वसि। ३३ ख जलाकई। ३४ ख वनं। ३५ ख. तिन, ग. तीनो। ३६ ख. कि। ३७ ख चलाईकई।

लोभ सो[1] न औगुन पिसुनता[2] सो[3] पातक न
साच सो न तप नाही[4] ईरषा सो दहनो[5]।
सुचि[6] सो[7] न तीरथ[8] सुजनता[9] सो[10] सेवक नं
चाह[11] सो[12] न रोग तीन-लोक माहि रहनो[13]।
धरम सो न मित[14] न दुरत[15] जीव-घातक सो
काम[16] सो[17] प्रबल नाहि दतब[18] सो[19] लहनो।
चिंता[20] सो[21] न साल देवीदास तीन लोक कहै
सतोष सो[22] सुख नाही[23] कीरत[24] सो[25] गहनो[26] ॥ ८८ ॥

जो[27] तू[28] यह[29] लोक की[30] फिकर करै तो तू[31] सुनि[32]
ह्या[33] की[34] चिंता[35] चित[36] तोहि नैक[37] हू[38] न करनी[39]।
पिछले[40] करम तेरे तिनही[41] बनाय[42] राखी
सोई तोहि इहा अवै[43] भोगवनी भरनी।

---

८८. १ ख. ग सौं। २ ख पीसुनता। ३ ख सौ। ४ ख. नांहि। ५ ख देहनौं, ग दहनौ। ६ ख सुच। ७ ग सौ। ८ ख. तिरथ। ९ ख सुजानता। १० ख ग. सौ। ११ ख साह। १२ ख. सु। १३ ग. रहनौ। १४ ख मित्र। १५ ग दुरत। १६ ख ग कांम। १७ ख. सु, ग सौ। १८ ग दत्तव। १९ ख ग सौ। २० ख चिता। २१ ख. सु। २२ ख सु। २३ ख नाहि। २४ ख किरत। २५ ग सौ। २६ ख गहनौ।

८९. २७ ख जोइ। २८ ख तुही। २९ ख प्रति मे नहीं है, ग याहि। ३० ख कि। ३१ ग तूं। ३२ ख. सुन। ३३ ख या। ३४ ख कि। ३५ ख चिंता। ३६ ख चीत। ३७ ग तनको। ३८ ख हु, ग मे नहीं है। ३९ ख ग घरनी। ४० ख पीसले, ग पीछले। ४१ ख तीनहि। ४२ क वनाइ, ग बनाइ। ४३ ख अब।

पूछ वेद च्यार देख मन मै विचार[1] अव
आवै मो[2] कबूल कर[3] नाहि[4] क्यों[5] हू टरनो ।
देवीदास जान कहै यहै पुरषारथ[6] है[7]
मानम को चिंता[8] परलोक ही की[9] करनो ॥ ८९ ॥

देख दूर ही[10] तै[11] देवीदास कहै पनघटो[12]
पथिक[13] पियासे[14] थल जल को[15] विचार कै[16] ।
आतुर ह्वै आइ[17] आगै[18] देखै तो ह्या[19] अंधकूप[20]
ढूक–ढाक[21] देखै नीर निहुराइ[22] नार[23] कै ।
ग्रीषम[24] की[25] प्यास भए तैसेई[26] उदास पथी
बैठ आस–पास[27] चले[28] रोइ[29] दुख वार कै ।
अश्रुपात[30] कौन जात आवत जे देखै ते ते
टहकै न कै कै[31] यह[32] कूवा मारवार[33] के[34] ॥ ९० ॥

---

१ ख बीचार । २ ख. सो, ग. सु । ३ ख करि । ४ ख. नाहे । ५ ख प्रति मे नहीं है । ६ ख. पूरखारथ, ग पुरषाय । ७ ख हे । ८ ख चीता । ९ ख. कि ।

९० १० ख हु । ११ ख. ते । १२ ग. पनिघटी । १३ ख. पथक । १४ ख. पीयासे । १५ ख सौ, ग. कौं । १६ ख के । १७ ख. आये । १८ ख. आगे । १९ ख या । २० ख अधकुप । २१ ख ढुकटाक, ग. ढूकटाकि । २२ ख. नीहुराय, ग निहुराइ । २३ क नारि । २४ ख ग्रीषम । २५ ख कि । २६ ख तेसे हिं । २७ ग पासु । २८ ख. तो लु । २९ ख. रोए । ३० ख. आसूपात, क असुपात । ३१ ग कौ, ख क्यों । ३२ ख यही । ३३ ग. मारवारे । ३४ ग. कौ ।

तापै[1] कहा मागीयै[2] जु मागन[3] को[4] देख काहू[5]
काम लागै[6] कहै[7] हाथ कह्यो[8] न करतु है।
जाकी है सुजस रूपी चादनी चहु[9] दिसानि[10]
ले-ले उसरत नही[11] देत उसरतु है।
ताको द्वार[12] तको[13] देवीदास जोरमा[14] को[15] पति
तीनू लोक माहि[16] जाको[17] हाथ पसरतु[18] है।
माग[19] परमेसर[20] पै पलकै[21] पसीजै[22] वह[23]
घनो दान[24] दै[25] है क्यो जु दान[26] रसरतु हैं ।। ६१ ।।

भाग याको[27] बाप करतूत[28] महतारी[29] मिल[30]
वेटी[31] भई ताको[32] नाम जग मैं वडाई है।
पाली[33] गुनी धावर निबुध दूध पोष देकै
दिन-दिन वढी देवीदास सुखदाई[34] है।

---

६१ १ ख नापें। २ ख मागीयें। ३ ग मागनें। ४ ख. कु, ग कों। ५ ख काहु। ६ ख ग. लागे। ७ ख कहें। ८ ख. कहा। ९ ख. ग. चिहु। १० ख दिसान। ११ ख नाहि। १२ ख. धार। १३ ख ताको, ग. तकौ। १४ ख जोरम। १५ ग कौ। १६ ख माहे। १७ ख. ताको। १८ प्रहतु ग परसतु। १९ ख ग. माग.। २० ख परमेश्वर, ग परमेसुर। २१ ख. पलकें। २२ ख पसीजे। २३ ख वही। २४ ग दानु। २५ ग दे। २६ ख मान।

६२ २७ ख याको, ग याकौ। २८ ख करतुत। २९ ग महितारी। ३० ख मिला, ग मिलि। ३१ ख. वेंटि। ३२ ग. ताकौ। ३३ ख. पारोगे। ३४ ख मुखदाई।

व्याह को विचार[1] कर[2] वडेन को[3] दैन[4] गए
वडेन के मन मांहि[5] नैंक[6] हू[7] न आई[8] है।
खोटे[9] व्याह[10] चाहै तिनैं[11] वह न कबूल[12] करें
याते जग मांहि[13] क्वारी एक यह[14] वाई[15] है॥ ६२ ॥

भूखेन[16] को[17] भोजन थकेन को[18] सुथांन रूप
आसरो निरासरे को[19] निघरे[20] को घरु है।
ठौर[21] है[22] निठोहरे[23] को[24] आदर निआदरे[25] को
देवीदास अैसेन[26] को[27] कीरत अमरु है।
मूल दल फूल फल वल कल पल्लवनि
देह देत कसकैं न मान हू[28] अजरु है[29]।
तातो[30] सीरो[31] सम कीयैं सब ही को[32] सुख दीयें
तरु की तरुज लीयैं ते कलपतरु है॥ ६३ ॥

---

१ ख. वीचार। २ ख ग. करि। ३ ख कु, ग कैं। ४ ख देन। ५ ख. ग वहै। ६ ख. नेकु। ७ ख. हु। ८ ख. पाई। ९ ख ग. छोटे। १० क वाहि। ११ ख. नीद्रे। १२ ख. कवुल। १३ ख. माहे। १४ ख याहि, ग. यहै। १५ ग खाई।

६३. १६ ख भूखन। १७ ख को, ग कु। १८ ख थू। १९ ग कौ। २० ख ग. नघरे। २१ ग ठोर। २२ ख. हे। २३ ख. नीठारहें। २४ ख कों, ग कौं। २५ ख ग. अनादरे। २६ ख. यैसे, ग अैसे। २७ ख. कि। २८ क कू। २९ ख प्रति मे ये दो पक्तिया नहीं है। ३० ग. तातैं। ३१ ग सीरौं। ३२ ख सु।

पहिले[1] तो वादर[2] व्है[3] वाइ[4] भर्‍यो वावरो है[5]
वीछी[6] खायो वूढी[7] वेस बुरो विकरार है।
मदिरा[8] कछुक[9] पोयै[10] विजया[11] चढाये[12] वीज
वीसेक[13] धतूरे[14] ही[15] के खायै[16] वेसुमार[17] है[18]।
ताहू मैंक[19] अच[20] पाग्यो ताते[21] डोल्यो[22] भाग्यो-भाग्यो
एते पर भूत[23] लाग्यो[24] अैसो ऊ[25] प्रकार[26] है।
देवीदास कहै ताको[27] वैंदन[28] बुलावो[29] कोउ
करो धो विचार[30] वाको[31] कोन[32] उपचार[33] है[34] ॥ ६४ ॥

दाव लै[35] वकार[36] पाच पाच पुनि[37] चूके[38] मति
छोड[39] दै[40] चकार[41] च्यार[42] च्यारनि[43] मैं वसीयै[44]।
छोडे मत[45] द्वै[46] दकार[47] छाडि[48] दै[49] दकार[50] सात[51]
तीननि[52] मै[53] हिल[54]-मिल[55] अति ही न[56] घुसियै[57]।

---

६४ १ ख. पहीलें। २ ख. वदर, ग. वादर। ३ ख. व्रे। ४ ख. जायें। ५ ख. व्रे। ६ ख. वीछा। ७ ख. वुढी। ८ क मदिरा। ९ ग कछूक। १० ख. पाए, ग पायै। ११ ख वीजिया, ग विजयी। १२ क. चढावै। १३ ख विसक। १४ ख धतुर। १५ ख. ग हु। १६ ख खाए। १७ ख. समारे, ग. समारु। १८ ख हे। १९ ख मेक। २० क एच। २१ ख ताती, ग तातै। २२ ख. डोलें, ग डोलौ। २३ ख भुत। २४ ख लागो। २५ क कु, ग न। २६ ग प्रकारु। २७ ग ताकौ। २८ ख वेदहिं ग वैंदनि। २९ ग वुलायौ। ३० ख वीचार। ३१ ख कहो, ग वाकौ। ३२ ख कुन, ग कौंन। ३३ ग. उपचारु। ३४ ख हें।

६५. ३५ ख. लें। ३६ ग वकार। ३७ ख. पुनी। ३८ ग चूकै। ३९ ख छाड, ग छाडि। ४० ख ग दे। ४१ ख चकर। ४२ ख चार। ४३ ख. चारन, ग कारन। ४४ ख वसीए, ग. वसीयै। ४५ ग मति। ४६ ख. दें। ४७ ख दका। ४८ ख छाड। ४९ ग दे। ५० ख विकार। ५१ ख साती। ५२ ख तेंनन, ग. तीनन। ५३ ख. मे, ग नै। ५४ ग हिलि। ५५ ख मील, ग. मिलि। ५६ ख. हिंन। ५७ ख. गासीयें, ग. गसियैं।

हहा[1] च्यार[2] परिहर[3] तीन[4] हहा मान लेत[5]
भूल[6] छ मकार माझ[7] कवहू न रसीयै[8]।
देवीदास कीजै[9] द्वै[10] उकार[11] ले भकार तीन
एक[12] ही नकार माझ[13] सारो गुन नसीयै[14] ॥ ९५ ॥

भारती[15] के पूरे[16] रूरे ऊजरे[17] अनेक गुन
जिनै[18] देखै[19] राजन[20] दीठ नही टरि[21]सकै[22] ।
अरथ के समुदाइ[23] कविराइ[24] रसना की
सीप तै[25] उपजै वडभागी[26] धरि[27] सकै।
देवीदास जैसी[28] ठोर जैसै वडे मानस पै
लीयै[29] जाहि[30] इन्है धनु तैसोई हरि[31] सकै।
कानन[32] प्रकास खरे खासे मुकता से इन[33]
कविन के वोलन[34] को मोल को[35] करि[36] सकै ॥ ९६ ॥

---

१ ख. हाहा। २ ख चार, ग. च्यारि। ३ ख परहर, ग. परहरि। ४ ख. तिन। ५ ख. लेहु, ग. लेतु। ६ ख भुल। ७ ख. माज। ८ ख. रसियें, ग रासियै। ९ ख किजे। १० ग. दो। ११ ख. हकार। १२ ग ए। १३ ख. माज। १४ ख. नासियै।

९६. १५ ख भारति। १६ ख पुरे। १७ ख. उजरे। १८ ख. जेन्ह। १९ ख. देख। २० क राजानि की। २१ ग हिह। २२ ख. तरसकै। २३ ख. समुदायें। २४ ख कविराय। २५ ख. तें। २६ ख. भागी पै। २७ ग घर। २८ ख जेसी। २९ ख. लीयें। ३० ख. जाई। ३१ ख. ग हरी। ३२ ख कान, ग. काननि। ३३ ख ईत। ३४ क वोलनि। ३५ ख कों। ३६ ख करी।

डोलै[1] नही[2] घने घरु वरणै[3] सारदा को[4] वरु
वातन सुघर स्वाल डारत[5] उदार[6] मैं[7] ।
पहिलें[8] वडाई देइ पीछै कछु लेइ[9] फिर[10]
जस कों प्रकासै तिनै राखो कर हार[11] मैं[12] ।
पुराचीन पापीन[13] तैं[14] सूम[15] से लवारिन[16] मैं[17]
जाइ[18] पर[19] करै कहा भूले[20] मन[21] भार मैं[22] ।
देवीदास एही[23] द्वै[24] ठिकाने[25] कविराजन के
आप घरवार मैं[26] के[27] राज–दरवार मैं[28] ॥ ६७ ॥

पेट को निपट सुद्ध[29] आंखन[30] लजीलो[31] ओर[32]
उर को गभीर होय[33] महा मोठो[34] मुख को ।
वाह को पगार पुनि पाय को अडिग[35] होय[36]
वोलन को साचो देवीदास सूधै[37] रुख को ।

---

६७ १ ख डोलें। २ ख. नहे। ३ ख. वरनें, ग वरनै। ४ ख के। ५ ख. डारूत। ६ ख ठडार। ७ ख मे। ८ ख. पहीलें। ९ ख लेई। १० ख फीर। ११ ख. ग हारि। १२ ख मे। १३ ख पापन। १४ ख तें। १५ ग. सूंम। १६ ग लबारनि। १७ ख. मे। १८ ख. जाए। १९ ग. परै। २० ख भुले, ग. भूजें। २१ ख मानु, ग. मनौं। २२ ख मे। २३ ग. येई। २४ ख हे। २५ ख. ठीकाने। २६ ख मे। २७ ख. क। २८ ख मे।

६८. २९ ख. सुध। ३० ख आखम, ग आखनि। ३१ ग. लजीलौं। ३२ ख. उर। ३३ ख. होए, ग. होइ। ३४ ग मीठौ। ३५ ख. अडीगा। ३६ ख. होम्र। ३७ ग सूध।

मन को उदार ढीलो हाथ को अकेलो[1] एक
काछ ही[2] को काठो है सहैया[3] सुख–दुख को।
पच्च[4] कै पितामह[5] नें[6] अैसो[7] कै सिंगारयो[8] तब
यातें कछु और हू सिंगार[9] है पुरुष[10] को ? ॥ ६८ ॥

राजा[11] हरचद हरभात[12] करि राख्यो[13] देवी-
दान याकै वदलै[14] विपति[15] मुड[16] ओडीयो[17]।
चेरी[18] याकी लिछमी[19] मुजस या को पूत दया
दान मय देह कछु[20] चूकनि[21] न गोडीयो।
विगरयो[22] न अग कछु[23] पातक[24] कीयो[25] न जात[26]
पात तै उतरयो कछु चाहत न[27] कोडीयो।
एरे या[28] सपूते स हसाई[29] काहे छोडत हो
सत कहे[30] दूखन लगावै तव छोडीयो[31] ॥ ६९ ॥

---

१ ग अकेलो। २ ख. काछहि। ३ क. ग. सहया। ४ ख. पच्च, ग. पच्चि। ५. ख पीतामह। ६ ख. ने। ७ ख. अैसै। ८ ग. सिंगारो। ९ ख ग. सीगार। १० क. पुरस।

६९ ११ ख राजाह। १२ ख. हरीभांत। १३ ख. राखो। १४ ख. बदलें। १५ ख. वीपती। १६ ग. मूड। १७ ग. ओडिओ। १८ ख चरी। १९ ख लीछमी। २० ग कछू। २१ ग. चूकन। २२ ख. बीगरो। २३ ख कछू। २४ ख. पातहु। २५ ख. कियो। २६ ग ज्यु। २७ ग. त। २८ ख या। २९ ख हसाई। ३० क. कह। ३१ ख. छोडियौ।

कृतम करूप[1] करतार[2] मारे कद रज
ओ जस के भाजन रु नाल[3] [काल] तीन[4] हालो[5] है।
आवत गुनी हि[6] देख कारे पड[7] जांहि तारे
जुरत[8] ही[9] दीठ तिन कहे[10] कवि कालो है।
उजरे[11] उदार जिनै[12] पचन[13] मै वैंठनो[14] है
जस के निकेत[15] ओर रस को रसालो[16] है।
रीझे[17] वार[18]-वार[19] मनै मेरु[20] को तिनका[21] गिनै[22]
देवीदास एतो कवि तन को तसालो[23] है[24] ॥ १०० ॥

सूरवीर[25] राखै सो तो भोगवै वसुधरा[26] कौ[27]
कविन कु आदरैगो सोई जस पावंगो।
देवीदास कहै जाकै द्वैई[28] एलवाज[29] मे है[30]
जग माझ[31] नीकी भात सोई सरसावैगो[32]।

१००, १ ग कुरप। २ क तारे। ३ ख. रुवाल। ४ क तीत। ५ ग हालौ।
६ ख न। ७ ख परी। ८ ख जोरे। ९ ख नहीं। १० ग कतौ।
११ ख उजर। १२ ख जीन्हे। १३ क पचनि। १४ ख. बेठनो।
१५ ख नीकेत। १६ ख. रसालौ। १७ ख रीजे। १८ ख वार। १९ ख वार।
२० ख मेर। २१ क. तिमुका, ग. तिनूंका। २२ ख गीने।
२३ ख ग मसालौ। २४ ख हे।

१०१ २५ ख सुरविर, ग सूरवीरे। २६ ख वसधरा, ग वसुधरा। २७ क ग नि।
२८ ख ग द्वै। २९ ख हीलवाज, ग ईलवाजे। ३० ग बै।
३१ ख माज, ग माहि। ३२ ख सरससावैगौ।

भीर परै कौन तत्र[1] लड़ै रजपूत विना
कविन कों दिए[2] विना[3] कौन[4] जस गावैगो[5]।
ठाकुर को जायो वडो ठाकुर कहायो चाहे
सा तो इन द्वैन ही को[6] अग ही[7] लगावैगो ॥ १०१ ॥

तजै[8] राजनीतै[9] करै गाजत[10] अनीतै रण
भागत अनीतै[11] घरनी तै जे[12] सत्राए है[13]।
मागनै[14] बुलावै[15] नाहि मागवै[16] बुलावै[17] ओर
भाग नै खुलावै खाइ[18] तेई मन भाए हैं।
रीझै[19] न रिझावै[20] मुरझाय[21] मुह खीज[22] उठै[23]
जानत न[24] दाए देवी जानत अदाए है।
राजा राउ[25] रानै[26] गुन गानै[27] तो न मानै मागै[28]
तव वे जमाने अव ये जमाने आए है[29] ॥ १०२ ॥

---

१ ख ग तव कौन। २ ख. ज. दिए। ३ ख वीना। ४ ख. कुन। ५ ख पावैगै। ६ ख कु। ७ ख. कौ।

१०२ ८ ख. तजें। ९ ख. राजनीतें। १० ग. गाजन। ११ ग आनीतै। १२ ख त। १३ ख. हे। १४ ख मागने। १५ ख बोलावें। १६ ख. मागने। १७ ख बुलावें। १८ ख खाई। १९ ख रिजें। २० ख. रिंजाव। २१ ख मुरजावै, ग मुरजाए। २२ ग. खिजि। २३ ख उठें। २४ ख ए.। २५ ख राम्र। २६ ख रनि। २७ ख. गंनि। २८ ख माने। २९ ख. हैं।

सपत गडोयै[1] छोडी रसोई चढीये छोडी
सुदरी मढीयै[2] छोडी सपनो[3] सो कै गयो[4]।
वूढे[5] पित[6]-मात छोडे[7] भाई विलखात[8] छोडे[9]
वेटा विललात छोडे आपन उपै गयो[10]।
घोरा खात घास छोडे यार आस-पास छोडे
ठाढे[11] दासी-दास[12] छोडे सवै दुख दै गयो[13]।
देवीदास आपनै लगै न कोउ एक[14] साथ
देखो वह[15] आपने कियै[16] ही साथ ले गयो ॥ १०३ ॥

उरग-मुरग ह्वै कै लगर-मगर ह्वै कै
दुरग[17] तुरग[18] ह्वै कै थिर जग[19] माई मै ।
नाहर लगूर ह्वै कै न्यौर[20] ह्वै कै नीर ह्वै कै
नीरचर ह्वै कै नीठ नर जोन पाई मैं[21]।

---

१०३. १ ख. गडीए। २ ख. मढीऔ। ३ ख सपनु, ग सपनौ। ४ ख. गश्रो।
५ ख. वुढ। ६ ख पीत। ७ ख. छोडो। ८ ख वीललात, ग विल्लात।
९ ख छोडो। १० ख गश्रो। ११ ख. वाढे। १२ ख दास दासी।
१३ ख गश्रो, ग गयौ। १४ ख. एके। १५ ख वहे। १६ ख. कियै, ग कीयै।

१०४. १७ ख दुरग। १८ ग तुरग। १९ क जग। २० ख. नौर।
२१ ग नीच ह्वै कै नीठ ह्वै कै नर जोनि पाई मे।

ताहू माझ[1] सुद्ध ह्वै सुबुधि[2] सभासद ह्वै कै
समझ की हद ह्वै कै सबै सरमाई[3] मैं।
एक चिता[4] मन[5] मे चरन चित[6] लाग्यो नाहि[7]
देवीदास कहै[8] वडी चूक[9] चतुराई[10] मैं[11] ॥ १०४ ॥

जंगनि[12] सिंगार[13] न्यारे[14] डील के डरारे भारे
रूप के उजारे पारे[15] बहु भोग दे घरै[16]।
ऊघ[17] से गरारे डारे गलीन के गारे चारे[18]
इतने उफारे[19] सारे काम न कछू[20] सरै।
मन भार भरचो जब गिरचो रथ[21] रेत[22] माझ
देवीदास टूट[23] पूँछ पै नाही भले परै[24]।
धीर धूर धूँसर[25] घरूक[26] कै धरा को रूप
तिहि[27] ठौर[28] कध दे धुरधरै[29] धरा धरै[30] ॥ १०५ ॥

---

१ ख माज। २ ग. बुधि। ३ ग. सरसाई। ४ ख. चीता। ५ ख. म, क. मनै।
६ ख चीत। ७ ख नाहे। ८ ख. कहे। ९ ख. चुक। १० ख. चुरनाई।
११ ख. हैं।

१०५ १२ ख जगन, ग जगनि। १३ ख सीगारे। १४ ख नोरे। १५ क. ग परि।
१६ ख घरै। १७ ख. औं। १८ ख ग. भारे। १९ ख. उफार। २० ख कछ।
२१ ख. रिथ। २२ ख रेन। २३ ख टुट। २४ ख मरें। २५ ख घसर।
२६ ख घरुक। २७ ख तीही। २८ ग. ठोर। २९ ख. धुरदरे। ३० ख. धरायरे।

एक है[1] उपाय[2] सोई मन बीच जानिवै है[3]
सब साथ चलै ओर दूनी दूनी फलैगी।
हाथी ऊट[4] गाडे खचरा पै न चलैगी देवो
ब्राह्मन[5] के हाथ पर धरैगी[6] सो चलैगी[7] ॥ १०७ ॥

भागनि[8] सो फौज[9] सग चलै[10] चतुरग चमू[10]
सुगम[11] है हाथी पर निसान हलाइवो[12]।
गोतल मैं वडे आगै कोतल[13] हू चलै ओर[14]
सुगम है माथै पर चौर[15] को[16] ढुलाइबो[17]।
तोपन के गोला चलै सैनिक[18] गिलोला चलै
चढे घोरे दोरि[19] अरि पुर[20] को जराइवो[21]।
सुगम है[22] देवी तीर तुपक चलाइवो[23] पै
कठिन[24] है ठाकुर ह्वै कीरत चलाइवो[25] ॥ १०८ ॥

---

१ ख पै। २ ख. उपाव, ग. उपाइ। ३ ख. मन मे वीचार जांने ग मन वच जानिवे है। ४ ख. ऊठ। ५ क बामन। ६ ख. धरोगे। ७ ग चलैंगो।

१०८ ८ ख भागन, ग भामन। ९ ख ग फोज। १० क चलै। ११ ख सगम। १२ ख लहलाइवो। १३ ग कोनल। १४ ख. अरु, ग. ग्रोरु। १५ ख चोर, ग चौर। १६ ख कु, ग कौ। १७ ख ढुलाअवो, ग हलाइवो। १८ ग सेनीके। १९ ख दोर। २० ख पुर, ग पुरु। २१ ख जराईवो। २२ ख सुमुग म्है। २३ ख चलायवो। २४ ख. कटन। २५ ख. चलायवो।

मानस मे[1] लछन वतीस दात[2] हू वतीस
दोउ ए समान[3] ग्रैसें राजनीत मैं कहै।
दोउ ग्राछे[4] ऊजरे है दोउ सोभा देत देवो
दोउ ग्राछे राखि कैं[5] ग्रपने हाथ मैं गहै।
दोउ एक साथी हैं[6] पैं कदाचित लखन जो
रहै तो रहेई ग्रोर दात ढहै तो ढहै[7]।
सभा माहि[8] वैठ[9] वडो मानस कहाइ[10] जव
दात काढ[11] दीने तव लखन[12] कहा रहै ॥ १०६ ॥

वहरे[13] कै ग्रागै वीन वजाइवो[14] करो ग्रोर
ग्राधरे कौं[15] ग्रारसी दिखायवो[16] न क्यो[17] करो।
ऊसर मैं च्यार[18] मास वरसवो करो न क्यो
स्वान पूछ[19] सूत[20] कै सुधार सूधी कै[21] धरो।

---

१०६. १ क. मैं। २ ख ग्ररु दांत। ३ ख सम। ४ ख. ग्राछो। ५ ख यैं।
६ ख. हे। ७ ख टहे। ८ ख माज। ९ ग बैठि। १० ख कहाय।
११ ग काढि। १२ ख. लछन, ग लखन।

११०. १३ख. वहिरँ, ग. वहरै। १४ ख ग. वजाइबौ। १५ ख. ग. कौ।
१६ ख. दीखायवो, ग. दिखाइवो। १७ ख. ग. किन। १८ ख. चार।
१९ ख. पुछ। २० ख. सुत। २१ ख. प्रति मे नहीं हैं।

मूरख[1] कै आगै ग्रैसै गुन को प्रकास वाध[2]
रचि-रचि[3] कै बनाय पचि-पचि[4] कै मरो।
देवी यो कबूल है जो पाले पड जाय पर[5]
मूरख कै पालै कोऊ कबहू भी न परो ॥ ११० ॥

आपन अकेलो आस पास सब बैरी[7] तब
दातन मे जीभ[8] जैसे[9] तैसी भात[10] रहियै।
जानियै[11] निकस[12] पैठ[13] चलीयै नरम ह्वै कै
नेह करै तो भी विसवास नही लहियै।
अनमिलै मिल्यो सो दिखाइए[14] इते पर
सतावै तो देवीदास समै पाय[15] सहियै[16]।
दाव[17] परै अैसो[18] वोल एक बोलियै गरूर[19]
मौके पर दाव[20] ले कै ढेर[21] करयो[22] चाहियै ॥ १११ ॥

---

१ ख मुरख। २ क प्रति मे नहीं है। ३ ख बाद, ग. बाद। ४ क. रच रच। ५ क. पच पच। ६ ख. देविदास यों कुबुल हें जु पालें हुं ते परो। ग देवि यू कवुल है जु पाले पड जाइ कोउ।

१११ ७ ख बेरी। ८ ख जीभ्य। ९ ख. रहै। १० ग. भाति। ११ ख. जानीयें। १२ ख नीकस, ग निकसि। १३ ख. पेंठ, ग. पैठि। १४ ख. दिखाईजें, ग दिखाइए। १५ ख. पायें। १६ ख. सहिजें। १७ ग. दाउ। १८ ख ग. एक। १९ ख जुठो। २० ख दाउ। २१ ख. ढोर। २२ ख किग्रो।

काहू के बरेंडे[1] पर[2] काग कांय-कांय[3] करै
देवीदास वह[4] वाकू[5] मारबौ[6] मनै[7] धरयो[8]।
बैनन[9] मैं[10] सुंदर सो[11] कह्यो[12] खाडो ल्याव[13] मेरो
सैनन[14] सो[15] धनुष[16] बान माग्यो[17] यो छलै[18] करयो[19]।
निधडक[20] बायस[21] वा बोल पर बैठ[22] रह्यो[23]
वह खैंच तीर[24] मारयो मही पै गिरै[25] परयो।
गिरत[26] ही[27] काग[28] कह्यो[29] मैं[30] तो सदा जीवत हू[31]
जाके बोल मर्यो[32] ताको बोल मरयो सो मरयो[33] ॥ ११२ ॥

सगति[34] सुमति होय[35] तौ[36] गुन गहै जो वाहि
सौ[37] गुन सिखाइयै तो ओगुन[38] गहा[39] करे।
लोक लीक लोपै एक पाप ही[40] की लीक[41] जाहि
ठीक[42] बात एको[43] नाही चीकनो रहा करे।

---

११२ १ ख ग. बरेंडे। २ ख. बैठो। ३ क काइ काइ। ४ ख वहे, ग वहि। ५ ख ग कु। ६ ग मारवो। ७ ख मने, ग मन। ८ ख. धरों। ९ ख बेनन, ग बैननि। १० ख. सु। ११ ग सु। १२ ख कहो। १३ ख लाव, ग लावु। १४ ख. सेनन, ग सेननि। १५ ख. ग प्रति मे नहीं है। १६ ख ग धनष। १७ ख. मागीयो। १८ ख छलैं, ग. छलु। १९ ख करो। २० ख नीधर व्है। २१ ख वायेस, ग. वाइस। २२ ख वेस, ग. बैठो। २३ ख. रहों। २४ ख. तुक। २५ ख. गिरौं, ग. गिर। २६ ग गिरते। २७ ख. मे। २८ ख काक। २९ ख कहो। ३० ख. हु। ३१ ख. ग हू। ३२ ख. ग. मरचो। ३३ ग मरयो।

११३. ३४ ख सपति, ग संगत। ३५ ख होय। ३६ ग तौ। ३७ ग सौं। ३८ ग ओगन। ३९ ख गहाय। ४० ख हि। ४१ ख. लिक, ग पीक। ४२ ख ठिक, ग तीक। ४३ ग एकौ।

लाज न कहे की अरू नेकी नही मानै वह
टेकी ओर सुनो बैठो वदिए[1] कहा करै।
सगत[2] प्रसग तै बुरो ऊ भलो होत[3] देवो
ऐसी[4] वा[5] असगत[6] को[7] सगत[8] कहा[9] करै[10] ॥ ११३ ॥

बाहिर[11] ओर ही[12] भीतर ओर हो
बाप को पूत न[13] पूत[14] है मा को[15]।
भीर परै नही[16] काहू[17] के कांम को[18]
आखर[19] एक पढ्यो[20] जिह[21] ना को।
आस करी ते निरास[22] भए देवी
नैक करयो[23] न कछू तब वाको[24]।
ठाकुर[25] ठाकुर जानत हो[26] यह[27]
ठाकुर[28] तो[29] निकरयो[30] मुलमा[31] को[32] ॥ ११४ ॥

---

१ ग वदिए। २ ख सगन। ३ ग होतु। ४ ख. असी, ग. अैसी। ५. ख. या, ग वो। ६ ख. असुगत, ग. असागत। ७ ख को, ग कू। ८ ख संपत, ग. संतन। ९ ख कहुं, ग. कहू। १० ख. करी, ग करे।
११४ ११ ख. बाहार, ग बाहर। १२ ख. हिं। १३ ख नि। १४ ख. पुंत। १५ ग. कौ। १६ ग. नही। १७ ख कोउ, ग कौऊ। १८ ख. के। १९ ख अछर, ग अछिर। २० ख पटरौ, ग पढो। २१ ग. जीहि। २२ ख. नीरास। २३ ख. नीकर्सो, ग करियो। २४ ख नींको, ग. नाको। २५ ग ठाकुरे। २६ ख हो, ग है। २७ ख यहि। २८ ख ठाकर, ग. ठाकुरे। २९ ख. तु, ग. तौ। ३० ख नीकरयो, ग निकस्यौ। ३१ ख मुलुमा, ग. मूलमा। ३२ ख. कौ, ग कूं।

ऊंचो[1] मुह किये[2] गाऊ[3]तकिया[4] सों[5] टिक[6] बैठो[7]
सब[8] में अलेख[9] बिना[10] नेह[11] मुह[12] रुसनो[13]।
तातै पानी न्हाय नित[14] नग-नग पट बांधै[15]
अबर मे तातो-मातो[16] दीसै[17] मानो[18] फूसनो[19]।
कर पीर करै[20] ताके सीस पै चवर[21] ढरै
मार्यो टिग रहै थरै कचन को[22] भूषनो[23]।
देवीदास तेज त्याग हीन सब पात[24] बन्यो
कहियो[25] विचार यह[26] ठाकुर[27] को[28] दूषनो[29] ॥ ११५ ॥

वैरीन[30] कूं हेर मारै गढ कोट पेल[31] मारै
अगजी नगज[32] डारै हीन ख्याल गोत है।
परसै[33] अमारे मारै[34] डारद दरैर मारै[35]
देवीदास ह्या जिनके[36] जस[37] के उदोत[38] है[39]।

---

११५ १ ख ऊच्यो, ग ऊचो। २ ख किए। ३ ख. ग गाउ। ४ ख तकीआ। ५ ख सु, ग सों। ६ ख टीक, ग टिकि। ७ ख बेंठे, ग बैठौ। ८ ख सु, ग सौं। ९ ख अलेख। १० ख. बीना, ग विना। ११ ग. नेह्। १२ ख मुह, ग मुग। १३ ख रोयनो, ग रुसनो। १४ ख नीत। १५ ख ग. नग पट बाधे ओर। १६ ख ग तातो। १७ ख दिसें। १८ ख. मन, ग. मनों। १९ ख फुसनो, ग फूसनो। २० ख फरै। २१ ख ग चौर। २२ ख ग के। २३ ख भुपनो, ग. भूषनो। २४ ख पात। २५ ग कहीयो। २६ ख अहि। २७ ख ठाकर। २८ ख के, ग कि। २९ ग दूखनों।

११६ ३० ख वेरन, ग वैरन। ३१ ग शेल। ३२ ख नीगज, ग. निगज। ३३ ख परसें। ३४ ख सारे। ३५ ग दारै। ३६ ख जीन के। ३७ ख जसु, ग जसै। ३८ ख उदत, ग उदोत। ३९. ख हे, ग है।

अैसै कविराजन[1] कहे[2] है[3] गुण राजनि के
ए गुन रहित गादी-तकिया न[4] सोहत[5] हैं।
ऊचो[6] मुह[7] गुरुता[8] निलेप तारु अभिषेक
पट बाध[9] चोर एतो दूखन ही होत है ॥ ११६ ॥

पचै[10] नही[11] दाल भात[12] मूंग[13] हू की[14] पचै नाही
पचै नाही[15] मिसी[16] रोटी पेट[17] अवटात[18] है।
लवा के परेवा[19] हू सो फूल आवै पलक[20] मैं[21]
फुलका[22] फुलोरी पचै नाही[23] यह बात[24] है[25]।
कढी[26] ही के चाटे[27] दूध[28] आवत[29] नही[30] है रास
देवोदास एकौ[31] चीज[32] उदर[33] न मात[34] हैं[35]।
अैसी[36] मद भूख[37]. माझ[38] देह राखिबै कुं एक
प्रभू[39] की[40] कृपा सौ[41] भारी[42] रीझ[43] पच जाति[44] है ॥ ११७ ॥

---

१ ख. कविराजनी, ग कविराजनि। २ ख कए, ग कह। ३ ग. ह्वै। ४ ग नि। ५ ख. सात हें, ग सोत है। ६ ख उचो, ग ऊचौ। ७ ख मोह, ग. मुहु। ८ ख गुग्ता, ग गुरुता। ९ ख बंध।

११७ १० ख पचे। ११ ख नहि, ग नाहो। १२ ख ग भात दार। १३ ख. मुग। १४ ख कि १५ "पचै नाही" ख प्रति मे नहीं है। १६ ख. मोसी। १७ ख पट। १८ ख कहठात, ग अहटात। १९ ख परेवा। २० ख. फलक। २१ ख म। २२ ख. फूलका। २३ ख नाहि। २४ ख. भात, ग तात। २५ ख के, ग है। २६ ख कढि। २७ ग चाटै। २८ ख दुध, ग दूद। २९ ख आतु, ग आत। ३० ख. उदी, ग नदी। ३१ ख एक, ग एकौं। ३२ ख खेल। ३३ ख. उर। ३४ ख नमात। ३५ ख. हें। ३६ ख एसी। ३७ ख भुख। ३८ ख माज। ३९ ख प्रभु। ४० ख कि। ४१ ख सें। ४२ ख. मारें। ४३ ख रीज। ४४ ख जात, ग जातु।

जाही[1] के तो[2] चाकर हो ताही[3] को[4] लुगाई तर्को[5]
उन[6] को जगारो[7] सून[8] ग्यान[9] फिर[10] रो रहा ।
जो कहोगे[11] प्रारब्ध[12] सो तो सह आवत है
आडम्बर ताड देहु[13] यहै[14] मतो[15] है महा ।
आपनी सू तोगे यहि[16] नेकौ तुम साठ जोगे
यह[17] विपरीत दीसै[18] हमें तो नयो तहा ।
ए रे भैया[19] राम कहो[20] राम सों तो छिटकाई[21]
राम की लुगाई[22] मे तो प्रीत करिवो[23] कहा ॥ ११८ ॥

जब छीर समुद्र[24] मथ्यो निकसे[25]
विस[26] लच्छ[27] सहोदर[28] है तब के[29] ।
यह[30] जानि[31] कैं साधनि[32] लच्छि[33] तजी
जु यहै[34] मन मोहत है सब के ।

---

११८. १ ख जाहि, ग. ताही । २ ग. तुम । ३ ख ताहि । ४ ख कि । ५ ख. तर्के, ग तको । ६ ख ग. वत । ७ ख. ग जमारो । ८ ख यहि, ग यह । ९ ख. गान । १० ख फिर । ११ ख. कहोगे, ग. कहोगे । १२ ग प्राव्, ग प्रारब्ध । १३ ख देकु । १४ ख यहे । १५ ख मते । १६ ख यहि । १७ ख यहि, ग यहै । १८ ख देखो, ग दोखै । १९ ख. भईया, ग भेया । २० ख केहो, ग केहे । २१ ख छीटकाई । २२ ख. लोगाई । २३ ख ग करिवो ।

११९. २४ ख. समुद्र । २५ ख. नीकर्में । २६ ख वीसु, ग. विसु । २७ ख. लछी, ग लच्छि । २८ ख सहौदग । २९ ख. सवके, ग. तवको । ३० ख लहि । ३१ ख ग जान । ३२ ख साधन । ३३ ख. लछ । ३४ ख. जु अहि ।

विपयो जन को[1] विष[2]-वेल[3] यहै[4]
जु रहै लिखमी[5] मद माहि छके ।[6]
हरि हेत लगै तव जानियै[7] यो[8]
विष[9]-वेल लगे फल[10] अमृत[11] के[12] ॥ ११९ ॥

मुह[13] से न दीनदयाल[14] कदी[15] कह्यो[16]
दीन[17] भयो निस[18] दिवस सदीयैं[19] ।
देव नदी[20]-तट आखन[21] दीपत[22]
प्रेम-प्रवाह[23] लदी न कदीयैं[24] ।
इद्रिय[25] तोहि[26] न देखंन[27] देवत[28]
हैं सव[29] ही पर है न कदीयैं[30] ।
देवी[31] कदी[32] न कदी[33] नर[34] देह[35]
मु मैं न वदी जगदीग[36] वदीयैं[37] ॥ १२० ॥

---

१ ख ग कु । २ ख. वीष, ग. विसु । ३ ख वैल, ग. वेलि । ४ ख. अहै । ५ ख लछमी, ग. लीछमि । ६ ख. छकै, ग छके । ७ ख जानिय, ग. जानीय । ८ ख ग यौ । ९ ख. वीष, ग विसु । १० ख. फूल । ११ ख अमरत, ग. इमरत । १२ ख ग. को ।

१२०. १३ ख मूह, ग मुंहु । १४ ख. दिनदयाल, ग दीनदयालु । १५ ख. ग. कदि । १६ ख कहि, ग. कहो । १७ ख ग दिन । १८ ख नीस, ग निसु । १९ ख सदिये, ग. सदीयैं । २० ख ग नद । २१ ख आखनि, ग आंखनी । २२ ख दिपत, ग. देपंत । २३ ख पवाह, ग पुव्राह । २४ ख. कदीये, ग कदियैं । २५ ख अंद्री, ग इद्रीय । २६ ख तूही, ग तोही । २७ ख देखत, ग देखतु । २८ ख दैवत, ग दीपत । २९ ख सुव ग सवै । ३० ख कदिए, ग कदीये । ३१ ख देवो, ग देवि । ३२ ख कदि । ३३ ग कदू । ३४ ख ग नरु । ३५ ख देह, ग देहि । ३६ ख अगदीस । ३७ ख वदीये, ग वदियैं ।

सास[1] घटी[2] जो घटी[3] सो घटी
सुघटी[4] अब छोड[5] गई अबटीयें[6] ।
जोर जटी[7] न कटी भव-पास
थटी फकटी[8] उलटी[9] सुलटीयें[10] ।
मैं जु रटी[11] कुरटी सुनटी सब
भेद वटी[12] मति मूढ मटीयें[13] ।
देवी[14] लटी[15] न तृषा उलटी
गति कैसे[16] लटो जम हाथ लटीयें[17] ॥ १२१ ॥

जब जब गाढ परी दासन[18] कु देवीदास
तब तब ही सहाय[19] हरिजू[20] नैं[21] कीनो[22] है[23] ।
जैसै[24] कछु नरहरि[25] देव[26] जू निधान[27] अैसो[28]
कौन[29] अवतारु[30] अरु[31] दया[32] रस भीनो[33] है[34] ।

---

१२१ १ ख. सास । २ ख. घटि । ३ ख घटि । ४ ख प्रति में नहीं है ।
५ ग. छोडि । ६ ख. अवटि सवटियें । ७ ख जिटि । ८ ख फटकि ।
९ ख उलटि । १० ख सुलटिर्ये । ११ ख रटि । १२ ग. वटी ।
१३ ख. मटीर्अे । १४ ख. देवि । १५ ख. लटि । १६ ख. कैंसे ।
१७ ख. लटियें ।

१२२ १८ ख दासनि । १९ ख सहायें, ग. सहाई । २० ख हरि जुं, ग. हरि जू ।
२१ ख नें । २२ ख. किनो । २३ ख. हे । २४ ख. जेसे । २५ ग नरहरि ।
२६ ख. हेंव । २७ ख दयानीधांन, ग. दयानिधान । २८ ख. एछो ।
२९ ख कुंन, ग कौन । ३० ख एवितार । ३१ ख. ग. प्रति मे नहीं है ।
३२ ख दाया । ३३ ग. भीनो । ३४ ख. हें ।

मातानि[1] के पेट[2] तैं स्वरूप[3] धरे[4] और ठोर[5]
सो[6] तो हैं[7] उचित[8] ऐसो[9] और को प्रवीनो[10] है।
प्रहलाद हेतु जान[11] ताथर के बाधे आपु
पाथर कें पेट मैं तैं[12] अवतारु[13] लीनो[14] है ।। १२२ ।।

इति श्री कवि देवीदास कृत राजनीत रा कवित्त सपूर्ण ।। सवत १८३५ वर्षे शाके १७०० प्रवत्तमाने माशोत्तम कार्तिक कृष्ण २ द्वितियायां तिथो गुरु दिने। श्री अहिपुर नगरे ।। लिखितं ब्राह्मण गोड भीषनदास । पुस्तका भीषनदास री छै ।।

ख. इति श्री देविदास कीत राजनीती संपुरण ।। संवत १६०९ ना मागसिर सुदि ८ ने वार मगल ने दिवसे श्री सपुरण ।। श्री वड नगर अटकमरणी प्रसादात राजनिती लपीकृता । वैश्य सीवलाल मलुकचंद लिपीकर्त्ता श्री श्री अम्बीकाजी सत्य छै। श्री सारग छें।

ग. इति श्री देवीदास कृत राजनीत रा कवत्त संपूर्ण। संवत १८६० वर्ष चैत्र सुदि १४ भौमवारे । श्री रस्तु ।

---

१ ख. मातन । २ ख. पेठ । ३ ख. सरूप । ४ ग. घरे । ५ ग. ठौर । ६ ख. छु । ७ ख. हे । ८ ख. उचीत्र । ९ ख एसो । १० ख. प्रविनो । ११ ग. जानि । १२ ख. प्रति मे नहीं है । १३ ख. अवतार । १४ ख. तें लीनो, ग. लीनौं ।

परिशिष्ट

राजनीत विस्तार

जसुरांम कृत—

॥ अथ राजनीत लिक्षते ॥

अछर अगम अपार गति किन हुं न पारन पाय ।
सो मोही दीजै सकत जय जय जय जुग राय ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी ।
करनी करुना करन तरन सव तारन तरनी ।
सिर पर धरनी छत्र भरनि सुख सपति भरनी ।
क्षरनी अंमृत क्षरन हरन दुख दालिद्र हरनी ।
धरनी त्रीसु लख पर भरनि, भव भय हरनी सकल भय ।
जगदव आदि वरनी जसु जय जगधरनी मात जय ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

दीजै वूधि अपार, करि प्रनांम प्रारंभ करि ।
राजनीत विस्तार जसु वरनै वानी सुगम ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

जिन वखतन मे पातसाह राजत आलमगीर ।
तिनै वखत पैदा कियो गुन गनिजन गभीर ॥ ४ ॥
सोलकी जुगमाल सुत , उदयासींघ अनेक ।
गून दिनै तातै गुनी वाध्यो ग्रथ विसेष ॥ ५ ॥
समत नाम अठारसै वरस चउदन माहि ।
आसो सुदी नामी सुकर गुन वरन्यौ चित चाहि ॥ ६ ॥
राज जदुकुल जीत सुत नगर अमेपुर नाम ।
मही रेवाग जित मही वरन वरन विसराम ॥ ७ ॥

॥ मनोहर ॥

जाके जसु कचन की सिखर विराजमान
जाके भुज भारन को पार हु न लहीयें ।
जाके दांन गंग ते प्रवाह वहे आगें जांम
जाके नरदेव हु की सेव सव चहियें ।
जाके रूप अछर उदार पच रूप जेसे
राजगिरि राय देखी रीझ रीझ रहियें ।
राजनीत की मत नरेस हु को जसुरांम
कहिये तो मेर हु समान कर कहियें ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

दान जुक्त दोऊ जहां गुन है जहां गभीर ।
ऐसे राजत है अमुज दीपसिंह के वीर ॥ ९ ॥
जैसें वेद विरचि को अपरम दीयें उपाय ।
राजनीत राजान को ऐसें दिये वताय ॥ १० ॥

॥ छप्पय ॥

प्रथम अंग भूपाल राज रानी अग दूजो ।
तीजे राजकुमार मत्री चौथे गिन लीजें ।
पच मुसाहिव अग अग षट् रावत मानो ।
सातमो रयत अग कवि अठ अग वखानो ।
जुग जीत रीत जानो जुगति विविध विवेक विचार वह ।
जय करत सदा समरत्त जसु आठ अग वरने सुजह ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

जाको अछे उदाहरन प्रगट करत परमान ।
राजनीत गुन चातुरी सुन सुन लेहु सुजान ॥ १२ ॥

॥ अथ राज अंग वरनन ॥

॥ दोहा ॥

सब कों बखत वनायवो ज्यों सोहत जुग जीत ।
कबहूं बखतन चूकिये राजनीत की रीत ॥ १३ ॥

॥ मनहर ॥

वखत के लिये झाझ नूवत टकोरे वाजे
वखत के लिये वाजे घरी घरयाल की।
वखत के लिये देवं पूजन के वाजे घट
वखत के लिये सब रीत वरहाल की।
वखत के लिये रोज बैठवो इदालत को
वखत के लिये राग राग विरसाल की।
काम काज अरज अनेक नात जसुराम
वखत को वाधवो सो नीत छत्रपाल की ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ज्यौं वखतन को वाधवो ओर वडो इतमांम।
त्यो सदाई रहवो जसु सावधान सब काम ॥ १५ ॥

॥ मनहर ॥

रोज उठ नायवो फिरायवो तुरंगन को
पांन फूल चाहवो विवेक को वढाइये।
धारवो विचत्रन को मित्रन को धार धार
सत्रु को विसारवो न टारवो सराहिये।
साहन को मारवो न चोर कु उवारवो न
एक घरी हू को गुन उमर निवाइये।
राजनीत राज वंसी राजन को जसुरांम
एक एक दिन मै उपाय ऐते चाहिये ॥ १६ ॥

केतो देस केतो गांम लोक केतो वामे फेर
कितनोक दूर यामे कितनो हेजूर है।
कितो मेरे आमद खरच को प्रमांन कितो
कितनो विकार जामैं कितो साच कूर है।
केतो मेरे सैं नराज मेरे सुख चैन केतो
केतो मेरे दान पै खजाना कितो पूर है।
राजनीत राजवसी राजन कु जसुराम
रोज उठ इतनो विचारवो जरूर है ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

ऐ सब ही विन के जसु कर कर लैने कांम ।
तव ही कीजत रंग रस जब होय आई स्याम ॥ १८ ॥

॥ मनहर ॥

भूषन आभूषन सूं वसनन सों भांत भात
आसन वनायबो सदाहि इंतजाम को ।
बैठवो इदालत को मिसल मिटाये विन
जहा जैसी होय तैसी ताजिम तमाम को ।
जग की सलाम लेत सलामत सपाहन की
रग रोसनाई दोउ चाहत उदांम को ।
राजनीत राजवसी राजन कौं जसुराम
सबै एती वात कौं वनायनी मा स्याम को ॥ १६ ॥

दांन झूझ रींझ खींझ परछा अनेक हु की
कागद के देखे विन मोहर न कीजियै ।
काछ द्रढ़ धीरज धरम भौम वनै ठनै
घने-घने अन्न सो भडार भर लीजियै ।
पड हू को रछन के रछन प्रजांन हु को
धरनी को रछन सो फिरनन दीजियै ।
राजनीत राजवसी राजन को जसुराम
करबे के कहे एते एते सब कीजियै ॥ २० ॥

जहा जहां घने जनै बैठे पीत जोर जोर
उनको करोर भींत फोर फोर दीजिये ।
मूरख को देख के नजीक हु न आंन दीजे
दानान को देख के बुलाय आगे लीजियै ।
विन दिन खरे खरे उनको वढाय दीजै
वाढि वाढ गये वाको वाढ़न न दीजिये ।
राजनीत राजवसी राजन को जसुरांम
करबे के कहै एते एते सब कीजिये ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

फिर ऐ लछन चाहिये राजनीत को राय ।
ज्यौं मन रीझे तो जसु मो जन खाली जाय ॥ २२ ॥

॥ मनहर ॥

जो जो कलधारी आय मिले जाचवे को
मोहु एक गुनो दान पाय पथ गहे हैं ।
जो जो कवि वढी दरगाहन तें आए सोउ
पायदांन दोउ गनो राहु लख लहे हैं ।
जो जो कवि समृधि के पाये दान तीन गुनो
विद्यावान चार गुनो पाय चित चहे हैं ।
राजनीत राजवसी राजन को जसुराम
दान के प्रमन चार करवे के कहे हैं ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कीमत देखे काम ते कै पूछे ते पाय ।
नहिं देखे पूछं नहीं धिक धिक अैसे राय ॥ २४ ॥

॥ मनहर ॥

गुन हो गमीर सेरपना उर वागपना
सलेखाना वारुत न मेट कीजे कव हो ।
वडों से वकील चूर छोटों से लगे रहे
वोल सांच अदव अदा जे लख जव हों ।
हुकम वहाल पेंच मनसुवे छल वल
दलन को ऐक दिल होहि काज तव हो ।
राजनीत राजवसी राखन को जसुराम
जेति जेति कहि एति राखवे के सव हो ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

एक नेन अमृत झरे ऐक नैन में खींझ ।
एक नेन मे विष वसें एक नेन मे रींझ ॥ २६ ॥

॥ मनहर ॥

जो जो बोल बोलबे के धारे चित हु मैं लाज
उहि बोल बोलतं आगै ही विचारबो ।
कछु बोलयतो निबाहवा को लीजे कर
धरनी परायन हुँका चित धारवो ।
समो देख देख आप हिदं मे विचार देख
काम कला रग भोग सब हो समारवो ।
राजनीत राजवसी राजन को जसुराम
पडत को पूछ कै सदाई ऐसे पारवो ॥ २७ ॥

होय काज जिन हीं ते तिन हीं ते होय काज
और सान होय काज अैसे जिय जानिये ।
एक हो को देख एक देह में बराबरी
जाकी एक दोऊ वेर परछा प्रमानिये ।
परिछा मे सरस तो उनहीं ते लीजै कामे
नरस जो परेयाको कबहू न मानीये ।
जगत मैं राजनीत हु की रीत अैसी जसु
कांम के निकारि कै अकांम के न आनिये ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

चात्रक दाहुर मोर छति सवा निवाहत नेह ।
नृप ऐसे चाहिये जसु जैसे कहिये मेह ॥ २९ ॥

॥ मनहर ॥

रछन प्रजानहु के उमड घुमड रहै
काल को भरोर मारवे की गति गही है ।
सूके सर सलिता को भरे देत छिनही मे
भरे दधि जैसे कों सुकाय देत सही है ।
सुकवि अनेक जीव ज़तहू को मेटे प्यास
कुकवि पपैया हु की प्यास ऐक रही है ।
राजनीत हु की रीत देख देख जसुराम
मेह की महीपत की एक रीत कही है ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

ऐते सीखन के कहे राजनीत सब राज ।
वामे अब कहिये जसु केते कीजै ताज ॥ ३१ ॥

॥ मनहर ॥

निदन को जो जो सबे आलस सरीरउ को
पलहू वढायबो न छिन छिन पारवो ।
कान की कचाई उर हुकम परायन को
जोर हीन दातन को सबहु विडारवो ।
वोर चकी कान हु का मोर हु विलोचन को
मोम कु उखरवो समुर हु तै हारवो ।
राजनीत राजवसी राजन को जसुराम
धारवो तो नीत पें अनीत को न धारवो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

राजनीत सब हीं पढे सबको रखे सनेह ।
जो कीमत नांही जसु वडो कुलछन ऐह ॥ ३३ ॥

॥ मनहर ॥

जिनके दुवार हस जेसे तु धरेई रहे
बुगहु की बहुत वखानी वात गई है ।
जिनके दुवार को तू रगन से ठाडे रहै
वेसर सनाय के सवारी साधि लई है ।
जिनके दुवार फूल चपक से कुमलात
सीवल के फूल की वढाय सोह दई है ।
ऐसी ही अनीत वाकों कवहु न चलै जसु
मार घरी चांदनी अधारी रात भई है ॥ ३४ ॥

॥ छप्पय ॥

कहो अमृत कहा करे जहा विष पास विराजै ।
कहो मुकता- कहा करे जहां पथर से राजै ।
कहो नीर कहा करे जहां क्षरनक से क्षारा ।
कहो वेद कहा करे जहा मदिरा की धारा ।
गुन यह समुद्र मथयो गयो नहा जानी विध नीत की ।
मत कोउ करो जुग मैं जसु अैसी रीत अनीत की ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

राज अंग वरनन कियो पूरन प्रेम प्रसग ।
उन- पैं जानी रीत अब वरनो रानी अग ॥ ३६ ॥

॥ अथ रानी -अंग वरनन ॥

॥ दोहा ॥

राजनीत गुन वरनिये यह लछन जुग जीत ।
अबके से राजान की रानीहु की रीत ॥ १ ॥

॥ मनहर ॥

कीजे धाइ वुनीयादि पुत्र की सहाय कीजै
क्रोधहु न कीजै वैरि दाना राख लीजिये ।
कीजै धन सग्रैह, अवास की जुलस कीजे
दान पुन अदब मिराय के न वीजिये ।
तनक अहार, अहकार हु तनक कीजे
नीदहु तनक, पानी छांन-छान पीजिये ।
राजहु की रानी राजधानीहुं के जसुरांम
कीजिए तो राजनीत अैसी विध कीजियै ॥ २- ॥

जो जो वातन से चित कतहु को राजी रहे
सो सो वातन से कत राजी कर लीजिये ।
भार अधिकार उर चातुरी अनेक भाति
तीनो पख आपके वढाय सोह दीजिये ।
काम–काज राजनीत हुकम प्रमान कीजं
जोई भलो राह सोई मेटन न दीजिये ।
राजहु की रानी राजधानी ह्वै कै जसुराम
कीजिये तो रीत राजनीत ऐसी कीजियै ॥ ३ ॥

विविध रसोई कीजे दीजे खान-पान चित
गेरन को हल चलन देख-देख लीजिये ।
नाह को मुलाज कीजे आवरु वढाय दीजे
देखैं विन ओर की परछा कर लीजिये ।
सुच्छ ह्वै रहीजे प्रीत कुटब सो कीजं ग्रेह
काज चित दीजे विधि सवहों लहीजिये ।
राजहु की रानी राजधानी ह्वै कै जसुराम
कीजिए तो राजनीत ऐसी विध कीजिए ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

जो मति है तो मान है मतिहि विना नहीं मान ।
मायगवात ईलायदी जानै सकल जिहान ॥ ५ ॥

॥ मनहर ॥

एक ओर सोती जन चलन न देत आगै
एक ओर पीतम विराजे लोह–धार ज्यों ।
एक दुख भाग के पसारयो न गयो जाय
दूजो दुख करेजा कटाया रहै कारी ज्यों ।

दोहू को एक जोर कबहु न होन दीजै
याको ए उपाय काम नींब हे करारी ज्यौं ।
राजनीत पूरी राजधानी हु को जसुराम
छुरीहु के विच आय रहैवो सुपारी ज्यौं ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

मुग्धा मध्यापन रहै जो लो वेस विचार ।
तो लो ता जन कीजिये तिय सोलह सिंगार ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

आदि किये मजन सरीर चीर हार उर
नैनन को अजन तिलक भाल दीजिये ।
कटि मणी छद्रावली घटीका पें नुपूरन,
नाक को मोती खोर–चंदन लहीजिये ।
कानन को कुडल उरोज ही कु कचुकी ले
मुख को तवोल, केस पास भर लीजिये ।
दरपन सुवास उर चातुरी सों जसुराम
करवे के सोरह सिंगार ऐसे कीजिये ॥ ८ ॥

अमृत सी वानी सवै वात मै सयानी
लाजहु में लपटानी जाके प्रीतम सो प्रीत है ।
गुन में गहरानी मानहु मै लघु मानी
जाके अधर मुसकानी उनमानी अैसी रीत है ।
पतिव्रता जानी नह कपट कृपानी
लोक लछमी समानी सो कहानी जुग कीत है ।
सुखन की दानी प्रजा मात जो प्रमानी
जसुरांम राजधानी की वखानी राजनीत है ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

प्रीतम कहै सो कीजिये रहिये प्रीतम पास ।
जो नही कीजे तो जसु वहुरयौ होय विनास ॥ १० ॥

॥ छप्पय ॥

सीता जेसी सती राम जैसे पति राजे
फिरे कवहु न फाले सुन लो जो मै कयो।
सदा ऐसी विध साजे पर आग पग दियो
रामहु की हद मेटी तो रावन हरि गयो।
लाज काह गई लपेटी जुग नीत रीत ऐसी
जसु याही वात सबै तिया सुन लीजिये।
मन जान मन चाही कछू नाही करवो रु
पीया हद मेटी काम कोऊ नहीं कीजिये ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

राजनीत रानीन की जानी है जुग-जीत।
जैसे चद चकोर को ऐसी निवहत प्रीत ॥ १२ ॥

॥ कवित्त ॥

दीन को विजोग हुये विरह अगार जुगै
भूल जात पवन सुगध सीत मद कौ।
नैनन के देखने मे टगमगी लगी रहे
रैन फुं अपार ही वढावत आनद कौ।
ऐही विघ ऐसी प्रीत उमर निभाऐ जात
कवहु न अघात वे मिटात दुख दद कौ।
राजनीत हु की रीत राजन को जसुराम
चदमुखी चाहे ज्यों चकोर चाहे चद कौ ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

जो रानी राजान की सो विध कही वनाय।
लछन राजकुमार के सो कहीय उपजाय ॥ १४ ॥

॥ अथ राजकुवार अंग ॥

॥ दोहा ॥

राजकुमार परगट भये ज्यों-ज्यों वाढत वेरा ।
त्यों ए सबै वाढ़ीइये पडत कियें प्रवेस ॥ १ ॥
केते साधन के कहे केते राखन काज ।
सीखन के केते जसु राजनीत गुन राज ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

चार घरी रात रहे उठवो अटंक चाहे
चढवो अखारे आय सवे साथ जितनें ।
जोर खेंच जेहे भुजाडड को वनाय दै है
बाक पटे सबै घात-पेच होय तितने ।
रोज-रोज मल्लविद्या चढवो सिकार रोज
किसब कमायन के कहे जात कितने ।
राजनीत राज के कुमारन को जसुराम
एक वालपन हुं में साधवे के इतने ॥ ३ ॥

आपहु को अदव, अदव उस्ताद हु की
मात-पिता अदव जरूर कहे जितने ।
सोवत को मान रीझ आमदनी गाह मोज
खरच निगाह लौं परछा भेद कितने ।
चपलता सच गुरु गभीरता दांन-पुन्य
छांटि खावो भुवन सुवास वास तितने ।
राजनीत राज के कुमारन को जसुराम
एक वालपन हु मे सीखवे के इतने ॥ ४ ॥

गयद की सवारी अरु सवारी तुरगन की
राजनीत राग-माला कोक-भेद कितने ।
देस-देस हु की भाष वेठवो विलोकवोइ
वोलवो सलाम पेस पूगे गुन तितने ।

वाचवोइ लखवो हरेक भेद चातुरी के
जितने जो सीखैं याद रहै फिर तितने ।
राजनीत राज के कुमारन को जसुराम
एक वालपन हु मैं सीखवे के इतने ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पैहली विद्या चौंद पढ़ कीजै सवही कांम ।
राजन को उपचार है जिनको आठे जांम ॥ ६ ॥

॥ अथ चौंद विद्या कवित्त ॥

चाबक सू यारी जलतरन धनुरधारी
जोतक गिनानी ब्रह्मवेद कनी लही है ।
गीतन सगीत नट–विद्या वेद व्याकरन
अच्छर अमोल तय हुं को गती गही है ।
ऐती वात चातुरी सो सुरता सो कोऊ भांत
सीख–सीख लीजे सव सीखबे को सही है ।
राजनीत राज के कुमारन को जसुराम
करि कै चउद-विद्या ऐसी विध कही है ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जैसी सोवत जगत मे ऐसे होहि उपाय ।
सोवत गुन छूटे नहीं कोन रक कुन राय ॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

दधि—जल सोवत भली भई मुकतांन
राउ–रांनी माल हार हीये करि रहे हैं ।
वाही फिर सोवत जो मीनन को भई आय
कामदेव जेसे सोउ चपल गुन चहे हैं ।
वाही फिर सोवत तुरगन को भई आय
सुर जेसे चढि के फिराय गुन गहे हैं ।

राजनीत राज के कुमारन कुं जसुरांम
एही विध वीस वसे सोवत के कहे हैं ॥ ९ ॥

कागहू को सोवत जो कोकिला को भई आय
स्याम रग भयो सो सुपेत रग न धरें ।
अनील की सोवत भई जो पख अनील को
जमी जेसी छाड के फिरत रहे अधरें ।
भूत हू की सोवत भवसैन को भई आय
वसती कुं छाड के उजाड वास मे धरें ।
जो नही तो कोई वात विगरे अमेट जसु
सोवत कुसोवत मे सोवत न सुधरें ॥ १० ॥

देख लोक सोवत मे मुकता से लेत चुन
पाहने से दूर करवे के गुन गहे हैं ।
कीरत से अग रग उज्वल धरे है जांन
खीर अरु नीर दोउ जुदे कर चहे हैं ।
चाल ही ते माल वांधवे के गुन साधत है
चाल कुलहू की चालवे को मड रहे हैं ।
जसुरास सुरन मे हस के कुमार जेसे
कहे राजहस के कुमर अैसे कहे हैं ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

कवहूं कलह -न कीजियैं आपन के घर आय ।
तलियैं आप तुरग तो सत्रु को सताय ॥ १२ ॥

॥ छप्पय ॥

जो राजा धृतराष्ट्र कुवर दुरजोधन केसो ।
आप तुरंगी भयो उर माने नही ऐसो ।
जो सब हो कहे रहें तोई पडव सो कीनो ।
आप बीर सो कढ़े पंच पडव घर लीनो ।
जुग बीच परी होनी जसु कीनी रग कुरग की ।
राजेंद्रकुअर कोउ मत करो ऐसी आप तुरग की ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

कीने राजकुमार के गुन वरनन गभीर ।
जो राजे सो अब जसु वरनन करो वजीर ॥ १४ ॥

॥ अथ वजीर अंग वरनन ॥

॥ दोहा ॥

रयत सब राजी रहे मिटे न रावत मांन ।
आमद घटै न राउ की तो परधांन प्रमांन ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

उसर के विनां वात कबहुं न खरी करै
उसर तें आय के न भूले कोउ वार कें ।
कीयेंहु को आगै काज कहत न कोउ हू को
समैं सावधान गुन आगम विचार कें ।
राय के हजूर एक दोउ मत परे रहे
करे रहे मनसूबे हीये मे हयार कें ।
राजनीत राय के वजीरन को जसुराम
कहे ऐसे लच्छन सबेंई कार भार कें ॥ २ ॥

साल–साल कागद जु देई रहे हरसाल
चाकरी को दावा एक चितहु मे चह्यो है ।
जेसी होय आमद खरच ऐसो राख लेत
गैंरह कहू के राह किन सो न गह्यो है ।
नींद रीस अहकार आलस घटत कर
ऐसो जानकार भार किनको न रह्यो है ।
राजनीत हु की रीत देख–देख जसुरांम
कार भार हु की वार–वार ऐसे कह्यो है ॥ ३ ॥

ऐसे वोल वोलत है आपहु न वाघो जाय
वात हु को पाय के वनाय कहे जानिये ।

चचलता धीर गुन हिंमत हिसाव सुधं
लखन पढन चित्त चातुरी स जानिये ।
राउ–रक छोटे–वडे सवकी नीगाह रहे
श्रदल हो न्याव हक मेहनत मांनिये ।
जैसी रीत देख–देख जगत वखानै जसू
ऐसी नीत कार भार उनको वखानिये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

जेसे लछन जगत मे चातुर चित मे चाह ।
ऐसे लछन नीत के राजनीत गुन राय ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

पथर से वोल कवहूं न मूली मारिये
काहू पर मारिये लपेट कर मारिये ।
मुख तें विगारिये न चित से विसारिये न
माही रोस भयो तो पें मनहु मे मारिये ।
एक घावन सों कूप खोदेई न जात कहू
धीरे–धीरे लीजे काज सवहू समारिये ।
राजनीत राज के वजीरन कु जसुराम
गुड हू ते मरे वाकों विष से न मारिये ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

जेसो भायग भूप को सव जानत ससार ।
मत्री ऐसे मिल रहे श्रागं वुधि उदार ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

जाकों हे कचाई वाको देख–देख पीछे पारे
पाके रस भरे वाको श्रागेई वढाइये ।
काम हू ते विगरे, विगरी सो निकारि डारे
काम हू के भए वाकु सदा कर सराहिये ।

कीते राख राख लीजे कितनो विवेक कीजे
तौ लौं रग रहे जो लौं ऐसी ही निवाइये ।
राज के वजीरन को सबै लोग जसुराम
तबोली के से पानहू सभारबोई चाहिये ॥ ८ ॥

ग्यान जजमान हु को कितने बनाय दे दे
जो कछु आजान तो सुजान कर लहिये ।
विद्या-वल आपको दिखाये सब साचो कर
झूठ कारभार के नजीक हू न रहिये ।
आप लेत धन हू की उनहीं के पन होत
दोउ हू के होय काज ऐसे निरवहिये ।
राजनीत हू की रीत देख-देख जसुराम
विप्र की वजीरन की एक रीत कहिये ॥ ९ ॥

नैनन मे छात प्रीत कफ हू कौं जांनत है
एक नाड़ी देखत हजार वूझ लहि है ।
एक वात मारन मे कितनी मिलाई चीज
एक रस गारन मे केती वन रही है ।
जाको रोग जैसो वाकों व्हैसोई ईलाज देत
जाके चैन भयो वापे मागन की चाही है ।
राजनीत हु की रीत देख-देख जसुराम
वैद की वजीरन की एक रीत कही है ॥ १० ॥

तूही-तूही ऐसो ध्यान रहत है आठौं पौर
आप खुद ही सों प्रीत गाढे कर गही है ।
वाहिर तो जेसो जुग ऐसो ही हजूर होन
भीतर की वात तो अलायदी ही रही है ।
डूबने की तरने की आगई विचार देख
एक वदगी मे चूक कवहू न चही है ।
राजनीत हु की रीत देख-देख जसुराम ।
वैद की वजीरन की एक रीत कही है ।

॥ दोहा ॥

जाकी दोलत जीव को सुख पावं ससार
वाको कछू विगारतै क्यो राचै किरतार ॥ १२ ॥

॥ छप्पय ॥

भीष्मागद तप कियौ सिवहि अपनो करि थप्यो ।
जर–घर करे अगार सिव कगन कर अप्यो ।
तो गौरी कों देख सिवहि कै पीछै धायो ।
कीनी विघ किरतार आप उलटो दुख पायो ।
सव मतर हो साचै सदा कूरे रहो न काम ही ।
जुग वीच कोउ ऐसै जसू हारे विमुख हराम ही ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

पूरन गुन परधान के कहे वनाय–वनाय ।
रीत मुसायव राय की अवए कहिये उपाय ॥ १४ ॥

॥ अथ मुसाहब अंग वरनन ॥

॥ दोहा ॥

रींझत कीनी राय सों पहेली जेसी प्रीत
ऐसी उमर जों निभै ऐसी मुसाहव रीत ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

रोज–रोज काहू की न अरज अवाल करे
रीस लोभ लालच नजीक हु न रहवो ।
कर जजमानी अरु वाधरी न करे कव
गरव अमल हठ किनसों न गहवो ।
आपहू की जात को सुभाव सव छोड वैहे
साहेव की जात को सुभाव सब सहवो ।
राजनीत राज के मुसाहव को जसुराम
काम काज हु को केऊ समो देख कहवो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

रहत मुसाहव राय के धीर गहीरन धार
बोलत चालत हसत है समो विचार-विचार ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

एक नेन कटुक, फिरवे केउ वात पाई
पाऐ जात ऐसी रायन की रीत सौं ।
राखत विसेष मन, हद के प्रमान रहे
गुनन को गहे, चित रहे भयभीत सौं ।
हालन के मैंहरम चालन सो 'दूर रहे
जाहर धरम प्रीत ऐसे जुग जीत सौं ।
ध्यान-पुन दान-पुन लाज के जहाज जसु
राज के मुसाहेव रहत राजनीत सौं ॥ ४ ॥

साहव के खास वरदार सव राज रहै
साहव के सत्रु मित्र निगाह होय तितनें ।
साहव के होय मन दोष वहा जात नाही
साहव के मन भाये करे काज तितनें ।
साहव के आगें सदा अदव की रहे वात
साहव की वात के जनन कहा कितने ।
साहव सुजान हू की सेवा गुन साहव की
जसू है मुसाहव के लछन तो इतने ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

जामे सव लछन भरे सोही मुसाहव जान ।
कवहूँ चूकै तो जसू तन मन धन की हान ॥ ६ ॥

॥ कवित्त ॥

कोऊ वात भीतर की वाहर न जानै कवू
सोवत के लोक सव पछानै वात सान मे ।

सुपने हू साहव की बुरी वात कहै नाह
काहू' कही सुनै नाह अैसे गुरु ग्यान मैं ।
जा दिन कौं लगी प्रीत वा दिन पै याद करै
परछा अनेकहू की धरै कर प्रान मैं ।
कूरहू ते रहे दूर कवहू न होय कूर
जसू सोहू पूरे मुसाहिव जिहान मैं ॥ ७ ॥

राह दरगाहन के सवहि पिछांन लेत
जान लेत कार मार सुरत वढ़ाहवी ।
जुवाहू की सीरी, गुन राखत गहीरी अग
आलस तगीरी रुख साहब निवाहवी ।
ज्यू-ज्यू सुख लेत त्यू-त्यू दुख के सरीर कहु
जान कछु चूकन न देत चित चाहवी ।
कीनी हु की भली बुरी मुख तैं न कहै कछू
जसू अैसे जुग बीच कठिन मुसाहवी ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

रायन की सोवत रहत कठिन कहे सव कोय ।
वीसवीसै जामै वसै सोहू मुसाहव होय ॥ ९ ॥

॥ कवित्त ॥

जैसै कहे मतरत आय कैउ जोड लागी
लागी पसू पछी जीव जतु लोक जन सौं ।
रेसम के पट सूं दुसाल साल अट सू
तुलाई तेज घट सूं मिटै न रैन दिन सौं ।
जैसे जग आपहू की सोवत सू रहे जसू
अैसे राय सोवत मुसाहव के मन सौं ।
वहूत जोयं दूर तो पै मरत है ठड हू सै
वहुत नजीक तो पै जरत है तन सौं १० ॥

॥ दोहा ॥

दिन–दिन वाढत रग रस, दिन–दिन वाढत हेत ।
सोह मुसाहव जानियैं, फीकी परनन देत ॥ ११ ॥

॥ कवित्त ॥

चचल चपल गुन वाही की तो लेत सुध
पैठ जल भीतर हजूरन मैं सही है ।
रग छवि रूप को वनायकैं अनूप रहै
गाढी कर चाह दरगाहन की गही है ।
कवहू न मिटैं सक आपने विलास हू की
देख–देख जालहू की चूक चित रही है ।
राजनीत हू की रीत देख–देख जसूरांम
मीन की मुसाहिव की एक रीत कही है ॥ १२ ॥

रंग–रग लियैं अग सदा वने–ठने रहे
दोउ की वहार सव जगत मैं लहि है ।
नैंन सौं मिलाय नैंन सकूचै न चितहू मै
वोलत वुलायत विपिन वात रही है ।
एक–एक हू सै प्रीत कवहू न टूट जात
दूर तै नजीक तै निभाय लेत सही है ।
जसूराम सघन की साहव को ऐक रीत
मोर की मुसाहव की एक रीत कही है ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

साहव तेंज प्रताप तैं रहैं मुसाहव मान ।
कवहू गरव न धारवो जांनत सवै जिहांन ॥ १४ ॥

॥ छप्पय ॥

अर्जुन जैसे एक माह जग वीच मुसाहव
जिह सोवत वृजराज नद–नदन सै साहव ।

तिय रछन प्रभ धरयो सग साहव की छूटी
जहि भारत जुध कियो सोउ देखत तिय लूटी ।
गोपी सिंगार सवहूं गयो ऐक न भयो उभारवो
जग वीच मुसाहव कूं जसू ऐसो गर्भ न धारवो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

रीत मुसाहव की कही, नीकी सव जुग नीत ।
अव सव हूं उर धारियें रावत हू की रीत ॥ १६ ॥

॥ अथ रावत अंग ॥

॥ दोहा ॥

भूषन वसन सुवास अरु मिटै न कवहूं मांन ।
हिमत आयुध टेक हद रावत सोउ सुजान ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

समंध सौं नाकरी के रहत गरूर सदा
दूर दगा हू सौं कछू मागत न दीन व्है ।
सरन को आय वाकौ कवहू न सौंपत है
नमक को खाय वाको चाह तन हीन है ।
रायन के पास वैठ देत न इमांम आप
जगन के जोरावर मगन अधीन है ।
करत ना अरज मुख टरत ना पंच हू तैं
जसू ऐसे राय के पटायत पवीन है ॥ २ ॥

एक वेर दिनन मैं मुजरे को आवत है
रीझ को वढावत है ना कवु अनीत है ।
मिसल को चूक तन वैठे न पांव वाध
मूछ कू मरोर, तन सवै विध नीत है ।
हसत न हेरत न, वोलत न सर्म विन
वहुत डर राखत न, वहुत न प्रीत है ।

जगत में राजहू की रीत देख–देख जसू
राय के पटायत की सदा अेसी रीत है ।। ३ ।।

।। दोहा ।।

रायन के बैठे हुवै पीक न डारै पास ।
बैठत हलत न वावरो रहत न कबहु उदास ।। ४ ।।

।। कवित्त ।।

अदब सों रहै नीच किसब न गहै भूप
सेवन को लहे सोउ सेवन की सान है ।
जुद्ध–रीत लहै न्याव मुखहू ते कहे चोकी
चाकरी करे है सब विध मे सुजान है ।
आबरू को चाहै भार अधिकार सहै गुन
औगुन को गहै सूरवीर सावधान है ।
दलन को दहै खल वहरै न जग हू मैं ।
जसू अैसे राय के पटायत प्रमांन है ।। ५ ।।

किसब कूं मूल तन, फूल तन कहै कछू
आबरू के जात प्रान तजै वेर इतनी ।
निमखहलाली रन जग मै न पीछे फिरै
लालच सू कूर की न करै बात जितनी ।
गाम हू के तूटत आट काहु के छूटत
परतिया लूटत जियै न रेख तितनी ।
रायन को रछन करत रहै जसूराम
राय के पटायत की कहू बात कितनी ।। ६ ।।

।। दोहा ।।

जो लो राय खरे रहे तो लो वैठत नांह ।
जाही तै मन भग न्है वाही छांडे चाह ।। ७ ।।

॥ कवित्त ॥

लोक सिरकार हू के राजी सब रहै जाहु
चाकरी के किये विन लालच न चाहियै।
एक हू की भली बुरी कहियै न एक आगे
सटकारे लछन कछू न आप सहियै।
राय के वजीरन सों राख-राख लीजै रग
एक टेक हू की बात उमर निवाहिये।
रींझ-खींझ सिर कौ चढाय लेत जसूराम
राय के पटायत कौ ऐते गुन चाहियै ॥ ८ ॥

जग हू मे भली तरवार कहो कहा करै
चढवे का लायक तुषार है न जब हू।
चढवे कौ लायक तुरग कहौ कहा करै
सूरवीर पीठ को सुवार है न जब हू।
सूरवीर पीठ कौ सुवार कहो काहु करै
करै सिरदार जहा किम्मत न कव हू।
किम्मत कीयें तैं कहा होहि कहै जसूराम
रीज माज रखै सुन मान राय तव हू ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

विन वोलाय बोलत नहीं पूछै वोलत वोल।
आसन रायन बैठ ही सो रावत अनमोल ॥ १० ॥

॥ कवित्त ॥

ऐक वेर उतरे हू बहुर न चढै आप
बहुर कौं चढौ जाय पल मे पियानो ज्यौं।
लाखन के मोल सो विकाये पाय लखन सौं
सोउ विना पांनी मोल कोडी के कहानी ज्यौं।
जात कूं लजात हू के वडे दधिजात जैसे
भयो तो कहा भयो पत्थर प्रमानी ज्यौं।

जगत में पानी की पिछांनी वात जसूरांम
पानी है पटायत के मुगता के पांनी ज्यौं ॥ ११ ॥

काछत हैं लोह के सनाह वीर काछ जैसे
खुद हुक्म के हौदे माहवत ग्है हैं।
लाज हू के लगर विराजत है पायन में
जीत हु के डके घट ठनकार ठहैं हैं।
राजन दिन वाना हू की धजा फेहरात है
रायन के अकुस सदाई सिर सहै हैं।
जगरन ताते गहै राते मदमाते जसू
पटायर रूप से पटायत कु कहैं हैं ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

जसू करैं कीमत जहां रावत हू के राय।
तहा राव कु चाहियैं साची प्रीत सदाय ॥ १३ ॥

॥ कवित्त ॥

मांन-मांन चलै खुद पुगत मुराद वाकी
जाके नांव सुनैं वैरी टूट जात सही हैं।
जाकैं सिर सोभा हू के चढ़ै फूल रात-दिन
जीत डके वजे बोल -साच गति गही है।
जाके भीर एक लाख असि ही हजार हू की
जग तलवारन की मेदी वन रही हैं।
राजनीत हू की रीत देख-देख जसूराम
पीर की पटायत की ऐक रीत कही है ॥ १४ ॥

देख-देख सूरत कौं घूरत रहे हैं सदा
मूरत दिला के वीच रही वारौंमास की।
खूब महबूब हाथ वेचत विकाय जाय
प्रान कुर्वान सौं चलाय प्रीत दास की।
जाके पर लाखो धन वार-वार डारत हैं
मुरन गुजारत है नास ही उसास पी।

अैसी रीत राय सौं पटायत कौं जसूरांम
आसक को लगै जो मासुक पर-आस की ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

लोक लाज राखत रहै कवहू करै न ताज ।
देवो मरवो मारबौ लोक–लाज के काज ॥ १६ ॥

॥ छप्पय ॥

ज्यौ तारे नवलाख चदहू के मुंह आगै
गहै राह जव आय काम तव ऐक न लागै ।
लाज भग के रहत नंहि कोउ जांनत नीके
जवही देखत चद तवहि मुख लागत फीके ।
दिन कोउ मुख देखत नहीं दोस जगत सब दीजियै ।
जग–वीच पटायत ह्वै जसू अैसो कवू न कीजियै ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

राजनीत गुनराय के कहे पटायत जांन ।
अव आगै कहियै जसू रयीत रीत वखान ॥ १८ ॥

॥ रयत अंग वरननम् ॥

॥ दोहा ॥

चोरी चुगली परतिया केउ काम कुकाम ।
ऐती वात न जानही सोहू रयीत नाम ॥ १' ॥

॥ कवित्त ॥

वही वार जागना है घायै राख चचलता
दसम कौं पुन्य धनी नेक नाम धरवौ ।
किसव ते खोट पाय तोही पें न ताज करै
लिया सौं विगारै नाह अमाली सौं डरवौ ।
कुपारोस वसवो न, वैठवो न कुसोवत सौं
उधारे को करवो न, नयो कर भरवौ ।

राजनीत हू की रीत देख–देख जसुरांम
रयत हैं नाव वाकौ सवै अैतो करवौ ।। २ ।।

वनज वेपार केउ उदम असील (अरु)
धांन धन सग्रहै घरमा नी(य)म धरवौ ।
साहूकारी कार विवहार सो हीसाव साच
नीत–विवहार ही अन्याव नांहि लरवौ ।
खांन–पांन आभूपन भूपन सो नीत हु के
नीत हु को चालवौ अनीत हू तैं डरवौ ।
राजनीत हु की रीत देख–देख जसूरांम
रैयत है नाव वाको सदा अेतो करवौ ।। ३ ।।

धनहू कौं ढांप राख मुख तैं न कहै धन
अमाली के काम वीच देख–देख परवौ ।
करज कौं लेंन–देन करवो न अमाली तैं
करज मैं पाय सो तो हरे–हरे हरवौ ।
जो जो है दुवाली वद वाको दैन राखवो न
वखत के मिटे तैं अकेल हू न फिरवौ ।
राजनीत हू की रीत देख–देख जसूरांम
रयत है नाव वाकौं सवे ऐतौ करवौ ।। ४ ।।

।। दोहा ।।

घर ही कजियो चूक तैं नातन कौं न सुनाय ।
जो नातहि चूकै जसू तो दिवान जन जाय ।। ५ ।।

।। कवित्त ।।

जेतो रस पाय ऐतो पलही मैं वढ जाय
कोमल सुवास आसपास लोक लहि है ।
अधिक अघेरी हुवै रात हू कौं मुद जात
प्रात कौं हजार कली खिल–खिल रही है ।
भवर से अमल के आदमी के डसे डक
रायन के सूर कौं सुहाय देत सही है ।

राजनीत हू की रीत देख-देख जयुराम
मालिक की रय्यत की ऐक रीत कही है ॥ ६ ॥

ज्यों-ज्यों गुड़ खाते त्योंही मीठो लिगत सबै
कछु न खाए तब अलूनो मही है।
ज्यों ज्यों धन देत त्योंही देत जो लगी है प्रीत
गुलदार नार जैसा पुष्प, गही है।
नायक जो नाहक ही बन ही पै रहे दास
नट की समान पारि दूर जाय रहीये।
राजनीत हू की रीत देखि-देखि जयुराम
रो (रा) राजा रय्यत की एक रीत कही है ॥ ७ ॥

अमृत के बीज बोये होय जामें अमृत ही
विष हू के बीज बोये पावे विष सही है।
जैसो रस पाय ऐसो रस-बस दीयो जाय
भूप हर भूप होय तो भुगाय रही है।
फूलन है चंपक गुलाब जहाँ कीमत है
आक की धतूरे जहाँ कीमत न रही है।
राजनीत हू की रीत देख-देख जयुराम
प्रिथ्वी प्रजा हू की ऐक रीत कही है ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

रूप हाथी धन सूरमा इजत लाज मरजाद।
ऐते तो राजे जसू जो रइयत आबाद ॥ ९ ॥

॥ कवित्त ॥

याके बडभाग जाके रईयत सी कामधेन
जामें रस राजत है माया मन-मोहनी।
पोखत जो वच्छन प्रपच्छन को पोखत है
वृच्छ ज्यों कलप सदा रही ऐक रोहनी।

धीर धीरज राखो र उही देख-देख धीर
पीर हू न होहे पैं न होहो प्रीत-पोहनी ।
राजनीत मृनन कों महीपन कों जसूराम
दूध असे दूह्विो न फूट जाय दोहनी ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

कांह पारस का कीमिया कांह दछना उत संख ।
जहा रईयत छांही जसू रही हमाळ पख ॥ ११ ॥

॥ छप्पय ॥

रइयत राजा रांम जिनें अपनी कर जानी
राजा अैसे राम वार जहि जात बखानी ।
देख दुनीया-रीत दगा उनही सों कीनी
आछी जिमी उखार आघ कहि कछू न दीनीं ।
कित मत अजहु न मिटैं यो मत करो अकांम की ।
ज्यों अेक अंग कीनी जसू रईयत राजा राम की ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

सब लच्छन रयत कहे लोक सबै सुन लेत ।
अब लच्छन कवितान के जाहर कर-कर देत ॥ १३ ॥

॥ अथ कवि अंग वरणन ॥

॥ दोहा ॥

लोभ-हीन भ्रम-हीन है, सुच्छ है बसन सरीर ।
सो पूरे कविता जसू जो गावत रघुवीर ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

पैंहर रात पिछली कों उठ कें हरेक विद्या
षटोंभाका वानी रस वोलत निभाईयें ।
छिपे नां रहत राज-सभा में प्रवीन रहै
जैसो है उच्चार अैसों वोलवो सराहीयैं ।

किन सौं विवाद नांह कांम क्रोध मद नांहि
मेटत मृजाद नांहि सदा ऐती साहियै ।
राजनीत हू की रीत देख-देख जसूराम
चातुर है राय वाकों अैसे कवि चाहियै ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सुख मनाय न कहे बुरो विद्या पाठ रहाय ।
बोलत सभा सोहत जो सो पूरे कविराय ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

रंग हू न देखै उठ चलै इक सायत मै
जाय कै हजार कोस जातै दूर रहियै ।
प्रीन जो लगी तो कोउ समै फिर आय मिले
नहीं प्रीत लगी वाकी याद हू न रहियै ।
जो जो रिझवार वाकै संग रहै आठौं जाम
जो जो है गवार वापै चौंकी गत गहि है ।
केउ भाखा सुनत सुनावत है जसूरांम
पछी अरु पंडित की ऐक रीत कहि है ॥ ४ ॥

जहा कछू बोलवो न चालवो न ढंग ढाल
ताजीम तव लै नांहि वहा कहा कहियै ।
कोऊ कछू कहे नांह कहियै तो सुनै नाहि
सुनै अैसे कहे जैसै रूठ-रूठ रहियै ।
आप ही की खेंचे वात और वात कूट मारै
भले-बुरे जहा सबै टके-सेर लहियै ।
रांम राम कहि कै विदाह हूजे जसूराम
अैसी सभा बीच घरी ऐक हू न रहियै ॥ ५ ॥

राय है अनीत उर लाज विन राज-रानी
मूरख मुसाहव कों कैसे कर मांनियै ।
रावत गरीब हिय रैयत नुवाग रहै
कूर है वजीर जहां अैसी जिय जानियै ।

पडित लरायक से कुमार नीच सग रहैं
राजनीत हू की रीत अैती चित आनियै ।
वाह भले हू की वाट देखियै न जसूराम
पूतहू के लछन तो पारनै पिछानियै ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

जानै वाकौ वहुत है ऐती सीख असंख ।
जानै नह वाकौं जसू वहरा आगै संख ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

काच अैसौ राय राजनीत सीख लही विनां
अंधधंध नाहि कवु कारज सरतु है ।
वाकौं कवि कारिगर भीतर चढाय पुट
तव (तै) वहु सोभा वहै वाहर करतु है ।
देव-गुन दानव के मानव के गुन सो तो
जैसो काच होय अैसी जोनी कौं धरतु है ।
जगत मै उनही कै आगै आय जसुराम
जैसो जोई होय अैसो जाहर परतु है ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

पढवे तै मालुम परत आठौं नीत-अनीत ।
जसूराम चारन कही राजनीत की रीत ॥ ९ ॥
रींज मौज सव कहत है खीज मौज नह कोय ।
जो खीजत मागै जसू वुरे कहावत सोय ॥ १० ॥

॥ छप्पय ॥

सवा भार सोवरण करण दिन पै दत दीनौ ।
अजहू पैहर कहाय कोउन कै है दत दीनौ ।
देखूं उन पै आय दांत काढन कूं लागै ।
उनकी तुय रह गई सुनो मगन पत आगै ।
यौ कोउ वुरीन कीजियै ज्यू-त्यू हीं जस दीजियै ।
जुग वीच कोउ कविता जसू दाता अत न लीजियै ॥ ११ ।

॥ दोहा ॥

राजनीत की रीत जसू, प्रथम अग किये आठ ।
छप्पय दस छासट कवित, बने दोहरे साठ ॥ १२ ॥

इति श्री राजनीत-विस्तार यदुकुल सिंगार कवि अग
वरणन नाम अष्टम अग समाप्तम्

॥ दोहा ॥

दिग्गज दुज निध महि लखो, जेठ कृष्ण पख जांन ।
रामदवारे जोधपुर, विष्णुदास लिखतान ॥ १ ॥

●

राजनीति रा कवित्त

छन्दों का अकाराद्यनुक्रम

विषयानुसार कवित्त

(अकाराद्यनुक्रम)

(अकाराद्यनुक्रम)

●

मुहावरे

(अकारादि क्रम से]

शब्दार्थ

(अकारादि क्रम से)

अ

अकरावनी – डरावना

अरथ – धन

अजौ – अभी तक

अघाय – तृप्त होकर

अभिलाखै – देना

अलसी – आलसी

अलूफातै – उत्पाती

अप्रगल – अप्रगल्भ

अताही – अति

अजा – बकरी

अवास – आवास

अवदात – होना

अर्घत – तृप्त

अवगाहतु – दिखाई देना

अहार – आहार

अमनाव – श्रेष्ठ

अमरु – अमर

अजरु – अजर

अनीतै – अनीतियुक्त

अछघर – अक्षर

अलेप – निर्लिप्त

आ

आरसी – दर्पण

आसरो – आश्रय

आलो – आसू

आनचूर – आकर

आखर – अक्षर

आतुरी – उतावली

आरत – दीन

आघरे – अधा

ई

ईरखा – ईर्ष्या

उ

उजारे – उज्ज्वल

उफारे – उफन कर

उरग – थलचर

उसरत – अघाना

उक्कल – उज्जवल

उफरावैगो – सुजायेगा

उजग – उत्साह

उपाव – उत्पात

उपारवो – उपाटना

उनमान :– अनुमान

उपटाई – सुजाकर

ऊ

ऊजरो – उज्ज्वल
ऊदरा – चूहा
ऊघ – नींद
ऊसर – बंजर

ए

एलवाज – वातें
एच – कमी
एजु – यह

ऐ

ऐंच – खींच

ओ

ओर – दूसरा
ओगुन – अवगुण
ओजस – अपयश
ओडीयो – स्वीकार
ओडा-ओडी – आसपास
ओरस – कड़वा
ओसर – अवसर

औ

औंडे – गहरा

अं

अंव – आम
अंसुपात – अश्रुपात

क

कलेश – क्लेश
कचू – कुछ
करकसा – कर्कशा
कछुक – थोडी सी
कनूका – कण
कदाप – कदापि
कवन – कौन
कलई – झूठी चमक
कलपतरु – कल्पवृक्ष
कवूल – स्वीकार
कदी – कव
कन – किन
काछ्ही – कचछा
काठो – मजवूत
कारे – काले
कालो – पागल
काढ – निकाल
काहू – किसी
कापुरुप – कायर
काछ्वे – कश्यप, कछुआ
कालोई – कलक
काल – कलियुग
किनि – किसी ने
किलकिलावैं – हसना
कीर – पक्षी
कीरत – कीर्ति
कुपत – नाराज
कुंजर – हाथी
कुंभह – हृदयस्थल
कूहर – कोहरा

कूकर – कुत्ता
कूर – झूठ
केत – कितने
केल – खेलना
कैतो – यातो – कितना
कैकरे – केकडा
कोतल – घोडा
कोर – करोड
कोतह – व्यथित
क्रोरन – करोडो
कृतम – कृत्रिम

ख

खलक – विश्व
खवीस – राक्षस
खाडो – तलवार
खामी – कमी
खील – खेल
खोयो – गमाया

ग

गहिगेहने – मस्त
गरे – गले
गर – घर
गरत – कीचड
गरूर – घमड
गमेट – अपने
गरव – घमड
गहा – ग्रहण करना
गहै – लेना
गडीयै – गडा हुआ
गाड – घमड
गाजत – गर्जना
गाडे – गाडना, सुदृढ
गिलोल – एक प्रकार का अस्त्र
गुलन – पौवे
गुसाई – गोस्वामी
गैल – रास्ता
गोत – सबध
गोड – पैर

घ

घरी – घडी
घने – बहुत
घरनी – पत्नी
घरु – घर
घाटन – कमी
घूंमवो – घूमना
घोरा – घोडा

च

चतुरग – चार प्रकार की सेना
चवाई – निंदा
चलचले – चचल
चहा – इच्छा
चाम – चमडी
च्यार – चार
चिचात – चिल्लाना
चीरी – चादनी
चौकनो – वेशरम

चुमावें – स्नेह करना
चेरी – दासी
चेंचु – चोंच
चौंर – चवर
चोखे – सुन्दर

छ

छमुख – कार्तिकेय
छलछले – ओछा
छिमावत – क्षमावान
छित – कमी
छिनक – क्षण
छीर – क्षीर - दूध
छेरी – बकरी
छोटे – लघु
छोरु – लडका

ज

जरतु – जलना
जर – जड़
जसन – राग-रंग भरा उत्सव
जाचक – याचक
जात – जाति
जामे – जिसमें
जीभडा करै – बकवास करना
जुय – जो यह
जु – जो
जोर – ताकत
जोन – योनि
जोरावर – वीर
जोरत – जोडना
जोम – मूर्ख
जोट – झुण्ड
जोरमा – मजबूती

झ

झार – झाडी
झीखवे – कहना

ट

टरि – हटना
टालो – उपेक्षा
टालवो – हटाना

ठ

ठाढो – खडा रहना
ठाकुर – राजा
ठिलाई – छीलना
ठिकाने – स्थान
ठेसर – ठेस

ड

डराक – एकदम से
डरारे – डरावने
डहकै – विसुरना
डारवो – डालना
डील – शरीर

ढ

ढहै – गिरना
ढिग – नजदीक

ढुलाइवो – डुलाना
ढूक-ढाक – ठीक-ठाक
ढेर करचो – मार देना

त

तनक – थोडा सा
तताई – तेजी
तलाई – तालाव
तरफरात – तडफडाना
तरुजली – वृक्ष की छाह
तसालो – व्यवहार
तायर – स्तंभ
तातें – जिससे
ताते – गरम
तातकी – गुस्सा
तिनगो – तिनका
तिमरु – अंधेरा
तिमगल – मगरमच्छ
तीन ताप – दैविक, देहिक, भौतिक
तीखन – तीक्ष्ण
तुरग – घोडा
तुपक – तोप
तुक्का – तीर
तेग – तलवार
तोरो – तोड़ना
तोय – तुम्हें

थ

थन – स्तन
थाह – गहराई
थिर – स्थिर

द

दतव – देना
दहितें – दहनशील
दरेर – दरार
दारद – दरिद्रता
दाई – छिपाना
दावानल – जगल की आग
दापु – चिन्ता
दाव – मौका
दार – दाल
दीपत – प्रकाशित
दीठ – दृष्टि
दुरग – दुर्ग
दुद – दूध
दुरत – कपट
दुकाल – अकाल
दुराए – छिपाये
दुरत – कठिन
दूवरे – दुर्बल
द्वै – दो
दौ – आग

ध

धरुक – दहाड कर
धकाई – धकेल कर
धनप – धनुष
धारबौ – धारण करना

घोजियं – विश्वास करना

धीर – गभीर

धुनि – स्वर

धूरत – धूर्त

न

न्हाय – स्नान कर

नपुष – नपुषक

नरु – मनुष्य

नाहर – सिंह

नाज – अनाज

नारे – नाले

नार – नाडी

नातर – नहीं तो

निकारबो – निकालना

निवेरि – निर्णय

निहचै – निश्चय

निरधार – निर्धारित

निदुराइ – किंचित

निरासरे – निराश्रय

निघरे – घरहीन

निठौरे – स्थानहीन

निम्रावरे – विना आदर के

निकेत – ध्वजा

निधरक – निधडक

निमाति – झुकना

नीकी – भली

नीरचर – जलचर

नीठ - कठिनता से

नैंने – छोटे

नेक – थोड़ी सी

न्यौर – नेवला

प

परायन – लिप्त

पहारु – पहाड़

पलिग – फुनगी

परतापु – प्रताप

पटतरो – फर्क

पच कै – परिश्रम करके

परसै – स्पर्श

प्रत – प्रति

पातरे – पतले

पातिसाही – बादशाही

पारबो – पालन करना

पायन – पैर

पानप – पानीदार

पाट – पट

पारी – पालन

पालै – पालना

पाथर – पत्थर

पारी – बारी

पारजात – पारिजात

प्रारबध – प्रारब्ध

पितामह – ब्रह्मा

पियासे – प्यासा

पिसुनता – दुष्टता

पीरन – पीडा
पुराचीन – प्राचीन
पुहची – पहुँची
पुस – पुरुष
पुलिंग – फुनगी
पुरहूत – इन्द्र
पुहप – पुष्प
पूतन – पुत्र
पेल – पहिले
पंडक – पडुक
पोधा – पौधा
पोख कर – पिलाकर
पोंहच – पहुँच
पखेरु – पक्षी

फ

फिललात – बिलबिलाना

ब

बभूत – बडे भूत
बरै – जलना
बलाई – बलपूर्वक
बनूला – बवण्डर
बधि – बुद्धि
बहिरै – बहिरा
बारिन – जलाना
बाई – बेटी
बाग्नी – बाहिर
बामन – ब्राह्मण
बांद – बांधकर

बोरे – डाले
बोकल – बोझ सहित
बोरै – कष्ट

भ

भया – भाई
भरम – भ्रम
भगत-भावना – भक्तो मे श्रद्धा रखने वाला
भटभटात – मटमैला
भाग – भाग्य
भाजन – बर्तन
भारे – भारी
भादु – भाद्रपद
भाड – भाट
भीत – डर
भीनो – भीगा
भुज – भूज कर
भूषनो – आभूषण
भेक – वेश
भोरै – भोले
भोरन – प्रात.
भौन – भवन

म

महावडे – महान
मधुसूदन – श्रीकृष्ण
मरोर – मरोड
मया – दया
महाप – महीप

मरु – मरुस्थल

मरीचका – मरीचिका

महू – महुआ

मलिनी – बुरे विचार रखने वाला

महतारी – माता

मदरा – मदिरा

मढीयै – आश्रयस्थल

मछरी – मछली

मतो – विचार

मृजाद – मर्यादा

माते – मस्त

मानु – मानो

मात – मस्त

मारवार – मारवाड़

माक – मे

मानसर – मानसरोवर

माझ – मे

मिताई – मित्रता

मित – मित्र

मुड – समूह

मुखरदोष – वाचाल

मुकति – मुक्ति

मुरवे – मुड़ने

मुर्यै – लौटना

मुलमा – मुलम्मा

मूत – मूत्र

मूर – मूल

मेर – दया

मेद – मज्जा

मेख – भेड

मेदनी – पृथ्वी

मेह – वर्षा

मैमत – मस्त

मैडको – मेढ़क

मंगन – मागना

र

रज – सत्व

रत – लगा हुआ

रसालौ – समूह

राजै – शोभित

रावरी – आपकी

रायजादे – राजपुत्र

राइ – ठाकुर

राने – राजा

रिन – रण

रिझाय – रिझाकर

रीझे – प्रसन्न होना

रूसनो – अप्रसन्न होना

ल

लडायै – अधिक प्यार

लवार – मूर्ख

लखन – लक्षण

लछि – लक्ष्मी

लवा – एक पक्षी

लटी – मिटना

लछ – लक्ष्मी

लछ्छन – लक्षण
लाघव – सूक्ष्म
लाग्यो – लग गया
लीक – परम्परा
लुगाई – स्त्री
लोइनी – लोचनी
लोन – नमक
लोंपै – मिटाना
लगूर – बदर
लछि – लक्ष्मी

व

वकता – वक्ता
वडी – बडी
वनीयै – बनना
वयार – वायु
वरजी – आनाकानी, मना किया
वटाउन – बटोही, मेहमान
वमन – उल्टी
वहल – बैल
वदलिगो – बदल गया
वडो – बडा
वरेंडे – छत
वदिए – कहना
वसवास – विश्वास
वहसि – बहस
वटाई – बांटना
वरनं – वर्णन करना
वायस – कौआ
वाको – उसका
वाढे – बढना
वाम – स्त्री
वाट – प्रतीक्षा
वाडवाग – आग
वारे – वाले
वाघवर – शेर
वाइ – उच्छृखलता
वावरो – बावला
वादर – बदर
वार – बाड
वासों – उससे
वाउ – हवा
वाती – बत्ती
वारु – फिर
वाव – वायु
वासन – बर्तन
वार – समय
विचै – बीच मे
विललात – विलाप करना
विषई – विषय-वासना मे लिप्त
विनज – व्यापार
विरंच – ब्रह्मा
विजया – भाग
विगरयो – बिगडना
वीछि – बिच्छू
वीरन – विराने
वीसेक – बीस के लगभग

बेर – देरी
बेरु – बालुका
बेलन – बेलें
बेरी – शत्रु
बेन – वचन
बेसमार – अपार, अगणित
बेरुख – नाराजगी
बैद – वैद्य
बैसघर – सर्प
बैहल – बैल
बृछनि – वृक्ष

स

सनी – युक्त
सवाई – एक और चौथा हिस्सा
सगरे – सभी
सने – पगे
सवेत – सचेत
सभाव – स्वभाव
सपूर – सपूर्ण
सलितान – नदियां
सतकार – स्वागत
सम्व – शर्म
सरम – लज्जा
सला – पृथ्वी
सहया – सहन करने वाली
सहसांई – बादशाही
सवाए – बढे–चढे
सरै – बनना
समै – समय
सदीयै – हमेशा
साही – धनवान
सारदूल – शेर
सासन – शासन
सांग – बहुरूपिया
स्यार – सियार
सिंघ – शेर
सिंगार – श्रृंगार
सिणगार – श्रृंगार
सिराई – सडाकर
सिपा – कांस
सिलाई – शीलता
सिहराइ – शान्त
सील – शील
सुलटा – सीधा
सुरत – याद
सुचाल – अच्छे चालचलन वाला
सुथान – अच्छा स्थान
सुचि – पवित्रता
सुंदरी – सुन्दर
सुढ़ार – ठीक
सुवृत्त – सुडौल
सुसा – खरगोस
सुक – शुकदेव
सुआ – तोता
सूल – शूल
सूम – कंजूस
सूवत – सोहबत
सूरन – शूलों को

सूधी – सीधी
सूत कै – ठीक करके
सूके – सूखे
सेकल – वालुका
सेरूप – स्वरूप
सेनन – इशारा
सोध – खोज
सोंज – समूह
सच्यौ – सचय

ह

हथ्यार – हथियार
हलिवौ – चलना
हलकाई – आसानी
हने – हरण करना
हरभात – प्रत्येक प्रकार से
हलाइवौ – चलाना
हलेगी – साथ
ह्या – यहां
हाड – हड्डियाँ

त्र

त्रिपति – शिव
त्रिसा – तृषित, प्यासा

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

के

नवीनतम प्रकाशन (सन् १९६७-६८)

	नाम	सम्पादक	मूल्य
१	बालशिक्षा-व्याकरण	मुनि जिनविजय	७-७५
२	नृत्यरत्नकोश भाग २	श्री आर. सी. परीक	६-७५
३	चान्द्र-व्याकरण	पं० बेचरदास जे दोसी	७-००
४	गोरा-बादल-चरित्र	मुनि जिनविजय	४-००
५	हम्मीर-महाकाव्य	मुनि जिनविजय	१५-००
६	मुहता नैणसी री ख्यात भाग ४	श्री बदरीप्रसाद साकरिया	८-७५
७	मधुमालती सचित्र कथा	डॉ० फतहसिंह	१८-७५
८	आगमरहस्य पूर्वार्द्ध	श्री गगाधर द्विवेदी	१५-००
९	शकुनप्रदीप	डॉ० फतहसिंह	१-००
१०	पाख्यरत्नकोश	श्री गोपालनारायण बहुरा	३-७५
११	ए केटलॉग ऑफ सस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट III-B	मुनि जिनविजय	४८-७५
१२	नन्दोपाख्यान	डॉ० फतहसिंह	१-००
१३	राठौडा री वशावली एव राठौड वश री विगत	डॉ० फतहसिंह	२-१५
१४	चण्डीशतक टीकाद्वयसहित	श्री गोपालनारायण बहुरा	५-२५
१५	कविकौस्तुभ	डॉ० फतहसिंह	२-००
१६	मीरा वृहत्पदावली प्रथम भाग	पुरोहित हरिनारायण	७-५०
१७	स्थूलिभद्रकाकादि	डॉ० आत्माराम जाजोदिया	१-७५
१८	राजस्थानी वीरगीत-सग्रह प्रथम भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-५०
१९	गजगुणरूपकबन्ध	श्री सीताराम लालस	९-००
२०	वैताल-पचीसी	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३-५०
२१	मारवाड़ रा परगना री विगत, प्रथमभाग	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१५-५०
२२	राजस्थानी वीरगीत-सग्रह द्वितीय भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-२५
२३	देवीचरित प्रथम भाग	श्री हुक्मचन्द चतुर्वेदी	१३-२५
२४	राजनीति रा कवित्त	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	५-००

प्रतिष्ठान का त्रैमासिक मुखपत्र 'स्वाहा'

का प्रमुख आकर्षण

'सिंधुघाटी-लिपि मे ब्राह्मणो और उपनिषदो के प्रतीक"

(धारावाहिक)

प्राप्तिस्थान

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान)

मुद्रणान्तर्गत प्रेसों में ग्रन्थ

	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	सम्पादक
१,	आगमरहस्यम् (उत्तरार्द्ध)	पं०श्री सरयूप्रसाद द्विवेदी	श्री गगाधर (द्विवेदी)
२.	पथ्यास्वस्ति.	प० श्री मधुसूदन श्रोझा	श्री सुरजनदास स्वामी
३	सांख्यायनतन्त्रम्		श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी
४	सनत्कुमारचक्रिचरित-महाकाव्यम्	जिनपालोपाध्याय	श्री महोपाध्याय विनयसागर
५	खण्डप्रशस्ति' टीकाद्वयसहित	हनुमत् कवि, प० कीका एव श्री गुणविनय	डॉ० फतहसिंह एव श्री महो० विनयसागर
६	मारवाड रा परगना री विगत भाग २	मुहणोत नैणसी	डॉ० नारायणसिंह भाटी
७.	मीरा बृहत्पदावली भाग २	मीरा	श्री कल्याणसिंह शेखावत एम ए.
८	'स्वाहा.' त्रैमासिक पत्रिका		डॉ० फतहसिह.

मुद्रणाधीन-ग्रन्थ

१ कौषीतकि-ब्राह्मण-भाष्यम्
२ आश्वलायन एव शांखायन सहिता
३. सङ्गीतरघुनन्दन सटीकम्
४. सिंहसिद्धान्तसिन्धु
५ नन्दीसूत्र-प्रभाव्याख्या
६ जगन्नाथवल्लभनाटकम्
७ दानकेलिकौमुदी
८. प्रद्युम्नविजयनाटकम्
९, सान्द्रकुतूहलनाटकम्
१०, सङ्गीतदर्पण
११. गुणसग्रह वैद्यक
१२. बालतन्त्रम्
१३. प्रबोधचन्द्रिका
१४ नरसीजी रो माहेरो